फरीदाबाद

मजदूर समाचार

पुस्तिका तेरह

सितम्बर 2020

जनवरी 2009 से दिसम्बर 2009

सम्भव है
कुछ प्रस्थान बिन्दु मिलें।

सहयोग : पाँच–दस–बीस रुपये।

आप–हम क्या–क्या करते हैं... (15)

अपने स्वयं की चर्चायें कम की जाती हैं। खुद की जो बातें की जाती हैं वो भी अकसर हाँकने-फाँकने वाली होती हैं, स्वयं को इक्कीस और अपने जैसों को उन्नीस दिखाने वाली होती हैं। या फिर, अपने बारे में हम उन बातों को करते हैं जो हमें जीवन में घटनायें लगती हैं – जब-तब हुई अथवा होने वाली बातें। अपने खुद के सामान्य दैनिक जीवन की चर्चायें बहुत-ही कम की जाती हैं। ऐसा क्यों है ?

✶ सहज-सामान्य को ओझल करना और असामान्य को उभारना ऊँच-नीच वाली समाज व्यवस्थाओं के आधार-स्तम्भों में लगता है। घटनायें और घटनाओं की रचना सिर-माथों पर बैठों की जीवन क्रिया है। विगत में भाण्ड-भाट-चारण-कलाकार लोग प्रभुओं के माफिक रंग-रोगन से सामान्य को असामान्य प्रस्तुत करते थे। छुटपुट घटनाओं को महाघटनाओं में बदल कर अमर कृतियों के स्वप्न देखे जाते थे। आज घटना-उद्योग के इर्द-गिर्द विभिन्न कोटियों के विशेषज्ञों की कतारें लगी हैं। सिर-माथों वाले पिरामिडों के ताने-बाने का प्रभाव है और यह एक कारण है कि हम स्वयं के बारे में भी घटना-रूपी बातें करते हैं।

✶ बातों के सतही, छिछली होने का कारण ऊँच-नीच वाली समाज व्यवस्था में व्यक्ति की स्थिति गौण होना लगता है। वर्तमान समाज में व्यक्ति इस कदर गौण हो गई है कि व्यक्ति का होना अथवा नहीं होना बराबर जैसा लगने लगा है। खुद को तीसमारखाँ प्रस्तुत करने, दूसरे को उन्नीस दिखाने की महामारी का यह एक कारण लगता है।

✶ और, अपना सामान्य दैनिक जीवन हमें आमतौर पर इतना नीरस लगता है कि इसकी चर्चा स्वयं को ही अरुचिकर लगती है। सुनने वालों के लिये अकसर ''नया कुछ'' नहीं होता इन बातों में।

✶ हमें लगता है कि अपने-अपने सामान्य दैनिक जीवन को ''अनदेखा करने की आदत'' के पार जा कर हम देखना शुरू करेंगे तो बोझिल-उबाऊ-नीरस के दर्शन तो हमें होंगे ही, लेकिन यह ऊँच-नीच के स्तम्भों के रंग-रोगन को भी नोच देगा। तथा, अपने सामान्य दैनिक जीवन की चर्चा और अन्यों के सामान्य दैनिक जीवन की बातें सुनना सिर-माथों से बने स्तम्भों को डगमग कर देंगे।

✶ कपड़े बदलने के क्षणों में भी हमारे मन-मस्तिष्क में अकसर कितना-कुछ होता है ! लेकिन यहाँ हम बहुत-ही खुरदरे ढँग से आरम्भ कर पा रहे हैं। मित्रों के सामान्य दैनिक जीवन की झलक जारी है।

49 वर्षीय ड्राइवर : सुबह 5½ बजे उठता हूँ। नहा-धो लेता हूँ 6½ तक। बेटी 7 बजे पढाने जाती है। बेटा अहमदाबाद में पेशेवर पढाई कर रहा है। पत्नी से बातें करता हूँ और 4½ बजे से उठी वह सो जाती हैं तो कोई किताब पढता हूँ। भाई लोग दो अखबार मँगाते हैं पर मैं उन्हें उठा कर भी नहीं देखता। अखबार देखने को मन नहीं करता क्योंकि उनमें बहुत बुरी-बुरी बातें होती हैं।

8 बजे साहब की गाड़ी साफ करने जाता हूँ। लौट कर नाश्ता कर 9½ तक तैयार हो जाता हूँ और साहब के फोन का इन्तजार करता हूँ। 9½ के बाद इन्तजार वाला तनाव ही रहता है।

सप्ताह में 3 दिन साहब दिल्ली में कार्यालय में रहते हैं और 3 दिन बाहर दौरों पर। कार्यालय जाना होता है तब 10½ तक चल देते हैं। वहाँ ड्राइवरों वाले कमरे में बैठता हूँ.....

माता-पिता की सगाई बन्नो, फ्रन्टियर (पाकिस्तान) में हुई थी और विवाह यहाँ फरीदाबाद आ कर। पिताजी साझेदारी में आरा मशीन और वर्कशॉप चलाते थे – बहुत शराब पीते थे और माँ दुखी रहती थी। पर मुझे कोई कमी नहीं थी। घर में नीम व अमरूद के पेड़ और अँगूर की बेल थी। दादी बकरी और मुर्गियाँ पालती थी। खेलने के लिये जगह ही जगह थी...

1974 में पिताजी का काम-धन्धा ठप्प हो गया। भाईयों में मैं बड़ा था – 16½ वर्ष की आयु में मैं एक फैक्ट्री में लगा।

कार्यालय में रहते हैं तब साहब सामान्य तौर पर साँय 7 बजे फरीदाबाद लौट आते हैं। साहब वायुयान से दूर के दौरे पर जाते हैं तब सुबह 5-5½ बजे उन्हें हवाई अड्डे छोड़ने जाता हूँ और फिर उनके परिवार के पहले से तय कार्यक्रम निपटाता हूँ।

सड़क मार्ग से दौरे पर जाते हैं तब मुझे 12 घण्टे गाड़ी चलानी पड़ती है और उसी दिन लौटते हैं तब तो 15 घण्टे। गाड़ी चलाता हूँ तब दिमाग ड्राइविंग में होता है – सोचूँगा तो गड़बड़ हो जायेगी। दूसरों से बचने और बचाने में ही पूरा ध्यान रहता है। 2001 में फरीदाबाद से चण्डीगढ 4 घण्टे में पहुँच जाते थे। आज उससे अच्छी व बड़ी गाड़ी है, सड़कें चौड़ी व बढिया हैं, कई फ्लाई ओवर बन चुके हैं फिर भी 6 घण्टे लग जाते हैं क्योंकि यातायात बहुत ज्यादा हो गया है और बार-बार ब्रेक लगाने पड़ते हैं।

राजमार्गों पर 120-150 किलो मीटर प्रति घण्टा की गति से चलते हैं – इस रफ्तार से नहीं चलायेंगे तो पीछे वाले हॉर्न देने लगते हैं, साइड करो या तेज चलाओ। कई एक्सीडेन्ट देख चुका हूँ। एक बार झटका लगता है। फिर थोड़ी देर बाद वही रफ्तार। साहब को जल्दी रहती है – मीटिंग फिक्स होती है।

बाहर साहब पाँच सितारा होटल में ठहरते हैं। एक रात के लिये एक कमरा 8 से 11 हजार रुपये में और यह नहीं मिलता तो 14 हजार का भी लेते हैं। मैं 150-200 रुपये वाला कमरा ढूँढता हूँ। लेकिन बड़ी दिक्कत तो तब होती है जब साहब चर्चाओं में होते हैं और ड्राइवर बाहर गाड़ी में इन्तजार करते हैं। साहब लोग बड़े चालाक होते हैं – कह देते हैं कि कीमती चीजें रखी हैं ताकि ड्राइवर गाड़ी छोड़ कर न जायें। इन बातों पर ड्राइवर आपस में हँस लेते हैं पर नौकरी करने की मजबूरी है। चित्त भी साहब की और पट भी साहब की। कभी-कभी इन्तजार में तीन-चार घण्टे अकेले गाड़ी में बैठना पड़ता है तब मन-मस्तिष्क में कई बातें आती हैं.....

1977 में मैं गेडोर हैण्ड टूल्स में स्थाई मजदूर बना और एक धार्मिक संस्था से जुड़ा। ड्युटी के बाद साँय 5 बजे घर से साइकिल पर साथियों के साथ निकल जाता और रात 10-11 बजे लौटता। गुरु ग्रन्थ पढते-पढाते और धार्मिक चर्चायें करते। अमृतसर से रोपड़ हो कर लौट रहा था जब 1984 के सिख-विरोधी दँगे आरम्भ हुये। पीपली बस अड्डे से वापस रोपड़ लौट गया और 17 दिन वहीं रहा। नौकरी के लिये पटना जा रहे छोटे भाई पर ट्रेन में हमला हुआ – सत्तर टाँके आये। यहाँ फरीदाबाद में पिताजी के ढाबे को आग लगा दी गई। दिल्ली के शाहदरा में तीन खास दोस्त मार दिये गये। दिल्ली के ही झिलमिल क्षेत्र में एक रिश्तेदार को जिन्दा जला दिया गया। फरीदाबाद से दिल्ली जा रहे एक मित्र के पिता को तुगलकाबाद स्टेशन पर जिन्दा जला दिया। मुम्बई से आ रहे 10 मित्रों में से दो को मथुरा स्टेशन पर मार दिया गया। दिल्ली गये एक रिश्तेदार को पकड़ कर केश काट दिये। फैक्ट्री में कुछ लोग कहते कि इस काली पगड़ी वाले को भट्ठी में झौंक दो। कट्टरता पहले से थी, कत्लेआम ने सरकार और हिन्दुओं के खिलाफ नफरत बढाने का काम किया। मैं धार्मिक संस्था में और सक्रिय हो गया।

1987 में मेरा विवाह हुआ। पत्नी और फिर बच्चों को भी मैंने सक्रिय किया। लेकिन 10 वर्ष पहले परिवर्तन आने आरम्भ हुये. .... अब किसी से बदला लेने की बात मन में नहीं आती। किससे बदला लेंगे? बात पूरी व्यवस्था की है। भाँवें लाम्बे केश कर, भाँवें सिर मुँडाय – यह महत्वपूर्ण नहीं है।

जहाँ नौकरी करता था उस फैक्ट्री में बहुत-कुछ होता रहा पर मैं उस तरफ ज्यादा ध्यान नहीं देता था। कम्पनी ने 1996 में तनखा देनी बन्द कर दी तब मैंने फैक्ट्री जाना छोड़ दिया। दो पैसे के लिये पत्नी के सहयोग से मैंने कई काम-धन्धों को आजमाया। दो जगह फ्रूट चाट की दुकान लगाई। घर पर मट्ठियाँ बना कर चाय की दुकानों पर सप्लाई की। किराना की दुकान की । रिक्शा पर ले जा कर सैक्टरों में चावल बेचे। घर पर ड्रिल मशीन लगा कर जॉब वर्क किया – 40 रुपये का काम हो जाता तब पत्नी और मैं नाश्ता करते.... बच्चे छोटे थे और हम ऐसे में संस्था को समय नहीं दे पा रहे थे। मुझे 1999 में संस्था में काम करने को कहा गया – 1000 रुपये संस्था की तरफ से और 1000 रुपये एक पदाधिकारी की वर्कशॉप सम्भालने के लिये। वहीं ड्राइवरी सीख मैं संस्था के स्कूल की गाड़ी चलाने लगा। ड्राइवरी के संग-संग मैं संस्था के लिये सहायता राशि एकत्र करता। मैं सोचता था कि मैं सेवा भी करता हूँ पर हर कोई मुझे नौकर समझने लगा। सब काम मुझे देने लगे – 24 घण्टे की नौकरी। मैं अपने परिवार को भी समय नहीं दे पा रहा था। इसलिये 2001 में मैं एक कम्पनी के साहब का ड्राइवर लगा।

मैं मजदूर हूँ। यह बात समझ में आई। धार्मिक संस्था से दूरी बढने लगी। अब भी बार-बार बुलाते हैं पर मैं दूरी बनाये हूँ। अब पिंजरे में नहीं रहूँगा। अब मैंने आकाश देख लिया है ....

साहब दिल्ली में कार्यालय में होते हैं तो रात 7½ घर पहुँच जाता हूँ। बेटी के साथ, पत्नी के साथ बाजार जाता हूँ।

दौरे से लौटता हूँ तब थका होता हूँ। आराम करता हूँ। कहीं नहीं जाता। रिश्तेदारी में जाना पड़ता है। यारी-दोस्ती लम्बी-चौड़ी नहीं है पर दुख-सुख में जाना पड़ता है। सिर्फ पेशेवर रह जाना गलत है क्योंकि इससे आपस में प्यार, हँसी, मस्ती खत्म हो जाती हैं। जो पेशेवर हो गये वो वहीं हँसेंगे जहाँ पैसे मिलेंगे।

रात 9 बजे भोजन के बाद थोड़ी देर टी.वी. और फिर रात 11 बजे सोना। रविवार को अन्य दिनों से पहले उठ कर जल्दी तैयार हो जाता हूँ। नाश्ता स्वयं बनाता हूँ। भोजन के लिये सब्जी खुद बनाता हूँ। बनाना और खाना-खिलाना मुझे पसन्द है। (जारी) ■

दर्पण में चेहरा–दर–चेहरा

फरीदाबाद में :

केनमोर विकास श्रमिक : '' 20/4 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में 20 स्थाई मजदूर और ठेकेदारों के जरिये रखे 600 से अधिक वरकर थे। कोई न कोई लाँछन लगा कर अप्रैल 08 से निकालने

शुरू किये और अब दिसम्बर-अन्त में 135 मजदूर बचे हैं। चौबीस घण्टे चलने वाली फैक्ट्री में दिवाली से 8-8 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। छह मैनेजर, 10 इंजिनियर, 8 सुपरवाइजर-फोरमैन, 10 क्लर्क जबरन इस्तीफे के शिकार हुये। दो सुपरवाइजरों ने इस्तीफे से इनकार किया तो उनका गेट रोका। श्रम विभाग में शिकायत पर उन्हें वर्ष पर 32 दिन अनुसार हिसाब दिया। फैक्ट्री में कारों के एयर कन्डीशनरों और न्यू हौलैण्ड ट्रैक्टर के गियर बॉक्स का काम होता है। ***सेन्डेन विकास, प्रणव विकास, आर पी एस विकास, साटा विकास*** कम्पनी की परिजन हैं।''

शुभ इन्डस्ट्रीयल कम्पोनेन्ट्स मजदूर : ''30 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में सुबह 8 से रात 8½ की शिफ्ट है और लगातार 36 घण्टे भी रोकते हैं। पावर प्रेस 13 हैं और इनके नट-बोल्ट, चाबी, पायदान का स्प्रिंग टूटने पर ठीक नहीं करवाते। इसलिये उँगली बहुत कटती हैं। हाथ कटने पर गाली देते हैं और कहते हैं कि जानबूझ कर काटते हो। एक्सीडेन्ट रिपोर्ट नहीं भरते – प्रेस ऑपरेटरों में किसी की भी ई.एस.आई. नहीं। हाथ कटने पर एन एच 5 में डॉ. जैन क्लिनिक एण्ड नर्सिंग होम ले जाते हैं। कोई क्षतिपूर्ति नहीं। एक मजदूर के दोनों हाथ की तीन-तीन उँगली कटी तो ई.एस.आई. प्रावधानों के लिये उसे मुकदमा लड़ना पड़ा। फैक्ट्री में ***जे सी बी, मारुति सुजुकी*** आदि का काम होता है। हैल्परों की तनखा 2000-2200 और प्रेस ऑपरेटरों की 2800-3000 रुपये। महीने में 200-225 घण्टे ओवर टाइम, भुगतान सिंगल रेट से।''

जाह्नवी डाइंग कामगार : '' हेमला के पीछे स्थित फैक्ट्री में हम 150 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में काम करते हैं। हैल्परों को 12 घण्टे रोज पर 26 दिन के 3000 और ऑपरेटरों को 3600 रुपये। ई.एस.आई. व पी.एफ. 150 में 10 के भी नहीं हैं। अक्टूबर की तनखा 29 नवम्बर को दी थी और नवम्बर की आज 19 दिसम्बर तक नहीं दी है।''

गुड़गाँव में :

लोगवैल फोर्ज मजदूर : '' 116 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में 10-15 वर्ष से बारहों महीने 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट थी पर इधर 20 नवम्बर से दिन की शिफ्ट 8 घण्टे की और रात की 10 घण्टे की कर दी है। रात के 2 घण्टे ओवर टाइम को शनिवार को छुट्टी के बदले में काट लेते हैं। लेकिन 20 नवम्बर तक के 54 घण्टे ओवर टाइम के पैसे 12 दिसम्बर को, फिर 15 को, और फिर 22 को देंगे कह कर आज 23 दिसम्बर को मैनेजमेन्ट ने कहा है कि इन पैसों की आशा छोड़ दो। कम्पनी 25 दिसम्बर से 1 जनवरी तक फैक्ट्री बन्द कर रही है।''

अलंकार क्रियेशन कामगार : ''410 उद्योग विहार फेज-3 स्थित फैक्ट्री में 1000 मजदूरों को जबरन ओवर टाइम के लिये रोकते हैं। इधर सीजन में रात को फैक्ट्री के ताला लगा देते हैं और मजदूरों को बाहर नहीं निकलने देते। लगातार 36 घण्टे काम करवाते हैं। गाली देते हैं और ओवर टाइम में से 25-30 घण्टे हर महीने जबरन काट लेते हैं।''

मोडलामा वरकर : '' 105-106 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में 150 सिलाई कारीगर तनखा पर थे जिनमें से 100 को आज, 23 दिसम्बर को हिसाब दे रहे हैं। कम्पनी ने 3000 लोग भर्ती किये हैं – टेलर, प्रेसमैन, सब पीस रेट पर। शिफ्ट सुबह 9-9½ से रात 8½-10 बजे तक। एक ठेकेदार के जरिये 200 मजदूर रखे हैं जिनकी ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं और धागा काटती महिला मजदूरों की तनखा 2300-2400 रुपये। फैक्ट्री में ***गैप*** और ***ओल्ड नेवी*** का माल ज्यादा बनता है।

''मोडलामा की 200 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में 4 ठेकेदारों के जरिये रखे 400 मजदूरों में सिलाई कारीगर पीस रेट पर और धागा काटने वालों की तनखा 2200-2300 रुपये। महीने में 100 घण्टे ओवर टाइम के जिनमें से 40 घण्टे ठेकेदार खा जाते हैं। और, नवम्बर की तनखा आज 23 दिसम्बर तक नहीं दी है। फैक्ट्री में गैप का माल ज्यादा बनता है, होम फिनिशिंग, रनर आदि का भी काम होता है। कम्पनी ने स्वयं 100 मजदूर रखे हैं जिनमें हैल्परों को जनवरी 08 से देय डी.ए. के 76 रुपये अक्टूबर की तनखा में जा कर दिये हैं, एरियर नहीं दिया है। जुलाई 08 से देय डी.ए. के 79 रुपये दिये ही नहीं हैं। कम्पनी ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से देती है। महीने में 100 घण्टे के ओवर टाइम में से 20-25 घण्टे खा जाते हैं और बोलने पर गाली देते हैं। ....''

दिल्ली में :

भगवती कन्स्ट्रक्शन एण्ड इंजिनियर्स मजदूर : '' सी-18 ओखला फेज-1 स्थित फैक्ट्री से एक झटके में मजदूर निकालने के लिये कम्पनी हड़ताल करवाना चाहती थी पर हम मजदूरों ने हड़ताल होने नहीं दी। हम ने स्वयं को संगठित किया और किन्ही बिचौलियों की बजाय इस बात पर जोर दिया कि हम स्वयं बात करेंगे। फिर भी धीरे-धीरे कर मजदूर निकालने में कम्पनी सफल है – 150 के 60 कर दिये हैं। श्रम निरीक्षक आता है और पैसे ले कर चला जाता है। लोहे का काम है – फैक्ट्री में फायर बॉक्स बनते हैं। ***रेलवे*** और ***जय भारत मारुति*** का काम होता है। हैल्परों की तनखा 2200 रुपये और कारीगरों की 2700-4800 रुपये। ई.एस.आई. व पी.एफ. वाले अब 9 मजदूर ही बचे हैं – 50 वरकरों की ई.एस.आई नहीं, पी.एफ. नहीं। एक शिफ्ट है सुबह 9 से रात 9½ की

और अगले रोज सुबह 9 बजे तक रोक लेते हैं। महीने में 150 से 250 घण्टे ओवर टाइम के – भुगतान सिंगल रेट से। चाय-मट्ठी के लिये 4 रुपये देते हैं और रात 9½ बाद रोकते हैं तब 30 रुपये रोटी के लिये देते हैं।''

आर जी सी एक्सपोर्ट श्रमिक : ''सी-63/4 ओखला फेज-2 स्थित फैक्ट्री में काम करते 200 मजदूरों में से 45 की ही ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं। सिलाई कारीगर और प्रेसमैन पीस रेट पर हैं। कम्पनी द्वारा स्वयं भर्ती हैल्परों की तनखा 2800 रुपये थी, नवम्बर माह से 3000 की है। ठेकेदार के जरिये रखे हैल्परों को 8 घण्टे रोज पर 30 दिन के 2600 रुपये। कम्पनी ने 256 उद्योग विहार फेज-4, गुड़गाँव में आर जी सी इम्पैक्स नाम से नई फैक्ट्री शुरू कर दी है।''

विरोध के स्वर

बोनी पोलीमर्स मजदूर : ''प्लॉट 37 पी सैक्टर-6, फरीदाबाद स्थित फैक्ट्री में 365 में 360 दिन काम होता था। मुख्य विभाग, मोल्डिंग में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट और अन्य विभागों में 12 घण्टे की एक शिफ्ट जिसे खींच कर 36 घण्टे कर देते। महीने में 150-200 घण्टे ओवर टाइम सामान्य और इससे अधिक अजूबा नहीं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से भी कम, मात्र 12 रुपये 13 पैसे प्रति घण्टा। फैक्ट्री में ***हीरो होण्डा, यामाहा, मारुति सुजुकी, जे सी बी, टाटा मोटर, डेल्फी, स्वराज माजदा, मुंजाल शोवा*** तथा ***इटली*** निर्यात के लिये रबड़ के पुर्जे बनते हैं। फैक्ट्री में 4 स्थाई मजदूर, 100 कैजुअल वरकर, ठेकेदारों के जरिये रखे 400 मजदूर तथा 125 स्टाफ के लोग काम करते थे। उत्पादन के लिये बहुत ज्यादा दबाव – भोजन अवकाश अकसर देरी से। फैक्ट्री में जगह-जगह कैमरे। मोल्डिंग में 150-200 डिग्री सेन्टीग्रेड तापमान और चार मशीनों पर मात्र एक पँखा। पाँच सौ मजदूरों के लिये 5 लैट्रीन। पीने का पानी खारा। खाँसी सामान्य, फोस्फेटिंग-सैण्ड ब्लास्टिंग तो बीमारियों के घर। हाथ का जलना व कुचला जाना, उँगली कटना सामान्य और ऐसे में आम बात है मजदूर से माफीनामा लिखवाना। कागजों में फैक्ट्री दुर्घटना-मुक्त.... बिजली के पैनल में आग लगी तब मैनेजिंग डायरेक्टर राज भाटिया ने फैक्ट्री में हवन करवाया था। लगातार काम करते कैजुअल वरकरों का कागजों में ब्रेक दिखा कर हर 6 महीने पर फण्ड राशि निकालने का फार्म भरना। दो ठेकेदारों के जरिये रखे 50 मजदूरों की तनखा 2500-3000 रुपये, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। गालियाँ.....

'' ऐसी बोनी पोलीमर्स ने नवम्बर 08 के आरम्भ से मजदूर निकालने शुरू किये। रोज 2-3 को निकाला। फिर सप्ताह में दो दिन, सोम-मंगल को फैक्ट्री बन्द करने लगे। डेढ सौ से ज्यादा पुरुष मजदूरों को निकालने के बाद मैनेजमेन्ट ने महिला वरकरों पर हाथ डाला। दो को 17 दिसम्बर को निकाला और 4 को कहा कि रविवार तुम्हारी ड्युटी का अन्तिम दिन है। पर फिर भी सोम-मंगल की 'छुट्टी' के बाद बुधवार, 24 दिसम्बर को एक महिला मजदूर ड्युटी के लिये फैक्ट्री पहुँची। अन्दर नहीं जाने दिया। भाई पहुँचा तो एक मैनेजर बोला कि मन्दी है, काम नहीं है, नहीं रख सकते, काम आयेगा तो बुला लेंगे।' लिख कर दीजिये कि निकाल नहीं रहे, काम आने पर बुला लेंगे' की कहने पर लिख कर देने से इनकार। भाई बच्चों को ले आया और सब फैक्ट्री के मुख्य द्वार पर धरने पर बैठ गये। मैनेजमेन्ट बौखला गई। भाई को धक्के दे कर अलग कर दिया पर महिला मजदूर बच्चों समेत धरने पर बैठी रही। ***मैनेजर:*** 'तुम्हारे बाप की फैक्ट्री है जो जबरन काम करोगी!' ***महिला मजदूर:*** 'हाँ, मेरी फैक्ट्री है! हमारे खून-पसीने से फैक्ट्री बनी है!!' भाई फोटो लेने लगा तो मैनेजमेन्ट के लोग मारने दौड़े और कैमरा छीनने की कोशिश की। भोजन अवकाश में मजदूर बाहर निकले। नारे लगे। मजदूर एकत्र हो गये। मैनेजमेन्ट वापस फैक्ट्री में। कम्पनी ने पुलिस बुला ली। 'हमारे इलाके में हँगामा नहीं होने देंगे' कह कर पुलिसवाले महिला मजदूर और उनके भाई को बातचीत के लिये फैक्ट्री में ले गये। मैनेजमेन्ट तब गाड़ी में श्रम विभाग ले गई। उप श्रमायुक्त और मैनेजर की मित्रता से कम्पनी की बात नहीं बनी। वापस फैक्ट्री – श्रम अधिकारी फैक्ट्री पहुँचा और महिला मजदूर से एक महीने की अतिरिक्त तनखा ले कर मामला रफादफा करने को कहा। महिला मजदूर इनकार कर घर लौटी। अगले रोज, 25 दिसम्बर को महिला मजदूर ने अपनी बातें गत्ते पर लिखी और अपने बच्चों, महिला सहयोगी व पुरुष सहयोगियों के साथ बोनी पोलीमर्स के मुख्य द्वार पर जा कर धरने पर बैठ गई। खूब चमक-दमक वाली फैक्ट्री की मैनेजमेन्ट बहुत ज्यादा बौखला गई। पुरुष सहयोगियों को खदेड़ा, बच्चों को धकेला पर महिलायें डटी रही। गाड़ियाँ लगा कर उन्हें ढकने के प्रयास हुये। गालियाँ और जेल की धमकियाँ। कम्पनी की दाल नहीं गली तो फिर पुलिस बुला ली। फिर श्रम विभाग। 'कम्पनी की नहीं बल्कि ठेकेदार की मजदूर है' की बातें। अन्ततः कम्पनी द्वारा 11 हजार रुपये अतिरिक्त देने पर महिला मजदूर के सहयोगियों ने सहमति दे दी। कम्पनी ने 29 दिसम्बर को श्रम विभाग में महिला मजदूर को 6 हजार रुपये नकद और 5 हजार का चेक दिया। श्रम विभाग और कम्पनी ने कागजी खानापूर्ति के लिये एक बिचौलिया खड़ा किया।''■

आज उत्पादन का एक लेखा–जोखा

(इधर संकट-मन्दी की चर्चा ने कुछ प्रश्नों को फिर से उठाना आवश्यक बना दिया है। इस सन्दर्भ में हम अप्रैल 1998 के अंक से ''हकीकत का खाका'' फिर छाप रहे हैं। किन से बचना चाहिये और क्या-क्या कर सकते हैं पर विचार में सहायता के लिये यह सामग्री फिर से छापी जा रही है।)

फैक्ट्री किसकी ?

हर क्षेत्र में आज पैसों के जुगाड़ के लिये कर्ज की भूमिका बढ़ती जा रही है। कम्पनियों में लगे पैसों में तो 80 से 90 प्रतिशत तक पैसे कर्ज के होते हैं। जमीन, बिल्डिंग, मशीनरी, कच्चा व तैयार माल गिरवी रहते हैं। बैंक, बीमा, पेन्शन फन्ड, म्युचुअल फन्ड तथा अन्य वित्तीय संस्थायें कर्ज के मुख्य स्रोत हैं।

कम्पनी में लगे दस-बीस परसैन्ट पैसों का जुगाड़ शेयरों के जरिये होता है। शेयर होल्डरों में भी प्रमुख हैं बैंक, बीमा, म्युचुअल फन्ड जो कि पचास-साठ प्रतिशत तक के शेयरों पर काबिज होते हैं। बाकी के शेयर हजारों फुटकर शेयर होल्डरों के अलावा कुछ कम्पनियों के हाथों में होते हैं।

कम्पनी की मैनेजमेन्ट

कम्पनी के शीर्ष पर है बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स। इस टॉप मैनेजमेन्ट में दस-बीस डायरेक्टर होते हैं। कर्ज देने वाली संस्थाओं के नुमाइन्दे, शेयर होल्डर संस्थाओं के नुमाइन्दे, कम्पनियों के नुमाइन्दे, बड़े-बड़े रिटायर्ड सिविल-मिलिट्री-कम्पनी अधिकारी, नामी-गिरामी वकील तथा जानी-मानी हस्तियाँ बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स में होते हैं। मैनेजिंग डायरेक्टर धुरी होता-होती है बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स की। कम्पनी में मैनेजिंग डायरेक्टर के कुछ पैसे लगे भी होते हैं तो वह कुल पैसों के एक प्रतिशत से भी कम होते हैं।

बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स वाली टॉप मैनेजमेन्ट और जनरल मैनेजर वाली फैक्ट्री मैनेजमेन्ट के बीच की कड़ी है मैनेजिंग डायरेक्टर।

इस प्रकार बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स-मैनेजिंग डायरेक्टर-जनरल मैनेजर-मैनेजर-सुपरवाइजर कम्पनी की मैनेजमेन्ट का सीढीनुमा ढाँचा है।

उत्पादन में हिस्सा-पत्ती

2)21 एक नम्बर में

टैक्सों के रूप में सरकारें उत्पादन का आधे से ज्यादा हिस्सा ले लेती हैं। मुख्य टैक्स हैं : एक्साइज ड्युटी, कस्टम्स ड्युटी, सेल्स टैक्स, कारपोरेट टैक्स। और फिर, पानी पर टैक्स, बिजली पर टैक्स, टेलीफोन टैक्स, सम्पत्ति कर, चुँगी कर, रोड़ टैक्स आदि-आदि-आदि कदम-दर-कदम टैक्स ही टैक्स हैं।

कम्पनी द्वारा लिये कर्ज पर ब्याज के रूप में उत्पादन का दस-पन्द्रह प्रतिशत हिस्सा बैठता है।

उत्पादन का चार-पाँच परसैन्ट शेयर होल्डरों को डिविडेन्ड के रूप में जाता है।

उत्पादन का एक उल्लेखनीय हिस्सा (दस प्रतिशत के करीब) उत्पादन की बिक्री के लिये एडवर्टाइजमेन्ट, मार्केटिंग और ट्रेडर मार्जिन में खप जाता है।

मैनेजमेन्ट के ताम-झाम तथा मैनेजमेन्ट के लोगों के वेतन-भत्तों पर उत्पादन का दस परसैन्ट हिस्सा खर्च होता है।

कम्पनी को बढाने के लिये उत्पादन का दो-तीन प्रतिशत हिस्सा प्रयुक्त होता है।

2)21 दो नम्बर में

बड़े सौदों में मोटी कट-कमीशन बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स, खास करके मैनेजिंग डायरेक्टर, के खातों में जाती हैं।

जनरल मैनेजर के स्तर पर लाखों रुपयों के कट-कमीशन वाले सौदे होते हैं।

पर्चेज-मार्केटिंग-परसनल-इन्सपैक्शन आदि डिपार्टमेन्टों के अधिकारियों के कट-कमीशन हजारों रुपयों में होते हैं।

उत्पादन का एक हिस्सा नियम-कानूनों के जँजाल में से राह देने के लिये

– प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री, विभाग अनुसार मंत्री, विभाग व पद अनुसार बड़े सरकारी अफसरों को देना ;

– स्थानीय स्तर पर डी.सी., एस.पी., डी.एल.सी., एक्सीएन, क्षेत्रीय प्रोविडेन्ट फन्ड कमिश्नर, रीजनल ई.एस.आई. डायरेक्टर, लेबर इन्सपैक्टर, फैक्ट्री इन्सपैक्टर, थानेदार, बिजली बोर्ड जे ई, पी एफ इन्सपैक्टर, ई.एस.आई. इन्सपैक्टर को देना।.....

उत्पादन का पन्द्रह प्रतिशत हिस्सा दो नम्बर में जाता है, कट-कमीशन-रिश्वत में खपता है।

2)21 मजदूरों द्वारा किये जाते उत्पादन में से दो-तीन परसैन्ट ही मजदूरों के हाथ लगता है। और, उस पर भी यह-वह टैक्स की अनन्त छुरी चलती रहती है।

कम्पनियों की बैलेन्स शीटों पर गौर करने से उत्पादन की उपरोक्त हिस्सा-पत्ती नजर आती है। अलग-अलग कम्पनियों में मात्र उन्नीस-बीस वाला फर्क है।

उत्पादन में भूमिकायें

मैनेजमेन्ट का रोल

जहाँ तक हो सके, मैनेजमेन्ट की कोशिश होती है कि कम्पनी चले ताकि वेतन-भत्ते, ताम-झाम और कट-कमीशन का सिलसिला चलता रहे। इसके लिये आवश्यक है कि टैक्स, ब्याज और कट-कमीशन में उत्पादन के प्रमुख हिस्से की खपत के उपरान्त कम्पनी के बही-खाते मुनाफा दिखायें। यह कम से कम लागत पर अधिक से अधिक उत्पादन के चक्कर को अनिवार्य बना देता है। इसका मतलब है मजदूरों को कम से कम वेतन देना और उनसे अधिक से अधिक काम लेना मैनेजमेन्टों का कार्य है। .....

लीडरी की भूमिका

मजदूरों की सतत कोशिश होती है कि कम से कम बोझा ढोना पड़े और अधिक से अधिक वेतन व अन्य सुविधायें हों। यह हकीकत मजदूरों और मैनेजमेन्टों को शत्रुतापूर्ण खेमों में बाँटती है। मजदूरों और मैनेजमेन्टों के बीच लगातार टकराव होना स्वाभाविक व अनिवार्य है। अपने पक्ष को मजबूत करने के लिये मैनेजमेन्टें विभिषणों की जमात पालती हैं जिनका आधार-स्तम्भ है लीडरी। .....*(इधर इन दस वर्षों में फैक्ट्रियों में स्थाई मजदूरों की सँख्या सिकुड़ती आई है और अस्थाई व ठेकेदारों के जरिये रखे जाते मजदूरों की सँख्या बढती आई है। इससे फैक्ट्रियों के अन्दर लीडरी का महत्व घटता गया है। और, मजदूरों का बढता असन्तोष इस-उस फैक्ट्री की चारदीवारी से होते हुये समाज में व्यापक असन्तोष को बढा रहा है। फैक्ट्रियों के बाहर तीव्र होता व बढता-फैलता असन्तोष अनेक प्रकार की लीडरी को उभार रहा है। जब-तब कुछ प्रकार की लीडरी का दमन लीडरी की भूमिका को नहीं बदलता। लीडरी का काम ही है मजदूरों-मेहनतकशों की पहलों को रोकना-डुबोना।)*

सरकार का काम

उत्पादन का आधे से ज्यादा हिस्सा टैक्सों के रूप में सरकारें लेती हैं। इसलिये हर जगह की सरकारों का काम है उत्पादन को जारी रखने में आती रुकावटों को दूर करना। इसके लिये हर सरकार लाखों की फौज, गली-गली में थाने, चप्पे-चप्पे पर खुफिया एजेन्सियाँ, नुक्कड़-नुक्कड़ सरकारी अमला तैनात रखती है। मजदूरों का रोज का अनुभव है कि

– पुलिस एवं अन्य हथियारबन्द दस्ते मैनेजमेन्टों तथा लीडरों की सुरक्षा करते हैं। साथ ही साथ यह मजदूरों में डर व दहशत पैदा करते हैं।

– प्रशासन एवं न्यायपालिका मैनेजमेन्टों को सुविधायें तथा राहत प्रदान करते हैं। साथ ही साथ यह आश्वासनों एवं तारीखों में उलझा कर मजदूरों को भटकाने का काम करते हैं।

– सरकारी तन्त्र मैनेजमेन्टों द्वारा पाली जाती लीडरी को मजबूत करने के लिये इसके भाव बढाता है एवं इसे मंच प्रदान करता है।

गौर से हम देखें तो सरकारों के हर कार्य की जड़ में मिलेगी उनकी उत्पादन जारी रखवाने तथा कम से कम लागत पर उत्पादन बढवाने वाली भूमिका।

ऐसे में .....

मैनेजमेन्टों, लीडरी और सरकारों के हित एक हैं। यह त्रिमूर्ति मजदूरों के खिलाफ है। इसलिये इनमें से किसी पर भी आस लगाना, भरोसा करना नहीं बनता। तारीखों और आश्वासनों के चक्करों में पड़ कर भटकना नहीं बनता।

सरकारों के दमनतन्त्र तभी प्रभावी हो सकते हैं जब इन्हें टारगेट मिलें। *(आम तौर पर)* रेल व सड़क जाम, जलूस, पब्लिक मीटिंग तथा हिंसा के कार्य पुलिस, फौज व खुफिया तन्त्र को टारगेट प्रदान करते हैं। सरकारों के दमनतन्त्रों की विशालता व भयंकरता को देखते हुये टारगेट प्रदान करने वाले कदम उठाना नहीं बनता।

मैनेजमेन्ट, लीडरी, सरकार की विशाल व खुँखार त्रिमूर्ति के खिलाफ भड़क कर कोई कदम उठाना, बहादुरी दिखाना, आर-पार की लड़ाई वाली मोर्चेबन्दी करना नहीं बनता।

... तो, फिर

हकीकत से हम सब का वास्ता पड़ता है। इसलिये आईये देखें कि हम खुद कदम उठाते हैं तब क्या करते हैं।

हम सब के उठ-बैठ के अपने-अपने दायरे होते हैं जहाँ '' गैरबराबरी नहीं'' वाली बात होती है। किसी भी समस्या से जब हमारा वास्ता पड़ता है तब हम साथ उठ-बैठ करने वाले पाँच-सात लोग सोच-विचार व नाप-तोल कर कदम उठाते हैं। हमारे यह कदम आसान, कम खतरे, कम खर्चे और काफी असर वाले होते हैं। पाँच-पाँच, सात-सात की हमारी इन टोलियों का इतना भारी असर पड़ता है कि मैनेजमेन्टों तथा सरकारों को हमारी

टोलियों से निपटने के लिये लीडरी को पालना-पोसना पड़ता है।

हमारी दिक्कत यह है कि अपनी-अपनी टोलियों में ही हम अपनी बात कह पाते हैं, कदम तय कर पाते हैं तथा मिल कर कदम उठाते हैं। कोई मसला जो हमारी 50 या सौ की भी सँख्या को लपेटे होता है उसके बारे में हमें समझ में नहीं आता कि क्या करें। सँख्या हजार, लाख, करोड, के दायरों में होती है तो मामला हमें बिलकुल ही अपने काबू से बाहर लगता है। दरअसल, आवश्यकता मात्र इतनी है कि हम अपनी टोलियों के बीच तालमेल के तरीके ढूँढें व रचें।

सत्यम के लिये देखें एनरॉन के बहाने

कम्पनियाँ किसी की नहीं होती। कम्पनियों का कोई मालिक नहीं होता। ऐसे में कम्पनियों का सुचारू संचालन कैसे सुनिश्चित किया जाये ? विद्वानों ने नुस्खा दिया : चेयरमैन, मैनेजिंग डायरेक्टर , चीफ एग्जेक्युटिव अफसर आदि बड़े अधिकारियों को वेतन के एक हिस्से के रूप में कम्पनी के शेयर दिये जायें ताकि कम्पनी को मुनाफे में रखना और मुनाफे को बढाना साहबों के निजी स्वार्थ में हो। विश्व की बड़ी-बड़ी कम्पनियाँ विद्वानों के नुस्खे पर अमल कर रही हैं और इसका चलन छोटी कम्पनियों में भी तेजी से बढ रहा है।

स्वार्थ की कुँजी कमाल कर रही है। अधिकतर कम्पनियाँ अपने बही-खातों में हेरा-फेरी कर रही हैं। हिसाब-किताब में नटबाजी कर मनमाफिक मुनाफे दिखाये जाते हैं। और , महीने के लाखों लेते साहब लोग शेयरों की सट्टेबाजी में करोड़ों जेब में डालते हैं।

इधर बिजली क्षेत्र की विश्व की एक महारथी , एनरॉन कम्पनी द्वारा स्वयं को दिवालिया घोषित कर देने ने पर्दो की कुछ परतें उठाई हैं।

अमरीका के राष्ट्रपति , इंग्लैण्ड के युवराज को चन्दे देती एनरॉन कम्पनी द्वारा यहाँ नेताओं-अफसरों को पुचकार कर पर्यावरण का कबाड़ा करती डाभोल बिजली परियोजना और उसकी बिजली के ऊँचे रेट लेना अखबारों की खबरों में रहे हैं। एनरॉन के बही-खातों की जाँच की जिम्मेदार ऑडिट क्षेत्र की मशहूर एन्डरसन कम्पनी रही है। लगातार ऊँचे मुनाफे दिखाती एनरॉन के दिवालियेपन ने '' घोटाला'' के शोर-शराबे के बीच एनरॉन व एन्डरसन कम्पनियों की जाँच के लिये कई संसदीय समितियाँ बना दी गई हैं। और जिक्र कर दें , अमरीकी संसदों के 248 सदस्य जाँच समितियों में हैं — दूध का दूध और पानी का पानी करने वाले इन 248 संसद सदस्यों में से 212 ने तो एनरॉन अथवा एन्डरसन कम्पनी से चन्दे लिये हैं !

खैर। मण्डी का भँवर महारथियों को नहीं पहचानता और एनरॉन को घाटे पर घाटा होने लगा। मुर्गी ने अण्डे देना बन्द कर दिया तो साहब लोगों ने मुर्गी को काट खाने का निर्णय लिया। एनरॉन और एन्डरसन के अधिकारियों ने बही-खातों की खिचड़ी में भारी मुनाफे दिखा कर एनरॉन शेयरों के सट्टा बाजार में भाव प्रति शेयर 4 हजार रुपये तक पहुँचा दिये। एनरॉन के 29 बड़े साहबों ने अपने शेयर बेच कर तब 5500 करोड़ रुपये अपनी जेबों में डाले। एनरॉन की एक शाखा के अध्यक्ष ने 1750 करोड़ रुपये और एनरॉन के चीफ एग्जेक्युटिव अफसर ने 500 करोड़ रुपये इस प्रकार प्राप्त किये। बुलबुला फूटने पर एनरॉन के शेयरों का भाव 4 हजार रुपये प्रति शेयर से लुढक कर दस-बारह रुपये प्रति शेयर पर आ गया।

कम्पनी के दिवालिया होने में भी साहबों ने चाँदी कूटी पर एनरॉन के हजारों कर्मचारियों की पेन्शनें भी डूब गई , नौकरियाँ तो गई ही।

चन्द अन्य उदाहरण : कॉर्निंग कारपोरेशन के अध्यक्ष ने कम्पनी के अपने शेयर बेच कर 70 करोड़ रुपये जेब में डाले जिसके बाद शेयरों के भाव 85 प्रतिशत गिर गये ; जे डी एस यूनिफेज के सह-अध्यक्ष द्वारा शेयर बेच कर 115 करोड़ रुपये जेब में डालने के बाद कम्पनी के शेयरों के भाव 90 प्रतिशत गिर गये ; प्रोविडेन्शियल फाइनैन्स के उपाध्यक्ष ने अपने शेयर बेच कर 70 करोड़ रुपये जेब में डालने के बाद बताया कि बही-खाते ठीक से हिसाब नहीं दिखाते और इस पर 3 हजार रुपये प्रति शेयर का भाव गिर कर 200 रुपये प्रति शेयर हो गया ;....

और , फ्रान्स में तो कम्पनियों के चेयरमैनों , मैनेजिंग डायरेक्टरों की भयंकर वित्तीय अपराधों में गिरफ्तारियाँ लगभग रुटीन , सामान्य बात बन गई हैं।.....

यूनान में विप्लव

6 दिसम्बर को विद्यालय के एक छात्र की पुलिस की गोली से मृत्यु पर पूरे यूनान में दँगे भड़क उठे। दँगों ने बगावत का रूप ले लिया। विद्यालयों-विश्वविद्यालयों पर छात्रों ने कब्जे कर लिये। छात्रों-मजदूरों ने सरकारी इमारतों, रेडियो व टेलीविजन केन्द्रों, पार्टियों-यूनियनों के कार्यालयों पर कब्जे कर लिये। हजारों की सँख्या में लोग जगह-जगह पुलिस से भिड़े। क्रिसमस और नव वर्ष के लिये सजे व्यवसायिक केन्द्रों का हाल युद्ध में ध्वस्त क्षेत्रों जैसा हो गया। थानों को आग लगाई गई और सम्पन्नों से व्यापक स्तर

पर सामान छीने गये। जनतन्त्र में मजदूरों-मेहनतकशों के खिलाफ व्यापक हिंसा में सहभागी यूनियनों, राजनीतिक पार्टियों, पादरियों, पत्रकारों और व्यवसाइयों ने जनतन्त्र-कानून-व्यवस्था-शान्ति-अहिंसा की दुहाइयों के संग दमन का ताण्डव किया। कई सप्ताह चले इस विप्लव ने संकट-मन्दी के मजदूर-मेहनतकश पक्ष में समाधान की राह पर कदम बढाये। जानकारियाँ हम ने ''कम्युनिज्म'' के जनवरी 09 अंक से ली हैं। सम्पर्क के लिये – < http: gci-icg.org>

16 दिसम्बर 08 के ***''एथेन्स में मजदूरों का छात्रों को एक खुला खत''*** के यूनानी से अंग्रेजी अनुवाद का अनुवाद देखिये :

आयु के भेद और आम दुराव तुम से गलियों में चर्चायें करना हमारे लिये कठिन बना रहे हैं इसलिये हम यह पत्र जारी कर रहे हैं।

हम में से अधिकतर अभी गँजे अथवा पेटू नहीं हुये हैं। हम 1990-91 के आन्दोलन का अंश हैं। तुम लोगों ने उसके बारे में सुना होगा। तब हम ने अपने विद्यालयों पर 30-35 दिन कब्जा किया था। उस दौरान सरकार ने एक अध्यापक को मार डाला था क्योंकि अध्यापक ने हमारी चौकीदारी करने की सौंपी गई भूमिका त्याग दी थी और सीमा पार कर हमारे संघर्ष में आन मिला था। अध्यापक की मृत्यु पर हम में जो किसी से मतलब नहीं रखते वो भी सड़कों पर उतर आये थे और दँगा किया था। तब हालाँकि हम ने ''थानों को आग लगाओ...''गाया पर ऐसा करने का सोचा तक नहीं जबकि आज आप लोग इतनी सहजता से थानों को फूँक रहे हैं।

तो, आप हम से आगे चले गये हैं, जैसा कि इतिहास में सदा होता है। बेशक हालात में फर्क है। नब्बे के दशक के दौरान निजी सफलता की सम्भावना को परोसा गया और हम में से कुछ ने उसे निगल लिया। अब लोग इस परी कथा पर विश्वास नहीं कर सकते। तुम्हारे ज्येष्ठ बन्धुओं ने 2006-07 के छात्र आन्दोलन के दौरान हमें यह दिखाया और तुम तो सुनाने वालों के मुँह पर उनकी परी कथाओं को थूक रहे हो।

यहाँ तक बढिया है।

अब अच्छे और कठिन मामले आरम्भ होते हैं।

अपने संघर्षों और पराजयों से हम ने जो सीखा है वह तुम्हें बतायेंगे। पराजयों की बात इसलिये कि जब तक संसार हमारा नहीं होगा तब तक हम सदा पराजित ही होंगे। हम ने जो सीखा है उसे तुम जैसे चाहो प्रयोग कर सकते हो।

अकेले मत रहो। हमें बुलाओ, अधिक से अधिक लोगों को बुलाओ। हमें नहीं पता कि यह तुम कैसे कर सकते हो, तुम राह ढूँढ लोगे। तुम ने पहले ही अपने विद्यालयों पर कब्जे कर लिये हैं और तुम ने हमें बताया है कि इसका सबसे महत्वपूर्ण कारण यह है कि तुम्हें तुम्हारे स्कूल अच्छे नहीं लगते। बढिया है। चूँकि तुम ने उन पर कब्जे कर ही लिये हैं तो उनकी भूमिका बदलो। अपने कब्जों को अन्य लोगों के साथ साझा करो। अपने विद्यालयों को हमारे नये सम्बन्धों के निवास की पहली इमारतें बनने दो। उनका सबसे शक्तिशाली हथियार हमें बाँटना है। जैसे कि उनके थानों पर हमले करने से तुम नहीं डरते क्योंकि तुम एकजुट होते हो, वैसे ही हम सब के जीवन को मिल कर बदलने के लिये हमें बुलाने से भय मत खाओ।

किसी भी राजनीतिक संगठन की मत सुनो। जिसकी तुम्हें आवश्यकता है वह करो। लोगों पर भरोसा करो, अमूर्त-हवाई योजनाओं और विचारों पर विश्वास मत करो। लोगों के साथ सीधे सम्बन्धों पर भरोसा करो। अपने मित्रों पर विश्वास करो और अपने संघर्ष में शामिल अधिक से अधिक लोगों को अपने लोग बनाओ। उनकी मत सुनो जो कहते हैं कि तुम्हारे संघर्ष में राजनीतिक सामग्री-सार नहीं जिसे कि प्राप्त करना ही चाहिये। तुम्हारा संघर्ष ही सार है। तुम्हारे पास तुम्हारा संघर्ष ही है और इसे बढाना तुम्हारे हाथों में है। यह तुम्हारा संघर्ष ही है जो कि तुम्हारे जीवन को बदल सकता है, यानी तुम्हें और साथियों के साथ तुम्हारे वास्तविक रिश्तों को बदल सकता है।

जब नई बातों से वास्ता पड़े तब बढने से डरो मत। हम में से प्रत्येक के मस्तिष्क में चीजें डाली-छापी-बोई जाती हैं। आयु के साथ यह बढती जाती हैं पर हैं तुम में भी हालाँकि तुम युवा हो। इस तथ्य के महत्व को मत भूलो।

1991 में नये विश्व की महक से हमारा वास्ता पड़ा था और, हम पर विश्वास करो, वह सुगन्ध हमें कठिन लगी थी। हम ने सीख रखा था कि सीमायें सदा ही होनी चाहियें। माल के ध्वंस से भयभीत मत हो। लोगों द्वारा भण्डारों को लूटने से डरो मत। यह सब हम बनाते हैं, यह हमारे हैं। हमारी ही तरह तुम्हारा भी पालन रोज सुबह उठ कर चीजें बनाने के लिये किया जा रहा है, चीजें जो कि फिर तुम्हारी नहीं होंगी। आओ मिल कर हम उन चीजों को वापस लें और साझा करें। वैसे ही जैसे कि हम अपने मित्रों और अपने प्यार को आपस में साझा करते हैं।

इस पत्र को जल्दी में लिखने के लिये हम क्षमा चाहते हैं परन्तु हम काम के दौरान साहब से छिपा कर लिख रहे हैं। हम काम के बन्दी हैं जैसे कि तुम स्कूल में कैदी हो।

अब साहब से हम झूठ बोलेंगे और काम से छुट्टी करेंगे। अपने हाथों में पत्थर ले कर हम तुम से मिलने सिन्टग्मा चौक पहुँचेंगे।
– मजदूर

निकट भविष्य की कुछ आशंकायें और कुछ आशायें

विगत-वर्तमान-भविष्य के जोड़ महत्वपूर्ण हैं। जो बीत गया उसके अनुभवों व विचारों से हम वर्तमान को प्रभावित करने के प्रयास करते हैं। और, आज हम अपने आने वाले कल को बदलने की कोशिशें करते हैं। इस सन्दर्भ में यहाँ हम आने वाले पाँच-दस-पन्द्रह वर्ष को देखने का एक प्रयास कर रहे हैं। विभिन्न कोणों से-दृष्टियों से ऐसे प्रयास करना हमें आज क्या करें और क्या नहीं करें यह तय करने में सहायता करते हैं। लक्ष्य है आशंकाओं की सम्भावनाओं को घटाना। मकसद है आशाओं की सम्भावनाओं को बढाना।

आशंकायें

● टेढापन बढेगा। डर है कि चौतरफा बढती परेशानियाँ टेढापन बढायेंगी। बढती झूठ-फरेब, छल-कपट सहज सम्बन्धों को डुबो देंगी। आशंका है कि टेढापन तालमेलों पर घातक चोट मारेगा।

● कुण्ठा बढेगी। डर है कि स्वयं को दोष देने की प्रवृति बढेगी। आशंका है कि अपने आप को काटना बढेगा, स्वयं को पीड़ा पहुँचाना व्यापक बनेगा, आत्महत्यायें बढेंगी।

● घुटन बढेगी। डर है कि अपने जैसों को दोषी ठहराना बढेगा। आशंका है कि ''अन्य'' को, ''दूसरों'' को दोषी करार देने की प्रवृति महामारी बनेगी। भय है कि अपने जैसों के बीच, एक जैसों के बीच मार-काट बढेंगी।

● हिंसा, संगठित हिंसा बढेगी। डर है कि अत्याधिक हिंसा समस्याओं को ढँक देगी। आशंका है कि सुरक्षा की मृगमरीचिका हिंसा की दलदल को सर्वत्र फैला देगी। भय है कि भारत सरकार की सेनायें ''शान्ति-स्थापना'' के लिये पाकिस्तान-अफगानिस्तान-बांग्लादेश-ईरान में होंगी।

● एटम बमों से युद्ध। डर है कि सरकारों के बीच गिरोहबन्दियाँ बढेंगी। आशंका है कि सार्विक बनी हिंसा के उपचार के नाम पर एटम बमों से युद्ध होंगे। भय है कि अमरीका सरकार और भारत सरकार के बीच गिरोहबन्दी विनाश की राह पर रफ्तार बढायेगी।

● प्रदूषित पर्यावरण। डर है कि कोयले-तेल-रसायनों-संकेन्द्रित पदार्थों के प्रदूषण में परमाणु बिजलीघरों और एटम बमों के प्रदूषण का जोड़ पृथ्वी को जीवन के अयोग्य बना देगा। आशंका है कि मनुष्यों का ताण्डव अपने संग अन्य जीवों को भी पृथ्वी से मिटाने की सम्भावना को बढायेगा। भय है कि पर्यावरण की क्षतिपूर्ति की सीमायें पार हो जायेंगी।

आशायें

✶ सीधापन बढेगा। आशा है कि झूठ-फरेब-तिकड़मबाजी-कपट से लहुलुहान मन सहज सम्बन्धों के लिये अधिकाधिक तड़पेंगे। उम्मीद है कि यह तड़प सीधे-सच्चे रिश्तों को बढायेगी। आशा है कि भरोसे बढेंगे और अनेकानेक प्रकार के तालमेल बनेंगे।

✶ स्वयं के लिये आदर बढेगा। आशा है कि अपने व्यक्तित्व में एक नहीं बल्कि अनेक विभाजन के वास्तविक कारण : हर समय पड़ते चौतरफा दबावों की पहचान बढेगी। उम्मीद है कि स्वयं के लिये आदर अपने तन-मन पर अत्याचारों को समाप्त करने की राहों पर हमें बढायेगा।

✶ दूसरों के लिये आदर बढेगा। आशा है कि स्वयं के लिये आदर दूसरों के लिये आदर का आधार बनेगा। उम्मीद है कि हर समय प्रत्येक पर चौतरफा दबावों की पहचान बढेगी। आशा है कि अपने और दूसरों के लिये बढता आदर प्रेम में फलीभूत होगा।

✶ सहज आदान-प्रदान बढेंगे। आशा है कि बार-बार का विस्थापन, बढता विस्थापन विभिन्न प्रकार के पूर्वाग्रहों को दफन करेगा। उम्मीद है कि सहज आदान-प्रदान त्रासदी की जड़ों को उजागर करेंगे। आशा है कि इससे प्रत्येक के लिये सम्भव आसान गतिविधियों का महत्व स्थापित होगा।

✶ दिवालिये बढेंगे। आशा है बढती सँख्या में बैंकों का दिवाला निकलना जारी रहेगा। उम्मीद है कि फैक्ट्रियाँ बन्द होने की गति तीव्र होती जायेगी। आशा है कि सरकारों की डगमगाहट बढेगी और भरभरा कर सरकारों का गिरना सामान्य बनेगा। उम्मीद है कि रुपये-पैसे में राहत ढूँढना दम तोड़ेगा। आशा है सरकारों पर भरोसे समाप्त होंगे। उम्मीद है मजदूरी-प्रथा पर सवाल उठाना व्यापक बनेगा।

✶ सामाजिक प्रक्रिया पर ध्यान केन्द्रित होगा। आज 20-22 वर्ष की आयु वाले मजदूरों द्वारा 5-6 कार्यस्थलों का अनुभव प्राप्त करना सामान्य बनता जा रहा है। आशा है कि यह इस-उस व्यक्ति अथवा संस्थापन-विशेष तक सीमित रहने की प्रवृति

को तोड़ेगा। उम्मीद है कि यह सामाजिक प्रक्रिया को अखाड़े में खींच लेगा। आशा है कि समस्याओं का ताना-बाना उजागर होगा और उससे पार पाने के लिये जो आवश्यक हैं उन से परिचय बढेगा।

✶ आवागमन तालमेलों को जोड़ेगा। आशा है कि पृथ्वी पर एक से दूसरे स्थान पर बढता आवागमन स्थानीय तालमेलों को एक-दूसरे से जोड़ेगा। उम्मीद है कि तालमेलों के विश्व व्यापी ताने-बाने की रचना होगी। आशा है कि सम्पूर्ण पृथ्वी पर फैले और आपस में जुड़े सहज तालमेल नई समाज रचना के लिये संगठित प्रयासों के आधार बनेंगे।

आईये, ऊँच-नीच, मण्डी-मुद्रा, मजदूरी-प्रथा वाली वर्तमान समाज व्यवस्था के स्थान पर गैरबराबरी नहीं, उपहार, समुदाय-प्रथा वाली नई समाज रचना के लिये कर्म व वचन में आदान-प्रदान बढायें।■

दर्पण में चेहरा–दर–चेहरा

फरीदाबाद में :

ध्रुव ग्लोबल मजदूर : '' 14 मील पत्थर, मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में दस ठेकेदारों के जरिये रखे एक हजार मजदूरों की ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं और इन में हैल्परों की तनखा 1800-2200 रुपये तथा कारीगर पीस रेट पर। कम्पनी द्वारा स्वयं भर्ती 1000 मजदूरों में हैल्परों को 8 घण्टे की बजाय 10 घण्टे काम पर महीने के 3665 रुपये। दो शिफ्ट 12-12 घण्टे की, ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। मजदूरों ने सरकारी अधिकारियों को शिकायती पत्र लिखे। इस पर 14 नवम्बर 08 को छापा पड़ा पर मैनेजमेन्ट को दो दिन पहले ही सूचना मिल गई थी। इसलिये 14 नवम्बर को सुबह की शिफ्ट वाले मजदूरों की साँय 4 बजे छुट्टी कर दी गई तथा रात वालों की साँय 4 से ड्युटी आरम्भ की.....और उन्हें 16 घण्टे बाद छोड़ा। शिकायतें जारी रहने पर इधर 18 फरवरी को फिर छापा पड़ा और अधिकारी दौरा करके चले गये। परन्तु साँय 4 $^{1}/_{4}$ बजे साहब लोग फिर फैक्ट्री पहुँचे और मैनेजमेन्ट से कहा : तुम्हारी शिफ्ट नहीं बदली? मैनेजमेन्ट ने फोन कर-कर दूसरी शिफ्ट वालों को बुलाया..... सरकार का दूसरा छापा सम्पन्न हुआ। और, साँय 4½ बजे बुलाये रात की शिफ्ट वाले मजदूरों से 15½ घण्टे काम करवा कर 19 फरवरी को सुबह 8 बजे छोड़ा।''

सेन्चुरी एन एफ कास्टिंग श्रमिक : '' प्लॉट 1 सैक्टर-25 स्थित फैक्ट्री में जल जाना, हाथ-पैर कटना-टूटना सामान्य हैं। अल्युमिनियम ज्यादा कबाड़ रूप में आता है और इसमें बम-बारूद भी होते हैं। महीने-दो महीने में छोटे-मोटे धमाके होते रहते हैं। बन्द माल भट्ठी में चला गया तो फटेगा। भट्ठी वालों को 3 महीने में और बाकी को 6 महीने में जूते देते हैं। इधर 16 फरवरी को साँय 4 बजे साहबों का आदेश : जूते फैक्ट्री में छोड़ कर जाओगे। रात 11 बजे छूटने वालों को नँगे पैर जाना पड़ा। जिंक की सिल्ली उठाने के लिये दस्ताने पर पुराना दस्ताना चढा कर उठाते हैं अन्यथा हाथ जल जायें। अब साहबों ने नया नियम बनाया है : पुराने दस्ताने जमा करवाओ तब नये देंगे। माल से मैग्नेसियम उड़ाने के लिये एम जी आर रसायन के प्रयोग पर बहुत ज्यादा बदबू होती है पर इधर मैनेजमेन्ट ने भट्ठी वालों को मास्क देनी बन्द कर दी है। मन्दी से निपटने के लिये खर्च में कटौती वास्ते यह मैनेजमेन्ट की तकलीफदायक बेवकूफियाँ हैं।''

दिल्ली में :

यूनिस्टाइल मजदूर : ''बी-51 ओखला फेज-1 स्थित फैक्ट्री में सिलाई कारीगर महीने में दो-तीन बार पीस रेट पर खींचातान में काम बन्द करते हैं। रेट मजदूरों से पूछते हैं और हौजरी टॉप के लिये हम ने 25 रुपये प्रति पीस बताया तो कम्पनी ने 15 रुपये तय किया। इस पर सिलाई कारीगरों ने 30 जनवरी को काम बन्द कर दिया तो मैनेजर बोला कि काम करो, बात करता हूँ। दो घण्टे बाद पूछा तो बोले कि अभी तय नहीं हुआ है। इस पर फिर काम बन्द। हम ने 31 जनवरी को सुबह 4 घण्टे काम किया और चाहा रेट नहीं दिया तो फिर काम बन्द रखा। ऐसा ही 1 व 2 फरवरी को किया। और फिर 3 व 4 फरवरी को पूरे दिन मशीनें बन्द कर सिलाई कारीगर फैक्ट्री में बैठे। पाँच फरवरी को भी 12 बजे तक काम बन्द रहा तो कम्पनी ने रेट 20 रुपये किया और तब काम आरम्भ हुआ। बाद में दिये 19½ रुपये प्रति पीस ही..... जो रेट कम्पनी के कागजों में चढाते हैं उससे 2 रुपये कम रेट मजदूरों को बताया जाता है और उस पैसे को ठेकेदार तथा प्रोडक्शन मैनेजर खा जाते हैं। फैक्ट्री में काम करते 200 मजदूरों में से 10 ही कम्पनी ने स्वयं रखे हैं तथा इन्हें ही सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन दिया जाता है और इनकी ही ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं। धागे काटने वाली महिला मजदूरों को 8 घण्टे के 80 रुपये देते हैं। शिफ्ट सुबह 9 से रात 8 की है और रात 12 बजे तक रोकते हैं। यहाँ ***लुसिया, कॉलबेटा*** का तथा कम्पनी के अपने बिक्री केन्द्रों का माल बनता है।''

क्रेडी मजदूर : '' ई-49/7 ओखला फेज-2 स्थित फैक्ट्री में फैशन शो के परिधान बनते हैं, सैम्पल भी तैयार किये जाते हैं। सिर्फ फोटो दिखा कर भी कपड़ा पकड़ा देते हैं –अपने आप काटो और बनाओ। बहुत सिरदर्दी है और किसी-किसी पीस में पूरा सप्ताह

लग जाता है। मास्टर तू-तड़ाक करता है और सीनियर मास्टर के मुँह पर तो हर समय गालियाँ रहती हैं। उच्च कुशल सिलाई कारीगरों को 4 वर्ष से 8 घण्टे के 170 रुपये देते हैं, बढाते नहीं, महँगाई भत्ता भी नहीं देते। काम अनुसार टेलर 40 से 70 होते रहते हैं और ड्युटी सुबह 9 से रात 1 तक होती रहती है। ई.एस.आई. व पी.एफ. 10 के ही हैं। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। रात 1 बजे छूटते हैं तब गेट पास नहीं देते, कागज पर हाथ से लिख देते हैं, रास्ते में पुलिस परेशान करती है। कोई नामपट्ट नहीं है द्वार पर और कागजों में इसे प्रशिक्षण केन्द्र दिखाते हैं। पीने का पानी खराब है।''

गुड़गाँव में :

गुलाटी एक्सपोर्ट मजदूर : '' सरोल गाँव, सैक्टर-18 स्थित बड़ी फैक्ट्री में धागे काटने का काम करती 400 महिला मजदूरों की तनखा 2400 रुपये, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। और, नवम्बर, दिसम्बर तथा जनवरी की तनखायें आज 18 फरवरी तक नहीं दी हैं। कम्पनी ने कई ठेकेदारों के जरिये मजदूर रखे हैं, मुख्य ठेकेदार एक है। शिफ्ट सुबह 9½ से रात 9 की है और पुरुष मजदूरों को रात 1-2 बजे तक रोक लेते हैं। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। काम अधिक होता है तब सुबह 8 बजे बुला लेते हैं और महिला मजदूरों को भी रात 1 बजे तक रोकते हैं, गाड़ी से कमरों तक छोड़ते हैं। पुरुष हैल्परों की तनखा 2400-2800 रुपये।''

इनस्टाइल श्रमिक : '' 378 उद्योग विहार फेज-2 स्थित फैक्ट्री में सुबह 9 से रात $8^{3}/_{4}$ की शिफ्ट है और रोज रात 1 बजे तक रोकते हैं, रात पौने नो तो कभी-कभार छोड़ते हैं। महीने में 120-150 घण्टे ओवर टाइम, भुगतान सिंगल रेट से। फैक्ट्री के अन्दर चले गये तो जब तक छुट्टी नहीं करते तब तक निकलने नहीं देते – गेट पास नहीं देते। नये भर्ती का काम पसन्द नहीं आता तब भी रात पौने नो तक निकलने नहीं देते, जबरदस्ती काम करवाते हैं और उसके पैसे भी नहीं देते। बहुत गाली देते हैं। निर्धारित उत्पादन बहुत अधिक है। उन्हें सिर्फ काम से मतलब है, मजदूर की परेशानी से उनका कोई लेना-देना नहीं है। लैट्रीन बहुत-ही गन्दी रहती हैं और मजदूरों के पीछे इनचार्ज लोग गाली देते हुये लैट्रीनों के अन्दर घुस जाते हैं।''

ऋचा एण्ड कम्पनी कामगार : '' 193 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट और सुबह 9 से रात 11 की एक शिफ्ट है। रविवार को भी बुला लेते हैं। जबरन है, छुट्टी करने पर नौकरी से निकाल देते हैं। महीने में 150 घण्टे ओवर टाइम – 50 घण्टे का भुगतान दुगुनी दर से और 100 घण्टे का सिंगल रेट से। कम्पनी की प्लॉट 239 वाली फैक्ट्री में जीने से गिरने पर एक मजदूर की मृत्यु हो गई..... मैनेजमेन्ट ने हर कारीगर की तनखा से 10 रुपये काटे। मंगलवार के प्रसाद के लिये तनखा से हर महीने 10 रुपये काटते हैं।''

एस एण्ड आर वरकर : '' 298 उद्योग विहार फेज-2 स्थित फैक्ट्री में सुबह 9 से रात 8 की ड्युटी बताते हैं और मुख्य द्वार बन्द कर जबरन रात 10 बजे तक रोक लेते हैं। तबीयत खराब होने पर मजदूर को छुट्टी देने की बजाय जनरल मैनेजर सुपरवाइजर से कहता है कि बिजली की गति से काम करवाओ। कार्ड पंच करने की मशीन बन्द कर महीने में एक-दो दिन छुट्टी दिखा देते हैं। एक परसनल मैनेजर को यह अच्छा नहीं लगा तो उसे नौकरी से निकाल दिया। फैक्ट्री में लैट्रीन हैं पर वहाँ जाना नहीं है। टोटी हैं पर पीने का पानी नहीं है।''

कम्पारी एक्सपोर्ट मजदूर : '' 517 उद्योग विहार फेज-3 स्थित फैक्ट्री में सुबह 9 से रात 11 की शिफ्ट है और सुबह 4, 6 बजे तक रोक लेते हैं। महीने में 150-175 घण्टे ओवर टाइम, भुगतान सिंगल रेट से। अत्याधिक काम से बीमार पड़ जाते हैं और ड्युटी पर नहीं पहुँचते तो नौकरी से निकाल देते हैं। जनवरी की तनखा 13 फरवरी को दी पर निकाले हुये 8 मजदूरों को नहीं दी और ध मकाने के लिये पुलिस बुला ली। दिसम्बर व जनवरी के ओवर टाइम के पैसे आज 18 फरवरी तक नहीं दिये हैं। जनरल मैनेजर गाली देता है। हैल्परों को 8 घण्टे के 90 रुपये देते हैं। फैक्ट्री में काम करते 200 मजदूरों में 10 की ही ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं।''

मोडलामा श्रमिक : '' 105-106 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में प्रतिदिन सुबह 9½ से रात 2 बजे की शिफ्ट है। महीने में 250-300 घण्टे ओवर टाइम – 50 घण्टे का भुगतान दुगुनी दर से और बाकी का सिंगल रेट से। सुपरवाइजर द्वारा करवाये काम को इनचार्ज ने गलत करार दिया और ..... और इसके लिये 4 फरवरी को फिनिशिंग विभाग के 15 मजदूर नौकरी से निकाल दिये। फैक्ट्री में ***जेजिल, टॉलबॉस, आई एन सी, गैप, अल्फानी*** का माल बनता है। जनवरी की तनखा आज 18 फरवरी तक नहीं दी है। बड़ी फैक्ट्री है और अब सब मजदूर पीस रेट पर हैं। सैम्पलिंग विभाग में 300 स्थाई मजदूर थे पर अब 50 ही बचे हैं और उनके भी नये कार्ड बना दिये हैं। जिन्हें निकाला उन्हें तनखा के लिये दो महीने दौड़ाया – पैसे लेने अन्दर नहीं जाने देते और फोन करो तो कहते कम्प्युटर खराब है। और, ग्रेच्युटी अभी भी नहीं दी है – कहते हैं कि जीवन बीमा निगम में चली गई है, बाद में देंगे..... मोडलामा की 201 फेज-1 वाली फैक्ट्री में सुबह 9 से रात 2 बजे की ड्युटी है और 15 दिन में भी नौकरी से निकाल देते

हैं।''

जी ओ एम एक्सपोर्ट कामगार : ''356 उद्योग विहार फेज-2 स्थित फैक्ट्री में ठेकेदार के जरिये रखे हम 30 मजदूरों की तनखा 2800 रुपये, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। प्रतिदिन सुबह 9 से रात 8 की ड्युटी और महीने में 5-6 बार रात 1 बजे तक रोकते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। जनवरी की तनखा हमें आज 18 फरवरी तक नहीं दी है।''

प्रिमियम मोल्डिंग वरकर : '' 185 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में कोई छुट्टी नहीं, वर्ष में 364 दिन काम। रविवार के काम को कम्पनी ओवर टाइम नहीं मानती। प्रतिमाह जिन 20-25 घण्टों को ओवर टाइम मानते हैं उनका भुगतान मात्र 6 रुपये प्रति घण्टा।''

ईस्टर्न मेडिकिट मजदूर : '' 292 उद्योग विहार फेज-2 स्थित फैक्ट्री में 100 स्थाई मजदूरों की 8-8 घण्टे की तीन शिफ्ट हैं और 250 कैजुअल वरकरों की 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से भी कम, 12 रुपये प्रति घण्टा और दिसम्बर व जनवरी में किये ओवर टाइम के पैसे आज 18 फरवरी तक नहीं दिये हैं। हम कैजुअल वरकरों को जनवरी की तनखा भी आज 18 फरवरी तक नहीं दी है। उत्पादन का भारी दबाव रहता है। एस टी एल विभाग में 12 घण्टे में 20 हजार रक्त थैली बनाना निर्धारित है और जब तक यह बनती नहीं तब तक छुट्टी नहीं, 13-14-15 घण्टे तक काम करना पड़ जाता है।''

सरगम एक्सपोर्ट श्रमिक : '' 152 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन देते हैं। महीने में 70-75 घण्टे ओवर टाइम और उसका भुगतान भी दुगुनी दर से। लेकिन सुपरवाइजर और इनचार्ज बहुत गाली देते हैं।''

मास इन्टरप्राइज कामगार : '' 370 उद्योग विहार फेज-2 स्थित फैक्ट्री में 1000 मजदूर सुबह 9½ से रात 11, रात 2, सुबह 6 बजे तक काम करते हैं। साप्ताहिक छुट्टी भी नहीं। महीने में 200 घण्टे ओवर टाइम, भुगतान सिंगल रेट से। तीन ठेकेदारों के जरिये रखे 150 हैल्परों (60 महिला मजदूर धागे काटती हैं) की तनखा 2200 रुपये, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं और महीने में ओवर टाइम के 10-20 घण्टे खा भी जाते हैं। ठेकेदार के जरिये रखे सिलाई कारीगरों की तनखा 3800 रुपये। टेलरों की तनखा से 500 रुपये ई.एस.आई. व पी.एफ. के नाम से काटते हैं – 3 महीने में नौकरी से निकाल देते हैं, ई.एस.आई.कार्ड नहीं देते, फण्ड के पैसे नहीं मिलते। और, गड़बड़ी कर सिलाई कारीगरों की 2-3 दिहाड़ी महीने में खा जाते हैं।''

एक और विप्लव

बांग्लादेश में सिपाहियों की बगावत

दस्तकारी-किसानी-छोटी दुकानदारी की सामाजिक मौत-सामाजिक हत्या। मजदूरों का बढता शोषण-दमन-असुरक्षा। विकराल रूप धारण करती बेरोजगारी। चौतरफा असन्तोष वर्तमान समाज रचना के चरित्र में है।

तन-मन तान कर। हाथ जोड़ कर, याचक बन कर। रिश्वत दे कर। तीनों के सम्मिश्रण से नौकरी प्राप्त करने को तर जाना मानने की मान्यता अब भी व्यापक है।

जबकि, वास्तव में नौकरी में व्यक्ति निरन्तर अपमानित होती है। व्यक्ति सतत जलील होता है। हर समय धार पर, लगातार कटना नौकरी है।

तनाव, घुटन, कुण्ठा बढते रहते हैं। ऊँच-नीच वाली सीढी के निचले डँकों पर स्थितियाँ बरदाश्त से बहुत बाहर हो गई हैं। ऊपर के डँकों वाले मन-विवेक गिरवी रख कर चलती-फिरती लाशें बने हैं। हालात विस्फोटक, अधिकाधिक विस्फोटक।

ऐसे में विद्रोहों-बगावतों का एक अटूट सिलसिला है। भारत, बांग्लादेश जैसे क्षेत्रों में अस्सी प्रतिशत से अधिक लोग प्रतिव्यक्ति प्रतिदिन 20 रुपये से कम में गुजारा करते हैं। ऐसे क्षेत्रों में 50-100-150 रुपये प्रतिदिन प्रतिव्यक्ति की हैसियत वाले लोग अपने मन को अत्याधिक मारते हैं। पाँच-दस-पन्द्रह-बीस-पच्चीस हजार रुपये तनखा वाले यहाँ तन तानने और मन मारने में कोई कमी नहीं छोड़ते। परन्तु अपमान जनित क्रोध बढता रहता है। सेनाओं में भी सिपाही स्वयं बम-बारूद बने हैं।

बांग्लादेश में साठ हजार सिपाहियों की बगावत, मरने-मारने की मन : स्थिति स्वाभाविक है। ऐसे विद्रोह बढेंगे। मजदूरों-मेहनतकशों से तालमेल इन बगावतों को तेज धार देंगे और विप्लव को नई समाज रचना की राह पर बढायेंगे।

आज अन्तरिक्ष तक युद्ध-क्षेत्र और युद्ध के लिये क्षेत्र बन गया है। एटम बमों और प्रक्षेपास्त्रों के भण्डार तो हैं ही। ऐसे में हमारे लिये सर्वोपरि महत्व की बात तो यह है कि सरकारों के गिरोहों के बीच तीसरा* विश्व युद्ध *नहीं हो। इसके लिये जरूरी है कि मजदूरों-मेहनतकशों के असन्तोष, विरोध, विद्रोह हर जगह बढें।■

पहचान और पहचान की जटिलतायें

"मैं" का उदय – "मैं कौन हूँ ?" – एक "मैं" में कई "मैं"– और "मैं" के पार

★इकाई और समूह-समुदाय के बीच अनेक प्रकार के सम्बन्ध समस्त जीव योनियों में हैं। मानव योनि में भी दीर्घकाल तक ऐसा ही था। चन्द हजार वर्ष पूर्व ही पृथ्वी के छिटपुट क्षेत्रों में मानवों के बीच ''मैं'' का उदय हुआ। मनुष्यों के प्रयासों के बावजूद अन्य जीव योनियों के समूह-समुदाय में इकाई ने ''मैं'' के पथ पर प्रगति नहीं की है।

★एक जीव योनि के एक समूह-समुदाय की इकाईयों में तालमेल सामान्य हैं पर जब-तब खटपटें भी होती हैं। एक जीव योनि के एक समूह-समुदाय के उस योनि के अन्य समूह-समुदायों के संग आमतौर पर सम्बन्ध मेल-मिलाप के होते हैं पर जब-तब खटपटें भी होती हैं। आपस की खटपटें घातक नहीं हों यह किसी भी योनि के अस्तित्व के आधारों में है। इसलिये प्रत्येक जीव योनि में यह रचा-बसा है। एक जीव योनि के अन्दर की लड़ाई में किसी की मृत्यु अपवाद है। मानव योनि के अस्तित्व के 95 प्रतिशत काल में ऐसा ही रहा है। इधर मनुष्य द्वारा मनुष्य की हत्या, मनुष्यों द्वारा मनुष्यों की हत्यायें मानव योनि को समस्त जीव योनियों से अलग करती हैं।

★अपनी गतिविधियों के एक हिस्से को भौतिक, कौशल, ज्ञान रूपों में संचित करना जीव योनियों में सामान्य क्रियायें हैं। बने रहने, विस्तार, बेहतर जीवन के लिये ऐसे संचय जीवों में व्यापक स्तर पर दिखते हैं। प्रत्येक जीव योनि में पीढी में, पीढियों के बीच सम्बन्ध इन से सुगन्धित होते हैं। मानव योनि में भी चन्द हजार वर्ष पूर्व तक ऐसा ही था। इधर विनाश के लिये, कटुता के लिये, बदतर जीवन के लिये भौतिक, कौशल, ज्ञान रूपों में संचय के पहाड़ विकसित करती मानव योनि स्वयं को समस्त जीव योनियों से अलग करती है।

कीड़ा-पशु-जंगली-असभ्य बनाम सभ्य को नये सिरे से जाँचने की आवश्यकता है।

लगता है कि निकट भविष्य में पहचान की राजनीति का ताण्डव बहुत बढेगा। मानव एकता और बन्धुत्व की सद्इच्छायें विनाश लीला को रोकने में अक्षम तो रही ही हैं, अक्सर ये इस अथवा उस पहचान की राजनीति का औजार-हथियार बनी हैं। हम में से प्रत्येक में बहुत गहरे से हूक-सी उठती हैं जिनका दोहन-शोषण सिर-माथों पर बैठे अथवा बैठने को आतुर व्यक्ति-विशेष द्वारा किया जाना अब छोटी बात बन गया है। सामाजिक जीवन के अन्य क्षेत्रों की ही तरह पहचान की राजनीति में भी संस्थायें हावी हो गई हैं। संस्थाओं के साधनों और पेशेवर तरीकों से पार पाने के प्रयासों में एक योगदान के लिये हम यह चर्चा कर रहे हैं।

●***अंश द्वारा सम्पूर्ण पर आधिपत्य के प्रयास सभ्यता की जंजीरों का गठन करते हैं।*** पृथ्वी सौर मंडल का एक सामान्य ग्रह है और सूर्य ब्रह्मांड में एक आम तारा..... अपने अस्तित्व के 95 प्रतिशत दौर में मानव योनि का व्यवहार प्रकृति के एक अंश वाला रहा है। परन्तु इन पाँच-सात हजार वर्ष के दौरान स्वयं के प्रकृति का एक अंश होने की वास्तविकता को मानव योनि अधिकाधिक नकारती आई है। नियन्त्रण, नियन्त्रण-दर-नियन्त्रण हमारी हवस बनती गई है। अपनी इंद्रियों पर नियन्त्रण, अपने आप पर नियन्त्रण एक छोर बना है तो ''अन्य'' सबकुछ पर जकड़ दूसरा छोर।

– हालाँकि मानव योनि का नियन्त्रण आसमान पार कर रहा है, नाथना शब्द आज प्रचलन में नहीं है। नाथना मानी नियन्त्रण में करना.....

बैल की नाक छेद कर उसमें से रस्सी पार करने को भी नाथना कहते हैं। और, बैल के नाक की रस्सी को नाथ कहते हैं। कन्द-मूल बटोरने और शिकार की अवस्थाओं में हमारे पुरखों का व्यवहार मुख्यतः प्रकृति के एक अंश वाला था। पशुओं को नाथने ने बहुत कुछ बदलना आरम्भ किया।

बैल को नाथना। गाय का शोषण। यह पशुओं पर ही नहीं रुका। पशुओं के नाथ, दासों के स्वामी बने। और, पति के पर्याय हैं स्वामी तथा नाथ.....

– प्रकृति में एक स्त्री की यौन-सम्बन्धी क्षमता कई पुरुषों के बराबर है। एक पुरुष एक स्त्री की भी यौन सन्तुष्टि नहीं कर सकता.... इसलिये नाथना।

स्त्री और पुरुष के बीच सतत द्वन्द्व की स्थिति बनी। शक-शंका-क्रूरता की कोई सीमा नहीं रही। और तिरिया-चरित्तर के किस्से। आज पितृत्व निर्धारण के लिये डी एन ए परीक्षण.....

यह तो शस्त्र के साथ शास्त्र की जुगलबन्दी रही कि नाथ-नथनी-नथनिया स्त्री का आभूषण बनी। और यही बात टूम-जेवर-गहनों में कड़ी-गोड़हरा वाली बेड़ी की।

पुरुषों को दोष देना आसान है। परन्तु यह उस प्रक्रिया को छिपा देना है जिसने अकस्मात् प्रारम्भ में पुरुष को ''मैं'' का वाहक

वाहन बना दिया था। और, यह ''मैं'' की पीड़ा का ही कमाल रहा है कि एक पुरुष ने कई स्त्रियाँ-पत्नियाँ रखी।

●समुदायों की टूटन ने तत्काल समुदायहीनता को जन्म नहीं दिया। समुदायों की टूटन अनेक प्रकार के विकृत समुदायों का सिलसिला लिये रही है। ऐसे में ''मैं'' के वाहक पुरुष की पीड़ा को कुछ हद तक विकृत समुदाय कम करते रहे हैं। परन्तु मण्डी-मुद्रा और मजदूरी-प्रथा के संग समुदायहीनता, अकेलापन छलाँगें लगाते आते हैं.....

– विकृत से विकृत समुदाय भी व्यक्ति को कुछ सहारे प्रदान करते हैं। जबकि मण्डी-मुद्रा और विशेषकर मजदूरी-प्रथा पूर्णतः बेसहारा व्यक्ति की माँग करते हैं। ऐसे में पहचान की एक राजनीति ने नये गुल खिलाये। नारी के साथ भेदभाव, दुराचार, क्रूरता के तथ्यों को आधार बना कर विकृत समुदायों द्वारा प्रदत सहारों पर आक्रमणों का सिलसिला। मण्डी की बढती शक्ति के सम्मुख पुरुष की यह बढती कमजोरी है जो स्त्रियों को भी मजदूर बनने को मजबूर कर रही है। पहचान की एक राजनीति इस वास्तविकता पर पर्दा डाल कर इसे स्त्री-सशक्तीकरण प्रस्तुत करती है। नारी के मजदूर बनने को मुक्ति की राह पर कदम देखना-दिखाना.....

– व्यक्ति को अपनी सामाजिक संरचना की इकाई बनाने को अग्रसर मण्डी-मुद्रा, मजदूरी-प्रथा के लिये विकृत समुदाय भी बाधा हैं। इसलिये अनेक प्रकार की पहचान की राजनीतियों के जरिये विकृत समुदायों का इस्तेमाल करती मण्डी-मुद्रा और मजदूरी-प्रथा विकृत समुदायों पर आक्रमण भी जारी रखे हैं। यह व्यक्ति को इकाई बनाना है जिसने नारी को भी मजदूर बना कर ''मैं'' के वाहक वाहन में बदल दिया है।

●व्यक्ति के इकाई बनने के संग मानव योनि में सार्विक होता ''मैं'' सामान्य सम्बन्धों के लिये स्थान लीलता जाता है। पुरुष का ''मैं'' अपने वंश के प्रसार में अपनी पीड़ा कम करने के स्वपन देखता था। इधर पुरुष के ''मैं'' के संग आन खड़ा स्त्री का ''मैं'' वंश के प्रचलन में ''मैं'' के बने रहने के भ्रम को समाप्त करता है। '' बच्चे नहीं चाहियें'' का एक कारण यह भी है। इसलिये आज जन्म के पश्चात मृत्यु की निश्चितता ''मैं'' को अधिकाधिक पगला रही है। इस सन्दर्भ में यौन सम्बन्धों को देखें। एक सहज, आनन्ददायक क्रिया के स्थान पर यह एकमेव (अंग्रेजी में THE) सम्बन्ध बन गया है। स्त्री हो चाहे पुरुष, सम्भोग की भूख हर समय बनी रहती है और अनेक प्रकार के सौदागर इसे भुनाते हैं। ऐसे में पीड़ा से एक राहत के स्थान पर यौन सम्बन्ध मनोरोगी पीड़ा का एक कारक बन गये हैं।

स्त्री हो चाहे पुरुष, बढता अकेलापन हम सब के सम्मुख मुँह बाये खड़ा है। इस सिलसिले में ''मैं कौन हूँ?'' पर चर्चा आगे करेंगे और अपने अंश होने के तथ्य को ध्यान में रखेंगे। (जारी)

ग्रामीण कथा–गाथा

दो सौ वर्ष से दस्तकारी-किसानी की सामाजिक मौत और सामाजिक हत्या का सिलसिला जारी है। यह पूरी दुनिया की बात है। यूरोप और उत्तरी अमरीका से किसानों तथा दस्तकारों का सफाया-सा हो चुका है। आज अमरीका सरकार के क्षेत्र में आबादी का चार प्रतिशत ही खेतीबाड़ी में है और वह भी कम्पनियों में साहबों तथा मजदूरों के रूप में। फैक्ट्री-उत्पादन ने पहले दस्तकारी को मिटाया और फिर कृषि में फैक्ट्री-पद्धति किसानी खेती की मौत लिये है। यूरोप में फैक्ट्री-उत्पादन के फैलाव ने दस्तकारों-किसानों के एक हिस्से को मजदूरों में बदला, दूसरा हिस्सा दुकानदारों में परिवर्तित हुआ, और बड़ा हिस्सा उत्तरी अमरीका-आस्ट्रेलिया आदि स्थानों को खदेड़ दिया गया- पलायन कर गया। इसका एक परिणाम अमरीका-आस्ट्रेलिया में रह रहे समुदायों को निर्ममता से मिटाना रहा। और, यूरोप में स्थापित हुआ फैक्ट्री-उत्पादन विश्व-व्यापी बनता आया है। फिर, व्यापार में फैक्ट्री-पद्धति दुकानदारों का सफाया करती है। और फिर, भाप-कोयले वाली मशीनों के दौर में फालतू मजदूरों की बड़ी सँख्या को इलेक्ट्रोनिक्स ने बहुत अधिक बढा दिया है। आज संसार में करोड़ों बेरोजगार मजदूरों के संग एशिया-अफ्रीका-दक्षिणी अमरीका में तिल-तिल कर कट-मर रहे अरबों दस्तकार-किसान हैं.....इन सब के लिये कहीं कोई जगह नहीं है। सामाजिक असंतोष अधिकाधिक विस्फोटक हो रहा है। ''आतंकवाद'' का शोर मचा कर सब देशों की सरकारें सामाजिक असन्तोष को आतंक के जरिये दबाने पर एकमत हैं, एकजुट हो रही हैं। भयभीत सरकारें ग्रामीण क्षेत्रों से शहरों में आ रही लोगों की बाढ को थामने के लिये खादी ग्रामोद्योग, किसानों की ऋण माफी, ग्रामीण रोजगार गारन्टी वाले रेत के बाँध भी खड़े कर रही हैं।

ग्रामीण रोजगार गारन्टी योजना मजदूर : '' मथुरा जिले के एक गाँव के दस्तकार परिवार से हूँ। आई.टी.आई. की। अप्रेन्टिस की। नौकरी के लिये मथुरा, आगरा, अहमदाबाद, गुड़गाँव, फरीदाबाद के चक्कर काटे। फरीदाबाद में एक फैक्ट्री में लगा और 6 महीने आद ब्रेक। फिर बेरोजगार..... अब दो महीने से नोएडा में एक फैक्ट्री में लगा हूँ। पहली बेरोजगारी में बरसों की परेशानी से सबक ले कर दूसरी बेरोजगारी के समय मैंने ग्रामीण रोजगार गारन्टी योजना में काम करना तय किया। पहला काम जुलाई 08 में ग्राम पंचायत के तहत तालाब से मिट्टी उठाने का

मिला। फिर अगस्त-सितम्बर में सिंचाई विभाग से बम्बे से मिट्टी हटाने का काम मिला। कुल 21 दिन काम किया, कागजों में 22 दिन दिखाया। काम हम 35 मजदूरों ने किया पर कागजों में 50 दिखाये और 15 लोगों की घर बैठे हाजिरी लगी। खींच कर काम, भारी काम, मीटर से नाप कर – 50 की जगह 35 ने मिट्टी उठाई। भुगतान नवम्बर और दिसम्बर में जा कर। कहते हैं कि जीरो बैलेन्स पर बैंक खाता खुलेगा। खाता खोलने के 20-50 रुपये लिये। पहली किस्त दी तब 200 रुपये खाते में रखने के लिये रख लिये। दूसरी किस्त के समय भी 200 रुपये खाते के नाम पर रख लिये। पहली किस्त दी उस रोज सुबह 8 बजे हम सब को बैंक बुलाया और 3 बजे तक टरकाते रहे। फिर बोले कि कल आना। एतराज पर खर्चा माँगा और प्रत्येक से 20 रुपये लिये। हम से अँगुठे-हस्ताक्षर करवा कर पैसे शिक्षा मित्र तथा ग्राम विकास अधिकारी को दिये जिन्होंने हम 35 को 800-800 रुपये और घर बैठे हाजिरी वालों को 400-400 रुपये दिये। यही सब दूसरी किस्त के समय हुआ.... खर्चे के नाम पर 20 की बजाय 50 रुपये काटे तो हम ने विरोध किया जिस पर धमकी दी – दुबारा भी तो काम पड़ेगा। दूसरी बार भी हम 35 को 800-800 रुपये और घर बैठे हाजिरी वाले 15 को 400-400 रुपये दिये। हमारी पास बुक बैंक वालों के पास रहती हैं और जॉब कार्ड शिक्षा मित्र के पास। दिहाड़ी 100 रुपये कहते हैं पर काम करने वालों को 70 रुपये भी नहीं पड़ते और वह भी दिहाड़ी तोड़ कर परेशानी के संग कई महीने बाद। ऐसे में हम ने योजना से छुट्टी कर ली और जनवरी में बागवानी का काम आया तो गाँव के किसी मजदूर ने नहीं किया। शिक्षा मित्र और ग्राम विकास अधिकारी ने हमें समझाया था कि मण्डल, जिला, ब्लॉक अधिकारियों को पैसे देने होते हैं और तुम्हारे लिये हम मोटरसाइकिल पर आते-जाते हैं, इस सब पर खर्च होता है। नवम्बर-दिसम्बर में शिक्षा मित्र जब हमें पैसे बाँट रहा था तब उसे सरकार से दस महीनों की तनखायें नहीं मिली थी।''

दर्पण में चेहरा–दर–चेहरा

फरीदाबाद में :

शाही एक्सपोर्ट मजदूर : '' आई पी 1 सैक्टर-28 स्थित फैक्ट्री में नवम्बर 08 में एक ठेकेदार के जरिये कम्पनी ने फिनिशिंग विभाग में 50 महिला और 50 पुरुष मजदूर 8 घण्टे के 75 रुपये में रखे थे, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। अब 5 ठेकेदारों के जरिये रखे करीब 3000 मजदूर फैक्ट्री में हैं। सुबह 9 से रात 8 की शिफ्ट में हैण्ड वर्क में ठेकेदार के जरिये रखी 600 महिला और 200 पुरुष मजदूर हैं। होम फिनिशिंग में ठेकेदार के जरिये रखे 1000 पुरुष मजदूर साँय 6 से अगले रोज सुबह 6 बजे की शिफ्ट में हैं। दिन में कटिंग में ठेकेदार के जरिये रखे 100 मजदूर हैं तो सैम्पलिंग में भी हैं। प्रोडक्शन (सिलाई) में ठेकेदार के जरिये रखे 150 टेलर हैं। ट्रान्सपोर्ट में कम्पनी ने स्वयं 40 ड्राइवर रखे हैं। कहा कि 1500 रुपये बढा देंगे, 10 घण्टे ड्युटी करो। ड्राइवरों ने पैसे पे-स्लिप पर देने को कहा..... कम्पनी ने ठेकेदार के जरिये 6 ड्राइवर रख लिये हैं। ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों की ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। इधर मार्च के तीसरे सप्ताह में सुबह 10 से 12 बजे तक जाँच वाले फैक्ट्री में रहे। कम्पनी को पहले से पता था इसलिये ठेकेदारों के जरिये रखे सब मजदूरों को इस दौरान बाहर रखा। स्थाई मजदूरों के कार्ड पंच होते हैं जबकि ठेकेदारों के जरिये रखे वरकरों की हाजिरी अलग से लगती है। वैसे कम्पनी ने स्वयं के 10 गार्ड, पैराग्रिल सेक्युरिटी के जरिये 40 गार्ड तथा सी एम के 5 गार्ड लगा रखे हैं। फैक्ट्री में ***वाल मार्ट, केल्विन, ओल्ड नेवी*** आदि का माल बनता है। इनके दबाव में इधर फरवरी से कम्पनी स्थाई मजदूरों को दूसरे व चौथे शनिवार को छुट्टी देने लगी है पर.... पर बदले में ओवर टाइम के 16 घण्टे काट रही है। स्थाई मजदूरों को भुगतान दुगुनी दर से है इसलिये ओवर टाइम के 600 रुपये उड़ जाते हैं..... तनखा 7 तारीख को मिलती है और देनदारी चुका कर 10 तारीख को सोचते हैं कि 27 दिन खर्च कैसे चलेगा ? यह 600 रुपये कटना भारी पड़ता है। जिनका माल बनता है वो तो यह भी कहते हैं कि अरजेन्ट हो तब भी महीने में 16 घण्टे से ज्यादा ओवर टाइम नहीं जबकि..... ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों के होते हुये भी स्थाई मजदूरों का अब 60-100 घण्टे ओवर टाइम प्रतिमाह। फैक्ट्री में काम करते 3000 स्थाई मजदूरों में 60 प्रतिशत महिला मजदूर हैं। शिशु कक्ष है पर बच्चों के फल-दूध का आधा हिस्सा स्टाफ वाले खा जाते हैं। इधर मार्च में कैन्टीन में समोसा 5 से 7 रुपये का किया पर विरोध के कारण 6 रुपये में।''

ब्रॉन लैब श्रमिक : '' 13 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में रात 7 बजे काम आरम्भ करते मजदूर अगले रोज सुबह 8½ तक काम करते हैं। इस 13½ घण्टे ड्युटी वाले 70 मजदूर ठेकेदारों के जरिये रखे हैं और इनकी ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। इन्हें 8 घण्टे के 90 रुपये देते हैं और ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। दिन की शिफ्ट में 12 स्थाई मजदूर, सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन तथा ई.एस.आई. व पी.एफ. लागू वाले ठेकेदार के जरिये रखे 60 मजदूर, और चार ठेकेदारों के जरिये रखे 150 वरकर हैं जिनकी ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं, तनखा 2500 रुपये। दिन की शिफ्ट में कभी 2 तो कभी 4 घण्टे ओवर टाइम, भुगतान सिंगल रेट से। टेबलेट, कैपसूल, लिक्विड़, इंजेक्शन – सब विभागों में काम का बोझ तो है ही, उड़ते दवाई के पाउडर वाले टेबलेट विभाग में तो बहुत मजबूरी वाले मजदूर ही रहते हैं। फैक्ट्री

में 100 महिला और 200 पुरुष मजदूर काम करते हैं।''

गुड़गाँव में :

आनन्द निशिकावा श्रमिक : ''प्लॉट 119 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में कम्पनी ने स्वयं 7 मजदूर भर्ती किये हैं और हम 500 को एक ठेकेदार के जरिये रखा है। हम वर्ष के बारहों महीने फैक्ट्री में काम करते हैं पर कागजों में दस महीने ही दिखाते हैं। ऐसा कई वर्ष से कर रहे हैं। हाजिरी के लिये हमें कार्ड नहीं देते, एक नम्बर होता है और हर तीन महीने में नम्बर बदल देते हैं। तनखा से ई.एस.आई. व पी.एफ. के पैसे काटते हैं पर ई.एस.आई. कार्ड नहीं देते और फण्ड के पैसे कुछ मजदूरों को ही मिलते हैं। जनवरी तक हैल्परों की तनखा 3510 रुपये थी पर अब फरवरी की 3665 रुपये दी है। दो शिफ्ट 12-12 घण्टे की और ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। तनखा हर महीने देरी से, फरवरी की 17 मार्च को दी।''

धीर इन्टरनेशनल कामगार : '' प्लॉट 299 उद्योग विहार फेज-2 स्थित फैक्ट्री में सिलाई कारीगरों ने 10 मार्च को काम बन्द कर दिया तब उन्हें फरवरी की तनखा दी – फिनिशिंग विभाग में 18 मार्च को दी। ठेकेदारों के जरिये रखे हैल्परों की तनखा 2500 रुपये और फरवरी की आज 28 मार्च तक नहीं दी है। काम सुबह 9½ आरम्भ होता है और सिलाई कारीगरों को रात 10 $^{3}/_{4}$ पर छोड़ते हैं जबकि फिनिशिंग विभाग वालों तथा ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों को रात 2 बजे छोड़ते हैं, 4-6 बजे सुबह तक रोक लेते हैं। फरवरी में 160-180 घण्टे ओवर टाइम के, भुगतान 28 मार्च तक नहीं और माँगने पर कार्ड काट देते हैं, मारपीट भी।''

एम वाई फैशन (मेघा ट्रेडर्स) वरकर : ''प्लॉट 488 उद्योग विहार फेज-3 स्थित फैक्ट्री में काम करते 3000 मजदूर सुबह 9 व 9½ से रात 9 तक काम करते हैं और महीने में 20 रोज रात 2 बजे तक। महीने में 200 घण्टे ओवर टाइम, भुगतान सिंगल रेट से भी कम, 13 रुपये प्रतिघण्टा। तनखा से ई.एस.आई. व पी.एफ. के पैसे काटते हैं पर ई.एस.आई. कार्ड नहीं देते और फण्ड नम्बर नहीं बताते। ठेकेदार के जरिये फिनिशिंग में 800 मजदूर – बसें भर कर आती हैं, दो-चार दिन काम करवा कर निकाल देते हैं।''

दिल्ली में :

वीयरवैल इण्डिया मजदूर : '' बी-134 ओखला फेज-1 स्थित फैक्ट्री में 600 मजदूर काम करते हैं और सब कम्पनी ने स्वयं रखे हैं पर ई.एस.आई. व पी.एफ. 200 के ही हैं। चार महीने से लगातार सुबह 9 से रात 1 बजे तक सब को रोकते हैं – फिनिशिंग में पुरुष मजदूरों को तो महीने में दस रोज सुबह 5 बजे तक रोक लेते हैं और फिर 9 बजे से ड्युटी। धागे काटने तथा पीस खोलने का काम करती 30 महिला मजदूर भी रात एक बजे छूटती हैं और फिर स्वयं अपने स्थानों को जायें, कम्पनी कोई प्रबन्ध नहीं करती। कम्पनी 200 को ही गेट पास देती है, 400 को नहीं – रास्ते में पुलिस परेशान करती है। रात 1 एक बजे छूट कर 3-4 महिलाओं समेत 100 मजदूर इक्ट्ठे तेखण्ड लौटते हैं इसलिये पुलिस से परेशानी नहीं होती पर जैतपुर, मीठापुर, संगमविहार वालों को कई बार पुलिस 4 बजे तक बैठा लेती है। साप्ताहिक छुट्टी नहीं, कोई छुट्टी नहीं, तीसों दिन काम। महीने में 3 बार 10 मिनट की देरी पर 4 घण्टे और 5 बार 10 मिनट देरी पर 8 घण्टे काट लेते हैं। एक दिन छुट्टी करने पर 2 से 7 दिन बैठा देते हैं। काम करते समय तबीयत खराब होने पर कहते हैं कि एक हफ्ते छुट्टी कर लो या हिसाब ले लो। थोड़ी-सी गलती पर नौकरी से निकाल देते हैं। सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन देते हैं पर ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी दर की बजाय सिंगल रेट से करते हैं। बेसमेन्ट में कटिंग तथा फिनिशिंग हैं और पहली मंजिल पर बहुत बड़ा व शानदार कार्यालय है परन्तु तीसरी मंजिल पर लगी 400 मशीनों पर सिलाई कारीगरों के बैठने की जगह बहुत कम है। कैन्टीन में मात्र 50 के लिये मेज-स्टूल हैं और चाय का भी प्रबन्ध नहीं है। भोजन इधर-उधर बैठ कर करते हैं। हाँ, पीने का पानी ठीक है और लैट्रिन साफ रहती हैं।''

ब्ल्यू बर्ड रैपोग्रेफिक श्रमिक : '' बी-17/1 व 17/3 ओखला फेज-2 स्थित फैक्ट्री में महीने के तीसों दिन 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। सप्ताह बाद शिफ्ट बदलती है – रात वाले शनिवार को पूरी रात काम करेंगे और फिर रविवार को पूरे दिन। शिफ्ट बदलने के समय इस लगातार 24 घण्टे ड्युटी के समय भोजन के लिये 25 रुपये देते हैं। अन्यथा, 12 घण्टे ड्युटी में एक कप चाय भी नहीं देते। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। फैक्ट्री में ***एन सी ई आर टी, आउटलुक ग्रुप, गोयल ब्रदर्स*** की बहुत किताबें छपती हैं। यहाँ छपाई में 70 मजदूर कम्पनी ने स्वयं रखे हैं और बाइंडिंग व डाई कटिंग में 80 मजदूर दो ठेकेदारों के जरिये रखे हैं। ई.एस.आई. व पी.एफ. 10 मजदूरों की ही हैं। तनखायें 2700 से 8000 रुपये। पीने का पानी खराब। लैट्रीन बहुत-ही गन्दी, दरवाजे टूटे। मैनेजर गाली देता है।''

उषा एग्जिम कामगार : ''ओखला फेज-3 स्थित फैक्ट्री में चमड़े के थैले और पत्थर के आभूषण निर्यात के लिये बनते हैं। मजदूरों की ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं।''

विचारणीय है शिशुओं का टीकाकरण

● मनुष्य प्रकृति का एक अंश है। प्रकृति हमारे शरीरों को अपनी देखभाल करने, स्वयं को स्वस्थ रखने की शक्ति देती है।

प्रकृति में बहुत-सारे कीटाणु हैं। हम में से प्रत्येक के मुँह में ही इतने कीटाणु होते हैं जितने पृथ्वी पर मुनष्य नहीं हैं। कीटाणुओं के हमारे शरीर के साथ अनेक प्रकार के सम्बन्ध हैं, गतिशील रिश्ते हैं। मनुष्य के शरीर के साथ मिल कर कीटाणु शरीर की प्रक्रिया का संचालन करते हैं।

हमारे शरीर के अन्दर के तथा शरीर के बाहर के कौन-कौन से कीटाणु, किन-किन मात्राओं में और कैसी स्थितियों में हमारे लिये हानिकारक हैं यह कोई सीधी-सरल बात नहीं है।

● ऊँच-नीच, अमीर-गरीब और विशेषकर मण्डी-मुद्रा से जुड़े ज्ञान-विज्ञान अपनी नाक तक देखने के दौर में भी ''अन्य'' को शत्रु के तौर पर देखते थे। ज्ञानियों-विज्ञानियों की भाषा ही युद्ध की भाषा होती थी-है। यह लोग हमारे शरीर के सिपाही-कर्नल-जनरल को ''आक्रमणकारियों'' से लड़ते देखते थे-हैं।

आरम्भ में टीकाकरण कीटाणुओं को मात्र शत्रु मान कर चलता था। फिर इसमें मिले मुनाफे के पुट ने स्थितियाँ बहुत-ही विनाशकारी बना दी हैं।

सरकारें टैक्सों की वसूली के जरिये बिखरी हुई धन-सम्पदा को एकत्र करती हैं। इस तरह बनते लूट के ढेर के लिये, इस पर कब्जे के लिये गिरोहों के बीच युद्ध होते रहे हैं। इधर टैक्सों के इन अरबों-खरबों-नील-पदम में हिस्सा-पत्ती के लिये नेता और दल चुनावों में करोड़ों खर्च भी करने लगे हैं। टीकाकरण का सरकारी कार्यक्रम नेताओं, अफसरों, विशेषज्ञों, कम्पनियों के लिये दुधारू गाय भी है – भारत सरकार पोलियो अभियान पर ही हर वर्ष 1200 करोड़ रुपये खर्च कर रही है।

और, यह युद्ध की भाषा ही है कि सरकारें आज वास्तव में कीटाणुओं को हथियारों में बदलने पर अरबों खर्च कर रही हैं। प्रयोगशालाओं में कीटाणुओं में परिवर्तन कर उन्हें एटम बमों जैसा बनाना आज हजारों वैज्ञानिकों की नौकरी है।

● टीकाकरण के लिये बहुत भारी दबाव है, जबरन ही कह सकते हैं। प्रश्न हम सब के सम्मुख मुँह बाये खड़ा है :

जन्म लेते ही बच्चे के टीके लगाना शिशु का स्वागत करना है या फिर अत्याचार का आरम्भ ? नियमित अन्तराल पर शिशुओं के अनेक प्रकार के टीके लगाने, बून्द पिलाने पर विचार करने के लिये कुछ तथ्यों पर गौर करें।

– शिशुओं को लगाये जाते अधिकतर टीके बिना परीक्षण के लागू कर दिये गये हैं। ऐसे में पहला कार्य तो यह बनता है कि टीकाकरण की उपयोगिता को जाँचा जाये। जाँच के दो पहलू होते हैं : क्या यह उपयोगी है ? इसके प्रयोग से कोई अन्य नुकसान तो नहीं हैं ? हालैण्ड में, और हाल ही में जर्मनी में किये प्रयोगों में पाया गया है कि टीके नहीं लगे बच्चों से टीके लगे बच्चे अधिक बीमारियों से ग्रस्त होते हैं।

– बन्दरों और भेड़ों में टीके तैयार करने वाली क्रूरता अपने आप में एक अति महत्वपूर्ण सवाल है परन्तु उस पर चर्चा यहाँ नहीं करेंगे। शिशुओं को लगाये जाते टीकों में पारा और अल्युमिनियम को ही यहाँ देखें। विषैलेपन में पारा एटम बम में प्रयोग होते यूरेनियम से ही कम है। शरीर में पारा पहुँचने पर यह मस्तिष्क की अनेक बीमारियों का कारण बन सकता है। अल्युमिनियम गुर्दों और जिगर के लिये बहुत हानिकारक है। शिशुओं को जो टीके लगाये जा रहे हैं उन में पारा और अल्युमिनियम की घातक मात्रायें होती हैं। यह तो शरीर की प्रतिरोध की क्षमता है कि बड़ी सँख्या में बच्चे बीमार नहीं हो रहे।

– भारत सरकार के अपने आँकड़ों के अनुसार भी एक चौथाई से ज्यादा शिशु कुपोषण के शिकार हैं। ऐसे बच्चों का टीकाकरण भद्दा-क्रूर मजाक है .....बच्चों को 25 बार पोलियो की बून्द पिलाने के बाद भी वे पोलियो से ग्रस्त हुये हैं।

– करोड़ों बच्चों को टीके लगाने के अरबों-खरबों के धन्धे के अभिशाप के अहसास के लिये कृषि में दवाओं के धन्धे को देखें। कीटनाशक और खरपतवार नष्ट करते रसायन दवा कम्पनियों के लिये भारी मुनाफे लिये हैं। परन्तु, प्रकृति के सन्तुलन को बिगाड़ती और खेतों, फसलों, भूजल को विषैला बनाती यह दवायें गाँवों में भी कैन्सर की महामारी ला रही हैं।

शिशुओं को टीके लगाने से होती अत्याधिक हानियों के बारे में अधिक जानकारी के लिये कृपया श्री जगन्नाथ चटर्जी का आलेखः ''50 Reasons to Protect Infants from Vaccines" देखें। एक मित्र ने यह हमें भेजा। मेल <jagchat01@yahoo.com>

शिशु के लिये माँ का दूध पर्याप्त है। छह महीने तक तो सिर्फ, और सिर्फ माँ द्वारा दूध पिलाना एक अनिवार्यता बनता है। अमर होने और चिरयौवन की अपनी हवस से कृपया बच्चों को बख्शें।

कानून हैं शोषण के लिये छूट है कानून से परे शोषण की

फरीदाबाद में :

ग्लोब टैक्स मजदूर : ''प्लॉट 2, 13/3 मथुरा रोड़ (फ्रिक इण्डिया के पीछे) स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में कपड़ों की रंगाई होती है। कम्पनी रात की शिफ्ट दिखाती ही नहीं और दिन में 8 घण्टे ड्युटी दिखाती है। तीसों दिन काम होता है पर दस्तावेजों में साप्ताहिक छुट्टी दिखाते हैं। फैक्ट्री में 65 मजदूर काम करते हैं पर ई.एस.आई. व पी.एफ. 8 के ही हैं। प्रतिदिन 12 घण्टे पर 30 दिन के 2500-3200 रुपये देते हैं परन्तु जिन 8 की ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं उनकी पक्के रजिस्टर में ऑपरेटर ग्रेड की तनखा दिखाते हैं। कच्चे-पक्के रजिस्टर बना रखे हैं। तनखा देरी से, 20 तारीख के बाद। गाली बहुत ज्यादा, मारपीट भी और तनखा काट लेते हैं। भाप का, गर्मी का काम है और जगह की बहुत कमी है। लैट्रीन बहुत गन्दी। नौकरी छोड़ने पर 15-20 दिन किये काम के पैसे देते ही नहीं। यहाँ ग्लोब टैक्स में ***मारकोस, रमण इन्डस्ट्रीज, सेवन सीरीज, प्रीति फैशन, लॉज फैशन, माया टैक्स, राइट चैनल*** आदि के कपड़ों की रंगाई होती है पर कुछ माल के बिल एस.आर. फैब्रिक के नाम से बनाये जाते हैं। खतरनाक रसायन प्रयोग किये जाते हैं पर सुरक्षा का कोई प्रबन्ध नहीं – चश्मे भी नहीं, दस्ताने भी नहीं। कास्टिक आँख में गिर जाता है, हाथ खराब रहते हैं, चर्म रोग। डी एल एफ इन्डस्ट्रीयल क्षेत्र में 40 डाइंग मिल हैं और प्रदूषण तथा जल स्तर गिराने को ले कर सैक्टर 30 व 31 के निवासी कल्याण संगठनों ने इन फैक्ट्रियों को यहाँ से हटाने के लिये चण्डीगढ में मुकदमे किये हुये हैं। केस चलते रहें और फैक्ट्रियाँ नहीं हटें के लिये क्षेत्र की प्रत्येक डाइंग मिल मैनेजमेन्ट कलर फैब के मैनेजिंग डायरेक्टर के पास हर महीने 12 हजार रुपये जमा करती है। रंगाई कारखानों में पानी बहुत चाहिये। डाइंग मिलें दिखाने के लिये सप्लाई का पानी लेती हैं और बड़ी टंकी लगा रखी हैं परन्तु यह अधिकतर पानी जमीन से खींचती हैं। बोरिंग गैर-कानूनी है पर फैक्ट्रियों में यह सामान्य है और सरकारी अधिकारी भी जानते हैं। पूरे क्षेत्र में पानी का स्तर बहुत नीचे चला गया है। डाइंग मिलों का संगठन मन्थली की देखरेख करता है। इसके अलावा नगर निगम, श्रम विभाग और मुख्यतः पुलिस अधिकारी जब किसी फैक्ट्री में पहुँचते हैं तब 5-6 हजार रुपये ले जाते हैं।''

कौशिको मशीन टूल्स श्रमिक : ''प्लॉट 250 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में ठेकेदारों के जरिये रखे हैल्परों की तनखा 2500-2800 रुपये, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। जाँच वालों के आने की सूचना कम्पनी को दो घण्टे पहले मिली और 16 अप्रैल को दोपहर पौने तीन बजे ठेकेदारों के जरिये रखे 100 मजदूर फैक्ट्री से बाहर कर दिये। जाँच वालों के सम्मुख 25 स्थाई मजदूर ही कार्यरत रहे। आज 17 अप्रैल को ठेकेदारों के जरिये रखे हम वरकर ड्युटी के लिये पहुँचे तो कम्पनी ने गेट से ही वापस कर दिया क्योंकि आज भी जाँच वालों के आने की बात है। फैक्ट्री में पावर प्रेस बनती हैं और ठेकेदार गाली देते हैं। मार्च की तनखा आज 17 अप्रैल तक नहीं दी है। महीने में 50-60 घण्टे ओवर टाइम, भुगतान सिंगल रेट से।''

कास्टमास्टर कामगार : ''प्लॉट 46 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में 250 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में काम करते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। प्रतिदिन 3-4 गाड़ी माल ***टाटा मोटर्स*** को रुद्रपुर तथा जमशेदपुर भेजा जाता है और ***एरिकसन*** को लखनऊ माल जाता है। ठेकेदारों के जरिये रखे 200 से ऊपर मजदूरों में हैल्परों की तनखा 2500-2600 व ऑपरेटरों की 3000-4500 रुपये और हर महीने देरी से, 20 तारीख के बाद। मंगलवार, 14 अप्रैल को जाँच वाले फैक्ट्री आये। कम्पनी को पहले ही पता था इसलिये ठेकेदारों के जरिये रखे सब मजदूरों को काम पर आने से मना कर दिया था। जाँच वालों के सम्मुख 40 स्थाई मजदूर तथा सुपरवाइजर ही मशीनें चला रहे थे और ढेरों मशीनें बन्द थी – मैनेजमेन्ट ने कहा काम कम है। फैक्ट्री में पीने का पानी खारा है और भोजन के लिये स्थान नहीं है, मशीनों की बगल में बैठ कर रोटी खाते हैं।''

एस पी एल इन्डस्ट्रीज वरकर : ''प्लॉट 84 सैक्टर-25 स्थित फैक्ट्री में शिफ्ट सुबह 9 बजे आरम्भ होती है और रात 3½ पर छोड़ते हैं – महिला मजदूर रात 8 तक ही। यहाँ ***गैप, वाल मार्ट, जे सी पैनी*** के लिये टी-शर्ट बनती हैं। चार ठेकेदारों के जरिये धागे काटने के लिये रखी महिला मजदूरों की ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं, पीस रेट और 11 घण्टे कार्य के करीब 100 रुपये बनते हैं। पुरुष मजदूरों को ओवर टाइम सिंगल रेट से। तीन मंजिला फैक्ट्री में तीन हजार से ज्यादा मजदूर होंगे और मार्च की तनखा आज 14 अप्रैल तक नहीं दी है।''

गुड़गाँव में :

रोलैक्स मजदूर : ''प्लॉट 24 सैक्टर-4, आई एम टी मानेसर स्थित फैक्ट्री में सुबह 9 से रात 2 की ड्युटी, साप्ताहिक छुट्टी नहीं। महीने में जबरन 200-300 घण्टे ओवर टाइम, भुगतान सिंगल रेट से और 180 घण्टे के ही पैसे देते हैं – बाकी के देते ही नहीं। दो

मिनट की देरी पर गाली दे कर भगा देते हैं – अगले दिन आना। महीने में 3 छुट्टी पर निकाल देते हैं। जनरल मैनेजर समेत सब अफसर गाली देते हैं। कम्पनी द्वारा स्वयं भर्ती 150 मजदूरों की ही ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं – ठेकेदार के जरिये रखे दो हजार मजदूरों की ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। तनखा हर महीने देरी से – मार्च की तनखा कम्पनी द्वारा स्वयं भर्ती को 15 अप्रैल को दी और ठेकेदार के जरिये रखों को 22 अप्रैल को।''

दिल्ली में :

भारतीय खाद्य निगम वरकर : ''सी-135 ओखला फेज-1 स्थित एफ सी आई गोदाम में 138 और पूरे भारत में तीस हजार मजदूर जनवरी 94 से पहले से काम कर रहे हैं, लगातार काम कर रहे हैं, अभी भी दैनिक वेतन पर हैं – स्थाई नहीं करते। चावल, गेहूँ की 50 किलो की बोरी कमर पर लाद कर चढना घुटनों और कमर का दर्द तो लिये ही है, दुर्घटनायें भी होती हैं। निगम ने दैनिक वेतन कर्मियों का न तो बीमा करवाया है और न ही बीमार होने पर उपचार करवाती । नेशनल ट्रिब्युनल, मुम्बई में मुकदमा चल रहा है। नेताओं से ' अभी फैसला होगा' सुनते-सुनते हम थक गये हैं। स्थाई मजदूरों से एक चौथाई तनखा हमें मिलती है। मैं 1979 में ठेकेदार के जरिये रखा गया था और 1.1. 94 से दैनिक वेतन पर हूँ..... छठे वेतन आयोग का हमारे लिये कोई अर्थ नहीं है।''

ब्रिटेन में मजदूर

31 मार्च को फोर्ड/विस्टीओन कम्पनी ने ब्रिटेन में अपनी तीन फैक्ट्रियाँ बन्द करने और सब मजदूरों की नौकरी समाप्त करने की घोषण की। अगले रोज बेलफास्ट, बजिल्डोन तथा लन्दन स्थित फैक्ट्रियों पर मजदूरों ने कब्जा कर लिया।

सन् 2000 में वाहन निर्माता फोर्ड कम्पनी ने पुर्जों के लिये विस्टीओन नाम से नई कम्पनी खड़ी की। आज विस्टीओन की विश्व-भर में फैक्ट्रियाँ हैं – भारत में भिवाड़ी और चेन्नै में। ब्रिटेन में फोर्ड कम्पनी और यूनियन के बीच समझौता हुआ था जिसमें फोर्ड मजदूरों को नई कम्पनी में तनखा तथा पेन्शन पुराने ढर्रे पर जारी रखने का वायदा किया गया था। नये भर्ती मजदूरों के लिये शर्तें बदतर थी। वह समझौता अब धोखाधड़ी साबित हुआ है.....

लन्दन फैक्ट्री में 250 मजदूर डैशबोर्ड जैसे वाहनों के प्लास्टिक मोल्डेड पुर्जे बनाते थे और मार्च-जुलाई 08 के दौरान ओवर टाइम भी था। मन्दी की मार – अक्टूबर 08 में एक झटके में 30 अस्थाई मजदूर नौकरी से निकाल दिये। और, 31 मार्च को सब स्थाई मजदूरों को एकत्र कर मैनेजमेन्ट ने नौकरियाँ समाप्त, पाँच मिनट में फैक्ट्री से निकलने को कहा – अपने निजी सामान अगले दिन आ कर ले जायें। पहली अप्रैल को मजदूरों ने फैक्ट्री बन्द पाई। पता चला कि विस्टीओन की बेलफास्ट स्थित फैक्ट्री पर मजदूरों ने कब्जा कर लिया है तो पिछले द्वार से 100 मजदूर लन्दन फैक्ट्री में घुस गये और पेन्ट शॉप तथा छत पर कब्जा कर लिया।

लन्दन फैक्ट्री के अधिकतर मजदूर 20-30 वर्ष से कार्यरत थे और इस दौरान उन्होंने अपनी सँख्या दो हजार से 250 में सिकुड़ते देखी थी। लन्दन से कार्य तुर्की, दक्षिण अफ्रीका आदि में भेजा गया था। लन्दन फैक्ट्री में आधे मजदूर भारत, श्री लंका, इटली, वैस्ट इंडीज से थे। कई मजदूर महिला। दसियों वर्ष से वे एकसाथ कार्य कर रहे थे और अब उन्हें अकेले-अकेले रोजगार केन्द्र से निपटना होगा, कर्ज पर लिये घर की किस्त नहीं चुका पाने का डर रहेगा, घटती नौकरियों के माहौल में नई नौकरी ढूँढनी पड़ेगी। फैक्ट्री पर कब्जे का निर्णय कर उन्हें अल्प काल में बहुत कुछ सीखना था : कानून कैसे कार्य करता है? यूनियन कैसे कार्य करती है? कब्जे का समर्थन करने वाले यह लोग कौन हैं? फोर्ड कम्पनी विश्व स्तर पर उत्पादन को कैसे जोड़ती है? संसार के दूसरे कोने में स्थित मजदूरों से सम्पर्क कैसे करें? कब्जे के लिये समर्थन और भोजन आदि का जुगाड़ कैसे करें? अपने को और अपने संघर्ष को संगठित कैसे करें?

यह प्रश्न आज विश्व-भर में मजदूरों के सम्मुख हैं। अप्रैल में ही फ्रान्स में 3 एम फैक्ट्री में मजदूरों ने छँटनी के खिलाफ मैनेजरों को दो दिन दफ्तर में बन्द रखा। इसी समय जर्मनी में फाक्सवैगन में नौकरी से निकाले गये 300 मजदूरों ने भूख हड़ताल की। और, इसी दौरान तीन महीने से वेतन नहीं दिये जाने पर यूक्रेन में मजदूरों ने एक हार्वेस्टर कम्बाइन फैक्ट्री तथा सरकारी इमारत पर कब्जे किये.....

– फैक्ट्री कब्जे में सक्रिय एक सहभागी

(स्थान की कमी के कारण विस्तार से नहीं दे पाने के लिये क्षमा करें। ब्रिटेन में विस्टीओन फैक्ट्रियों में मजदूरों की तनखायें एक लाख बीस हजार रुपये महीना के आसपास थी।)

पहली मई को लखानी चप्पल फैक्ट्री, प्लॉट 122 सैक्टर-24 में आग से बड़ी सँख्या में मजदूर जल गये।

क्या-क्या नहीं करना बेहतर होगा

पहली मई। ***लखानी चप्पल फैक्ट्री*** (122 सैक्टर-24) में इंजेक्शन मोल्डिंग, हवाई, कोल मोल्डिंग (अपर वाली चप्पल) विभागों में चप्पलों का निर्माण। चौबीसों घण्टे कार्य। तीन मंजिल – कब्र में सोल कटाई व घिसाई। कार्टन। पैकिंग विभाग। रसायन ही रसायन चारों तरफ। इंजेक्शन मोल्डिंग बड़ा विभाग। कोल मोल्डिंग में ही 600 मजदूर..... पूरी फैक्ट्री में 4500 होंगे। तीन महीने से कोल मोल्डिंग में कार्य कर रहे और पेट दर्द के कारण ड्युटी नहीं जाने से बचे मजदूर द्वारा बताई सँख्या क्या अतिश्योक्तिपूर्ण है? पता नहीं। कम्पनी चुप। सरकार चुप। कुछ मजदूर पक्षधर लोग सँख्या 1500 बताते हैं – आग लगी तब 425 या 600 कार्यरत थे तथा 150 लोग ओवर टाइम के पैसे लेने की पंक्तियों में। ज्यादातर मजदूरों की हाजिरी कागज के फर्रों पर। अधिकतर मजदूर पैदल फैक्ट्री पहुँचते थे। डेढ सौ जली साइकिलें। जो घायल अस्पतालों में पहुँचे वे आग लगने के समय कार्यस्थलों पर नहीं थे, पानी-पेशाब के लिये इधर-उधर फैक्ट्री की चारदीवारी में थे। अस्पताल पहुँचाये गये 38 में 5 के ही ई.एस.आई. आई.पी. नम्बर थे और एक बाहर से आया हुआ ड्राइवर. ...इस पर चौतरफा चुप्पी। फार्म 86 – पीछे की तारीख डालने के लिये। तीन कंकाल और 12 अस्पतालों में मरे। अधिकतर मजदूर दसवीं-बारहवीं कर दूरदराज से आये और किराये के कमरों में रहते लड़के। फरीदाबाद में रहते परिजनों ने 5 के लापता होने की शिकायत दर्ज करवाई। दो महीने यहाँ, चार महीने वहाँ के कारण दूर रहते परिजनों को पता ही नहीं होता कि उनके बच्चे किसी समय कहाँ काम कर रहे हैं। 21 मई को काम ढूँढने व्हर्लपूल जा रहे मोहन ने बताया : गाँव से आया हूँ – भाई रामपाल 3-4 महीने से उस फैक्ट्री में था, लौटा नहीं, पता ही नहीं लगा, कागज हैं और कम्पनी ने कहा है कि बाद में देखेंगे, बड़े भाई को यहाँ बुलाया है ..... 22 मई को ड्युटी जाते एक मजदूर : मेरे 5 मित्र वहाँ काम करते थे, उस दिन 3 ड्युटी नहीं गये थे तथा एक ओवर टाइम के पैसे ले कर लौट आया था पर जो ड्युटी पर था वह नहीं लौटा और अस्पतालों में भर्ती लोगों में भी नहीं था..... मुजेसर में एक मकान मालिक : ड्युटी गये तीन लड़के नहीं लौटे, कमरों पर ताले लगे हैं.....

गति, अधिक गति तथा चमक-दमक, अधिक चमक-दमक का उत्पादन ऐसी खतरनाक स्थितियाँ उत्पन्न करता है कि सुरक्षा के कोई प्रबन्ध हो ही नहीं सकते। और फिर, प्रतियोगिता का बोलबाला, बढता बोलबाला तथाकथित सुरक्षा प्रबन्धों का धड़ल्ले से उल्लंघन लिये है। मण्डी-मुद्रा के पक्षधर अपने स्वयं द्वारा निर्धारित ''सुरक्षा'' पैमानों के पालन में बुरी तरह असफल हैं – इनकी असफलता इनकी इच्छा से परे की चीज है, यह एक अनिवार्यता है।

●नियमों-कानूनों की वास्तविकता हिस्सा-पत्ती के लिये खींचातान और मजदूरों पर लाठियाँ-गोलियाँ बरसाने के समय के लिये है।

– राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में, दिल्ली-गुड़गाँव-फरीदाबाद-नोएडा स्थित फैक्ट्रियों में काम करते 70-75 प्रतिशत मजदूर दस्तावेजों में होते ही नहीं। कम्पनियों-मैनेजमेन्टों के मुताबिक और हरियाणा, दिल्ली, उत्तर प्रदेश तथा केन्द्र सरकारों के अनुसार फैक्ट्रियों में काम कर रहे तीन-चौथाई मजदूर वहाँ काम नहीं कर रहे होते।

–फरीदाबाद स्थित फैक्ट्रियों में हर वर्ष हजारों मजदूरों की उँगलियाँ कटती हैं.....

–राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में सब फैक्ट्रियों में ओवर टाइम काम करवाया जाता है। कम्पनियाँ 98 प्रतिशत ओवर टाइम को दिखाती ही नहीं। और, कानून अनुसार दुगुनी दर से भुगतान तो अपवाद है।

– फैक्ट्रियों में कार्य करते मजदूरों में पेशेगत बीमारियों की भरमार है। फरीदाबाद में लाखों मजदूर इन बीमारियों से पीड़ित हैं.....

दो और दो चार के संकीर्ण दायरे वाला विज्ञान भी यह गिनतियाँ कर सकता है पर मण्डी-मुद्रा का वाहक विज्ञान निहित स्वार्थवश यह करेगा नहीं। मन की बात करें तो प्रत्येक मजदूर का मन प्रतिदिन सौ बार तो मरता ही है और आज शायद ही कोई हों जिनके मन दिन में कई-कई बार नहीं मरते।

●भारत सरकार के क्षेत्र में ही सड़कों पर वाहनों की चपेट में आ कर ही हर वर्ष एक लाख लोग मर रहे हैं और आठ-दस लाख लोग बुरी तरह घायल हो रहे हैं .....

कभी भी कुछ भी हो सकता है। प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप में

हर समय हर कोई खतरे में है। प्रत्येक क्षण प्रत्येक का दाँव पर लगे होना वाले हालात हैं। अनिश्चितता और असुरक्षा का बोलबाला है। और, प्रत्येक बहुत-कुछ करती-करता है। किस लिये करते हैं ? यह अधिक मूल प्रश्न है और इस पर चर्चा फिर कभी करेंगे। आईये साँस लेने-साँस लेते रहने के बारे में यहाँ कुछ तात्कालिक बातें करें। एक की जहाँ माँग है वहाँ एक सौ उपस्थित हैं के हालात में चर्चा करें।

★अधिक हाथ ओवर टाइम के दौरान कटते हैं। फैक्ट्री-दफ्तर-स्कूल साँस की तकलीफों और पेट के रोगों के घर हैं। एक स्थान, एक अवस्था में रहना तन की पीड़ा के संग मन के रोग लिये हैं। अतः ओवर टाइम किसी प्रकार की राहत पहुँचाने की बजाय परेशानियाँ बढाता है। जबरन रोकते हैं तब भी बचने के प्रयास करना बनता है। जहाँ कुछ छूट हो वहाँ दो पैसे अतिरिक्त के फेर में ओवर टाइम पर रुकना स्वयं अपने हाथ काटना है। और, ओवर टाइम प्राप्त करने के लिये चुगली व चमचागिरी करना अपना आज तथा कल, दोनों खराब करना है।

★देर से पहुँचने पर डाँटेंगे, वापस कर देंगे, निकाल देंगे के डर से ट्रेन के आगे से भाग कर निकलना अथवा चलती ई एम यू में चढना अपने हाथ-पैर के संग जान को दाँव पर लगाना है। स्वयं इन से बचना और दूसरों को चेताना बनता है।

★अरजेन्ट कम्पनियों का सूत्र है। इसे अपना मन्त्र नहीं बनाना। माल जाना ही है – शिपमेन्ट के चक्कर में स्वयं को झौंक देना अपनी कब्र खोदना है। धमकी और पुचकार की काट में दिमाग लगाना चाहिये। अरजेन्ट का जाप करती कम्पनियाँ स्वयं दिवालिया हो रही हैं।

★थोड़े लाभ अथवा हानि कम करने के फेर में सहकर्मियों-पड़ोसियों के संग चालाकियों में बहुत समय व ऊर्जा व्यय की जाती है। यह चालाकियाँ हमारे आगे ही अत्याधिक सिमटे जीवन को और सिकोड़ती हैं। स्वयं नहीं करना और सहकर्मियों-पड़ोसियों की चालाकी को तूल नहीं देना हम सब के लिये राहत लिये होता है। छोटे नुकसान जानते हुये स्वीकार करना हँसने-बोलने के लिये जमीन बचाये रखता है, बढाता है।

★अच्छे, गहरे, व्यापक सम्बन्ध जीवन का रस हैं। रिश्ते हमें पगलाने से, अधिक पगलाने से बचाते हैं। सम्बन्धों के लिये प्राथमिक आवश्यकता पैसे नहीं बल्कि समय है। अपने स्वयं के लिये समय, अपने बनाने के लिये समय निकालने के जुगाड़ करना हमारी बुद्धि के लिये अत्यन्त महत्वपूर्ण होना चाहिये। पैसा हमारे समय को निगलता है।

★अपने को इक्कीस और दूसरों को उन्नीस दिखाने के लिये हम कितना-कुछ करते हैं। इन सब से बचना बोझ तो घटायेगा ही, हमें बेहतरी की राह पर बढायेगा भी।

मनहूस माहौल में आईये अपनी बेवकूफियों पर हँसें। आईये हँसे ताकि मनहूसियत कम हो।

गुड़गाँव में :

साहिबा इन्टरनेशनल वरकर : '' 75-ए सैक्टर-18 स्थित फैक्ट्री के बहुत कड़ये अनुभव हैं। सुबह 9 से रात 10 तक रोज काम और महीने में 12-18 दिन रात 2 बजे तक रोकते। रविवार को साँय 4 या 6 पर छोड़ देते। ओवर टाइम सिंगल रेट से। गर्मियों में बहुत ज्यादा परेशानी। मैनेजर जोर से चिल्लाता, गाली देता, चुपके से शौचालय में जा कर देखता। ई.एस.आई. किसी मजदूर की नहीं थी, स्टाफ का पता नहीं। पी.एफ. राशि मनमर्जी से ***शालू इन्टरप्राइज*** के नाम से काटते और इसमें बहुत घपला। हाजिरी कच्चे रजिस्टर में, तनखा वाउचर पर। साल-भर पहले हैल्परों को 8 घण्टे के 80-85-90 रुपये। पीने का पानी ठीक नहीं। लैट्रीन गन्दी, महिला मजदूरों के लिये एक और पुरुष मजदूरों के लिये 3 – लाइन लगती। फ्रान्स, इटली, जापान से बायर आते उस दिन सफाई और मैनेजर उनके साथ रहता – जो 18 वर्ष से कम के दिखते उन्हें छाँट कर तीसरी मंजिल पर भेज देते। तबीयत खराब होने पर भी छुट्टी नहीं। मानेसर भेजा गया एक मजदूर वहाँ फैक्ट्री में लगी आग में बुरी तरह जला तो हम मजदूरों में चन्दा कर उसके उपचार की चर्चा.... बात फैलने के डर से कम्पनी ने उसका इलाज करवाया। बाद में कम्पनी ने ठेकेदार से कहा कि वह मजदूर फैक्ट्री में काम नहीं करेगा क्योंकि वह दूर से ही जला हुआ दिखता है।''

कमल इन्टरप्राइजेज मजदूर : '' ए-122 उद्योग विहार फेज-5 स्थित फैक्ट्री में सुबह 8 से रात 1 तक रोज काम, महीने के तीसों दिन। मार्च में मेरा 222 घण्टे ओवर टाइम, अप्रैल में 228 घण्टे और 15 मई तक 110 घण्टे। ओवर टाइम सिंगल रेट से और हर महीने 8-16 घण्टे खा भी जाते हैं। पहुँचने में 10 मिनट की देरी पर गाली और एक घण्टा काट लेना। भोजन अवकाश के बाद छुट्टी करने पर पूरे दिन की अनुपस्थिति। हैल्परों को तनखा बताते 3500 हैं पर देते 2500 रुपये हैं। ऑपरेटरों का वेतन 3000-4500 रुपये। अप्रैल की तनखा 15 मई को दी। यहाँ ***सन्धार कम्पोनेन्ट्स,*** सैक्टर-7, आई एम टी मानेसर से आते ***हीरो होण्डा*** के पुर्जो की फिनिशिंग वाला कार्य 30 मजदूर करते हैं। मजदूरों की ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। पीने का पानी नहीं – दूसरी फैक्ट्री में जाना पड़ता है। लैट्रीन नहीं है – दिन में छुट्टी कर कमरे पर जाओ और अनुपस्थिति लगवाओ, रात को बोतल ले कर सड़क पर जाओ।''

गिरफ्तारियाँ

हरियाणा सरकार ने गाँवों के गरीबों के पक्षधरों की गिरफ्तारियाँ की हैं। पुलिस ने 20 अप्रैल से 5 जून के दौरान जागरूक छात्र मोर्चा के श्री संजय तथा उनकी पत्नी श्रीमती पूनम देवी को पानीपत से, डॉ. प्रदीप कुमार (एम बी बी एस) को कुरुक्षेत्र से, श्री चरण सिंह-श्री बिट्टू-श्री मुकेश-श्री मुन्नावर को गाँव भूड़ कलाँ से, श्री दिनेश कुमार एवं श्री सुभाष को बहादुरपुर से,श्री देवी लाल मोमदीवाला को इस्माइलपुर से, श्री संजीव कुमार को खिजराबाद से, श्री सम्राट एवं श्री प्रदीप कुमार को यमुनानगर से, श्री मदन लाल को डारपुर से, सुश्री सत्या कापडो को मछरौली से, श्रीमती गीता को हिसार से (उनके पति श्री राजेश पहले से ही हिरासत में हैं), श्री मुकेश को गाँव सारंग से, तथा श्री सुखविन्दर को जगाधरी से गिरफ्तार किया है। सी डी, पोस्टर, पेन्ट, ब्रश भी आरोपों में हैं।अम्बाला मंडल के पुलिस महानिरीक्षक के अनुसार इन गिरफ्तारियों से माओवादी संगठन का हरियाणा से पूरी तरह से सफाया हो गया है। (जानकारी 6 जून 09 के 'पंजाब केसरी' अखबार से)

दमन के जरिये सामाजिक असन्तोष पर नियन्त्रण रखना सरकारों का आचार-विचार है। बढती पीड़ा के सिवा सरकारी हिंसा में और कुछ नहीं है। सामाजिक मौत और सामाजिक हत्या से रूबरू किसान, दस्तकार, गाँवों के गरीब आने वाले दिनों में उथल-पुथल बढायेंगे ही। समाधान, सही समाधान मजदूरों-मेहनतकशों द्वारा नई समाज रचना के अलावा अन्य कोई नहीं दिखता। ग्रामीण गरीबों और शहरी गरीबों के बीच तालमेलों से राहें अवश्य निकलेंगी।

दैनिक रेल यात्री

मैं 6 वर्ष से फरीदाबाद-दिल्ली के बीच दैनिक रेल यात्री हूँ। भागमभाग और भारी भीड़, चलती ई.एम.यू. में चढना, डिब्बों से बाहर निकले होना.... इन 6 वर्षों में मैंने कई एक्सीडेन्ट देखे हैं। शुक्रवार, 29 मई को गाड़ी बल्लभगढ स्टेशन से निकली ही थी कि एक छात्र का सिर सिग्नल से टकरा गया। मित्रों और मैंने लड़के को गाड़ी के अन्दर खींचा। सिर से रक्त बह रहा था और बेहोश था। हम ने तत्काल पुराने फरीदाबाद स्टेशन पर रेलवे पुलिस को सूचना दी। गाड़ी स्टेशन पर पहुँची तो वहाँ प्लेटफार्म पर रेलवे पुलिस उपस्थित नहीं थी। हम लोगों ने छात्र को स्टेशन पर उतारा और गाड़ी छोड़ दी। उस समय वह जीवित था। स्टेशन पर एम्बुलैन्स नहीं, डॉक्टर नहीं, फस्ट एड भी नहीं। घायल के साथ प्लेटफार्म पर हमें 10 मिनट हो गये तब रेलवे के लोग आये। रक्त बह रहा था.... उनके लिये यह सामान्य था जबकि हम उत्तेजित थे। रेलवे पुलिस वाले अभद्रता से पेश आये। घायल को स्ट्रेचर पर लेटा कर बाहर लाये। आटोरिक्शा किराये पर कर जिला अस्पताल ले गये। फरीदाबाद जिला अस्पताल में वातावरण अत्यन्त दयनीय..... छात्र की मृत्यु हो गई।

— एक दैनिक रेल यात्री

एस्बेस्टस

एस्बेस्टस से साँस लेने में अत्यधिक पीड़ा वाली एस्बेस्टोसिस बीमारी होती है। एस्बेस्टस से फेफड़े के कैन्सर का खतरा बढ जाता है। एस्बेस्टस का एक रेशा भी फेफड़ों तक पहुँच जाये तो इससे हुये नुकसान की भरपाई नहीं हो सकती। चालीस देशों की सरकारों तथा विश्व व्यापर संगठन ने यह मान लिया है कि एस्बेस्टस का सुरक्षित तथा नियंत्रित प्रयोग सम्भव नहीं है।

भारत सरकार ने भी एस्बेस्टस के खनन पर रोक लगा रखी है। लेकिन, एस्बेस्टस के आयात और प्रयोग की यहाँ स्वतंत्रता है। सरकार स्वयं जल, मल की पाइपों; रेलवे स्टेशन, बस स्टैण्ड, विद्यालयों की चद्दरों में धड़ल्ले से एस्बेस्टस का प्रयोग करती है। गाड़ियों के क्लच, ब्रेक शू सहित हजारों वस्तुओं में एस्बेस्टस इस्तेमाल हो रहा है। नेता और अधिकारी एस्बेस्टस के खतरों से परिचित हैं। उद्योग मन्त्रालय ने 1994 में तय किया था कि एस्बेस्टस प्रयोग करने वाली नई इकाई को औद्योगिक लाइसेन्स नहीं दिया जायेगा। और, इन चार वर्षों में भारत में एस्बेस्टस का प्रयोग तीन गुणा बढा है। जो मजदूर एस्बेस्टस से सम्बन्धित काम करते हैं वे तो खतरे में हैं ही, उनके परिवार के लोग भी खतरे में हैं क्योंकि उनके कपड़ों से चिपक कर एस्बेस्टस घरों तक पहुँचता है। भारत में हुये पाँच सर्वेक्षणों से पता चला है कि एस्बेस्टस की वजह से सबसे ज्यादा फेफड़ों की बीमारियाँ होती हैं। (जानकारियाँ सुश्री पूनम के 'यूनिब समाचार' 22-28 दिसम्बर 08 अंक में लेख से ली हैं।)

हम उस मोड़ पर आ गये हैं जहाँ सरकारों द्वारा ''अपने-अपने'' नागरिकों पर तोपों से , वायुयानों से बमवर्षा सामान्य बात बन गई है। क्या हमें सरकारें चाहियें? बिना सरकारों वाली समाज रचना जीवन-मरण का प्रश्न है।

उथल-पुथल, बढती उथल-पुथल

★ ***बांग्लादेश*** में फिर मजदूरों का गुस्सा फूट पड़ा। बांग्लादेश के मध्य क्षेत्र में एक कारखाने में बकाया तनखा, वेतन वृद्धि और नौकरी पर बहाली के विवाद ने 27 जून को हिंसक रूप ले लिया। कुछ साहबों की पिटाई हुई। पुलिस ने मजदूरों की भीड़ को तितर-बितर करने के लिये आँसू गैस के गोले छोड़े। मजदूरों ने राष्ट्रीय राजमार्ग बन्द कर दिया। पुलिस के सहायक बल (अन्सार) ने गोलियाँ चलाई। एक मजदूर की मृत्यु। कई फैक्ट्रियों के मजदूर सड़कों पर निकल आये। कुछ मैनेजमेन्टों ने डर से जल्दी छुट्टी कर दी। जहाँ से यह विवाद शुरू हुआ था उस कारखाने को मजदूरों ने आग लगा दी। मजदूर की हत्या के विरोध में 28 जून को बांग्लादेश में जगह-जगह प्रदर्शन हुये। और फिर 29 जून को मजदूरों के गुस्से का विस्फोट हुआ। राजधानी ढाका के औद्योगिक क्षेत्र में मजदूरों और पुलिस के बीच तीखी झड़पें हुई। आक्रोश से भरे मजदूरों की सँख्या पचास हजार हुई तो कारखानों की सुरक्षा के लिये बुलाये गये अतिरिक्त 400 पुलिस वाले भी एक तरफ हट गये। ढाका क्षेत्र में अधिकतर मजदूर सड़कों पर थे लेकिन कुछ फैक्ट्रियों में काम जारी था। वे फैक्ट्रियाँ मजदूरों के आक्रमण का निशाना बनी और पचास कारखानों में आग लगा दी गई। सरकार ने खुँखार विशेष दस्तों को भेज कर मजदूरों के इस असन्तोष पर काबू पाया। (जानकारियाँ रॅट मारुट के इन्टरनेट पर लेख से <www.libcom.org>)

★ जून माह में ही ***भारत*** में किसानों और दस्तकारों पर एक उल्लेखनीय क्षेत्र में सरकार ने हमला बोला। आठ महीने से पश्चिम बंगाल के लालगढ क्षेत्र में 30 गाँवों के गरीबों ने सरकार को ही नकार रखा था। इससे तिलमिलाई सत्ता ने सशस्त्र राज्य पुलिस, केन्द्र की सी आर पी एफ तथा बी एस एफ और विशेष दस्तों का गठजोड़ बनाया। और वायुसेना के गनों से लैस हैलीकोप्टरों की सहायता से लालगढ क्षेत्र में दस्तकारों-किसानों पर आक्रमण।

●बद से बदतर होते हालात में उथल-पुथल, बढती उथल-पुथल स्वाभाविक है। समाज में यह पाँच-सात हजार वर्ष से हो रहा है। पृथ्वी के छिटपुट क्षेत्रों से आरम्भ हुई यह प्रक्रिया इन पाँच सौ वर्ष में अधिकाधिक विश्व-व्यापी बनती आई है।

हिंसा और प्रतिहिंसा, जायज हिंसा और नाजायज हिंसा, शान्ति और अहिंसा के आवरण में बढती हिंसा के चक्रव्यूह में हम फँसे हैं। इससे एक व्यक्ति पचास व्यक्तित्वों में विभाजित होने को अभिशप्त है। आज प्रत्येक अपने तन व मन को काटने में लगा है। हर कोई अपने इर्द-गिर्द वालों को लहुलुहान करने में लगी है। पीड़ा के पहाड़ हर व्यक्ति को बम में बदल रहे हैं। इन दो सौ वर्षों में चक्रव्यूह के कसने की गति तीव्रतर और मारक क्षमता अधिकाधिक घातक होती आई है।

सम्पूर्ण विनाश की ओर हम सब धकेले जा रहे हैं, हम स्वयं को इस दिशा में धकेल रहे हैं। इसलिये आईये चक्रव्यूह की काट के लिये मन्थन बढायें, आदान-प्रदान बढायें।

●व्यक्ति का स्वयं से हर समय पाला पड़ता है। व्यक्ति के अन्य व्यक्तियों से अनेकानेक प्रकार के सम्बन्ध सामान्य बात हैं। ऐसे में बद से बदतर होते हालात में स्वयं को दोष देना, अन्य व्यक्तियों को दोष देना स्वाभाविक है। परन्तु यह तो पीड़ित को, पीड़ितों को ही दोषी ठहराना है।

मेहनतकश तो दमन-शोषण का शिकार रहे ही हैं। परन्तु, ढाई हजार वर्ष पूर्व राजकुमार सिद्धार्थ भी भिक्षु गौतम बना था। और, सम्राट चन्द्रगुप्त हर रात को कमरा बदल कर सोता था। आज मैनेजरों का नौकरी से निकाले जाना, चेयरमैन-मैनेजिंग डायरेक्टरों का जेल जाना सामान्य बात होती जा रही है।

पद पर बैठे व्यक्ति बदलते रहते हैं। पद बने रहते हैं – समस्या पद हैं। इस-उस को थानेदार बनाना अथवा थानेदारों को बदलने में जुटना उलझते जाना है। थानेदारी को ही निशाने पर लाना बनता है। यह मेहनतकशों की मुक्ति के संग चन्द्रगुप्तों के लिये भी चैन की नींद के द्वार खोलेगा..... और सिद्धार्थ भी भिक्षु नहीं बनेंगे, जीवन शाप नहीं रहेगा इसलिये जीवन से मुक्ति-मोक्ष की कामना नहीं रहेगी।

हमारे विचार से सामाजिक सम्बन्धों पर, सामाजिक प्रक्रिया पर ध्यान केन्द्रित करना और पीड़ित-सहपीड़ित के आधार पर आचार-विचार चक्रव्यूह में दरारें डालेंगे।

●राजा-बादशाह की फौज में एक हजार सैनिक स्थाई तौर पर होना बड़ी बात थी। महल-किले वाले सम्राट भूदासों-

किसानों-दस्तकारों द्वारा की जाती उपज का छठा हिस्सा सामान्य तौर पर लेते थे। भाप-कोयला आधारित कारखानों में मजदूरों द्वारा किये जाते उत्पादन का आधा हिस्सा हड़पे जाने ने सरकारों को 50 हजार की स्थाई फौज रखने की क्षमता दी। सन् 1890 में एक सरकार द्वारा एक लाख की स्थाई फौज बनाने के समाचार ने संसार में तहलका मचा दिया था। इधर पैट्रोल-डीजल, बिजली, इलेक्ट्रोनिक्स के दौर में मजदूर जो उत्पादन करते हैं उसका अठानवे प्रतिशत हड़पा जा रहा है। पृथ्वी के संग अन्तरिक्ष तक का सैन्यीकरण.....

●आज जो किया जा रहा है उसका 95-98 प्रतिशत अनावश्यक, नुकसानदायक और खतरनाक है। पृथ्वी, अन्य जीव योनियों, स्वयं मानवों का दोहन-शोषण हमें इस हद तक ले आया है। यह परिणाम है सब के, सब कुछ के दोहन-शोषण पर आधारित ''अच्छे जीवन'' का – सभ्यता, प्रगति और विकास का। पशुओं को दुहने के लिये नाथने से आरम्भ हुआ, दासों को दागने से होता, धरती को चीरती कृषि की राह ऊँच-नीच वाला ताना-बाना फैक्ट्री-पद्धति तक पहुँचा है। तीव्रतर गति, अधिकाधिक चमक-दमक, बढती मात्रा में उत्पादन..... यह पैमाने हैं वर्तमान में ''अच्छे जीवन'' के। ''अच्छा जीवन'' जिसमें बढती सँख्या में लोग फालतू आबादी में, कूड़ा-करकट में बदले जा रहे हैं। ''अच्छा जीवन'' जिसके दायरे में बने रहने की शर्त तन को ताने रखना और मन को मारते जाना है। ''अच्छा जीवन'' जिसके दायरे में बना रहना है तो व्यक्ति को अपने स्वयं के लिये भी समय नहीं रखना.....

इसलिये उथल-पुथल का स्वागत है। उथल-पुथल अन्य तरीकों से जीवन जीने के बारे में सोचने के अवसर प्रदान करती हैं। उथल-पुथल जीवन की नई पद्धति की सम्भावनायें बढाती हैं।

नुकसानदायक और खतरनाक कार्य को बन्द करना कैसा रहेगा ? खटने के समय के घटने से कैसा लगेगा ? रेल बनों को मिली फुर्सत क्या गुल खिलायेगी ? कार्य का अड़तालिसवें-उन्नचासवें हिस्से में सिकुड़ जाना हवा-पानी-मिट्टी तक की सेहत में तत्काल सुधार लायेगा !

उथल-पुथल को प्रोत्साहित करने के लिये शुरुआत स्वयं से भी कर सकते हैं। तन को खींचने की बजाय आईये शरीर की सुनें और आराम के लिये मौके ढूँढें-बनायें। मन को मारने की जगह मन की सुनें। अपने आप के साथ सहज होना दूसरों के साथ सम्बन्धों के लिये पुख्ता आधार प्रदान करता है। हर सम्बन्ध को समय की आवश्यकता है। समय होने से, समय प्राप्त करने से प्यार, लगाव, आदर, सम्मान वाले रिश्तों की सम्भावनायें बनती हैं, बढती हैं। और, ऐसे सम्बन्ध उथल-पुथल को नये धरातल पर ले जा सकते हैं।

दस्तकारों, किसानों, दुकानदारों की सामाजिक मौत और सामाजिक हत्या उथल-पुथल को बढाती जायेंगी। मजदूरों का तीव्रतर शोषण और बढती अनिश्चितता-असुरक्षा विश्व-भर में उथल-पुथल बढाती जायेंगी। नई समाज रचना के लिये उथल-पुथल आवश्यक हैं, स्वागतयोग्य हैं।■

दर्पण में चेहरा–दर–चेहरा

फरीदाबाद में :

टाटा रायरसन मजदूर : '' 33 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में काम करते 300 मजदूर एक ठेकेदार के जरिये रखे हैं और कम्पनी ने स्वयं स्टाफ में 10-12 लोग रखे हैं। दो शिफ्ट हैं 12-12 घण्टे की। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। तनखा से ई.एस.आई. व पी.एफ. की राशि काटते हैं पर ई.एस.आई. कार्ड आधे मजदूरों को ही देते हैं। जिन्हें ई.एस.आई. कार्ड नहीं देते उन्हें नौकरी छोड़ने पर फण्ड के पैसे नहीं मिलते, फार्म भरते ही नहीं। जो सेफ्टी मन्थ मनाया जाता है उस मार्च महीने में इस वर्ष एक मजदूर का हाथ क्रेन के हुक और स्टील कॉयल के बीच दब गया। घायल मजदूर को ई.एस.आई. अस्पताल नहीं ले गये, एक्सीडेन्ट रिपोर्ट नहीं भरी। एस्कोर्ट्स अस्पताल में उपचार करवा कर कुछ पैसे दे कर निकाल दिया। इसी फैक्ट्री में स्टील कॉयल में लिपट कर एक मजदूर की मृत्यु हो गई थी – कोई रिपोर्ट नहीं, किसी दस्तावेज में नाम नहीं, पैसों से मामला रफादफा। यहाँ ***मारुति सुजुकी, हीरो होण्डा, नील मैटल*** आदि के लिये अलग-अलग चौड़ाई व लम्बाई में स्टील कॉयल की कटाई होती है।''

ऑटो लेक वरकर : '' 19/6 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में कार्य के दौरान एक मजदूर की तबीयत ज्यादा खराब हो गई। दिल्ली में सफदरजंग अस्पताल ले गये, वहाँ मृत्यु हो गई। मृत मजदूर के परिवार को आर्थिक सहायता के लिये कम्पनी तब तैयार हुई जब फैक्ट्री में मजदूरों ने काम बन्द कर दिया। मृत साथी के परिवार को एक दिन की दिहाड़ी मजदूर देंगे और उसकी दुगुनी राशि कम्पनी।''

हाई पोलीमर लैब मजदूर : ''प्लॉट 6-7-8 सैक्टर-25 स्थित फैक्ट्री में 18 जून को मजदूरों ने काम बन्द किया और आज 19 को भी काम बन्द है। कम्पनी की दुधौला गाँव वाली फैक्ट्री में भी मजदूरों ने काम बन्द कर रखा है। समझौते के लिये दबाव ....

नोएडा में :

★टी वी, फ्रिज, वाशिंग मशीन, कम्प्युटर मॉनिटर आदि बनाती ***एल जी इलेक्ट्रोनिक्स*** फैक्ट्री में 12 घण्टे की शिफ्ट में ड्युटी कर रहा एक मजदूर 25 मई को आर वन लाइन पर मोल्ड मशीन में फँस गया। सिर में गहरी चोटें लगी, 29 मई तक बेहोश रहा। आर 2 लाइन पर एक अन्य मजदूर का हाथ कुचला गया।

★सूरजपुर-दादरी रोड़, तिलपता स्थित ***डेन्सो*** फैक्ट्री में लाइन सिस्टम है और खड़े-खड़े काम करना पड़ता है। रात 1 से सुबह 8 वाली शिफ्ट में बहुत पेरशानी, साँय 4½ से रात 1 की शिफ्ट में भी भारी दिक्कत। आठ घण्टे में बहुत थक जाते हैं पर फिर उस के बाद जबरन रोकते हैं – महीने में 125 घण्टे तक ओवर टाइम, भुगतान दुगुनी दर से। यहाँ ***हीरो होण्डा, यामाहा, सुजुकी*** दुपहिया और ***मारुति सुजुकी*** आदि चार पहिया वाहनों के पुर्जे बनते हैं। कैजुअल को कम्पनी टेम्परेरी कहती है, 6 महीने के लिये रखती है, 1500 हैं और भर्ती बुलन्दशहर, कानपुर, आगरा, मथुरा, नोएडा आई.टी.आई. जा कर की जाती है। अप्रेन्टिसों के लिये भी कम्पनी आई.टी.आई. जाती है और एक वर्ष सिखाने की बजाय उन से उत्पादन कार्य करवाती है। अप्रेन्टिसों का भत्ता 3000 रुपये और कैजुअलों की तनखा 4500 रुपये – महीने में एक भी छुट्टी पर इन में से 500 रुपये तथा दिहाड़ी काट लेते हैं। सुबह 8 की ड्युटी में 7.50 से पहले फैक्ट्री के अन्दर जाओ, 7.51 पर पहुँचे तो वापस – काम की मजबूरी में फोरमैन अन्दर ले जाता है तो भी आधे दिन की दिहाड़ी काट लेते हैं। रात 1 बजे छूटते हैं तब डेढ-पौने दो तक फैक्ट्री से निकल पाते हैं। पंच करने वाली मशीन पर कार्ड के साथ उँगली भी लगानी पड़ती है और फिर गार्डों द्वारा तलाशी। यह अन्दर जाते और बाहर निकलते, दोनों समय। भीड़, धक्का-मुक्की होती है। ढाई हजार स्थाई मजदूरों में अधिकतर स्थानीय हैं, तनखा 15-20 हजार रुपये, कम्पनी को उत्पादन बहुत ज्यादा निर्धारित करने से रोकते हैं। मजदूरों और मैनेजरों की साझा कैन्टीन है। कम्पनी एक बार चाय-नाश्ता और एक बार चाय देती है। भोजन 5 रुपये में।

ब्रिटेन में मजदूर

★डरावने निर्माण और ध्वंस के यन्त्रों की बड़ी निर्माता ***जे सी बी*** का मुख्यालय ब्रिटेन में है। जे सी बी की फरीदाबाद स्थित फैक्ट्री में स्थाई मजदूरों की सँख्या बहुत कम है – पुर्जे जोड़ कर मशीनें तैयार करने का अधिकतर कार्य कैजुअल वरकरों तथा ठेकेदारों के जरिये रखे जाते मजदूरों से करवाया जाता है और..... और पुर्जे उन सैंकड़ों अन्य फैक्ट्रियों में बनवाये जाते हैं जहाँ मजदूरों को सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन भी नहीं दिया जाता। जे सी बी की ब्रिटेन में कई फैक्ट्रियाँ हैं और उन में स्थाई मजदूरों की सँख्या कम नहीं। अक्टूबर 08 में कम्पनी ने घोषणा की कि ब्रिटेन स्थित फैक्ट्रियों से 510 मजदूरों की छँटनी जरूरी है पर अगर मजदूर तनखा कम करवाने को राजी हो जायें तो 150 को ही निकाला जायेगा। यूनियन ने नौकरियाँ बचाने के नाम पर तनखा में कटौती का समर्थन किया। परन्तु अन्त की बजाय यह आरम्भ था..... वेतन कटौती और 150 को निकालने के कुछ दिन बाद, 13 नवम्बर को कम्पनी ने 399 अन्य मजदूरों को नौकरी से निकाला। फिर 12 जनवरी 09 को 700 और मजदूरों को निकाला। और फिर 16 फरवरी को 97 मजदूरों की नौकरी खाई. ... यूनियन अफसोस व्यक्त करने से बहुत अफसोस व्यक्त करने तक पुहँची।

★***टाटा इन्डस्ट्रीज*** ने अप्रैल 08 में ***फोर्ड मोटर*** से ब्रिटेन स्थित ***जगुआर लैण्ड रोवर*** फैक्ट्रियों का नियन्त्रण प्राप्त किया और .... और तत्काल 600 मजदूरों की छँटनी की। फिर नवम्बर 08 में 850 मजदूरों को नौकरी से निकाला। और फिर, 15 जनवरी 09 को 150 वरकरों तथा 300 मैनेजरों को नौकरी से निकाला। काली का खप्पर भरता नहीं..... टाटा मैनेजमेन्ट ने कहा कि तनखा में कमी के लिये सहमत हो अन्यथा 800 मजदूरों तथा 300 स्टाफ वालों की नौकरियाँ जायेंगी। इस पर मैनेजमेन्ट-यूनियन समझौता हुआ जिसका अर्थ है वर्ष में मजदूरों को 560 करोड़ रुपयों का नुकसान। और, ब्रिटेन में सरकार से 216 करोड़ रुपये की सहायता मिलने के बाद कम्पनी अध्यक्ष रतन टाटा ने 29 मार्च 09 को कहा कि सरकार ने 4000 करोड़ रुपये का कर्ज नहीं दिया तो जगुआर लैण्ड रोवर की ब्रिटेन स्थित फैक्ट्रियाँ बन्द करनी पड़ेंगी, बची हुई बारह हजार नौकरियाँ खत्म होंगी.....

★ब्रिटेन में ***होण्डा*** कम्पनी ने स्वीन्डन स्थित कार फैक्ट्री को फरवरी 09 में चार महीने के लिये बन्द किया। मजदूर ले-ऑफ पर। जून में फैक्ट्री में कार्य आरम्भ करने से पहले कम्पनी ने कहा कि मजदूर तनखा में तीन प्रतिशत कटौती के लिये सहमत हों अन्यथा 490 मजदूरों की नौकरियाँ जायेंगी। यूनियन ने तनखा में कमी का पक्ष लिया है .....

(जानकारियाँ ''क्लास स्ट्रगल'' और ''वरकर्स फाइट'' से ली हैं। सम्पर्क के लिये :

BM WORKERS FIGHT, LONDON WCIN3XX, BRITAIN; ई-मेल <contact@ w-fight.org>)

रफ्तार और स्वास्थ्य

जल्दी का आज बोलबाला है। गति, तीव्र गति, तीव्रतर गति का महिमामण्डन सामाजिक पागलपन का स्वरूप ग्रहण कर चुका है। थल, जल, नभ और इन सब के पार अन्तरिक्ष तथा अन्तरिक्ष से भी परे के लिये तीव्र से तीव्रतर वाहनों का निर्माण आज मानवों की प्रमुख गतिविधियों में है। शीघ्र तैयार होती फसलें और पशु-पक्षियों का माँस जल्दी बढाना आम बात बन गये हैं।... मानव अपने स्वयं के शरीरों की रफ्तार बढाने में जुटे हैं। और, मस्तिष्क की गति, तीव्र गति, तीव्रतर गति ने मुक्ति-मोक्ष का आसन ग्रहण कर लिया है।

प्रकृति के पार जा कर हम गति के उत्पादन में जुट गये हैं। रफ्तार की कई किस्में हैं। हर प्रकार की गति का उत्पादन एक अनन्त तांडव है। रफ्तार बढाना तांडवों की वी भत्सता बढाना लिये है। गति के उत्पादन पर विचार करने की अति आवश्यकता को महसूस करने के लिये स्वास्थ्य पर पड़ते रफ्तार के प्रभावों के कुछ पहलू देखें।

●अपनी देखभाल के लिये मानव शरीर में एक जटिल ताना-बाना है। शरीर में अनेक रक्षा-प्रणालियाँ हैं। उत्तेजना की ही बात करें तो एडरीनल ग्रन्थी में इस पर नियन्त्रण के लिये दो भाग होते हैं – एक तत्काल के लिये तो दूसरा दीर्घ अवधी के लिये रसायन (स्ट्रेस होरमोन) उपलब्ध कराता है। आम बात है कि उत्तेजना मानव शरीर की सामान्य अवस्था नहीं रही है। लेकिन इधर समय पर पहुँचना, निर्धारित समय सीमा में कार्य पूरा करना दैनिक जीवनचर्या बन गई है। इसके लिये आवश्यक तन तथा मस्तिष्क की गति प्रत्येक के लिये जीवन-मरण के प्रश्न के रूप में उपस्थित है। आवश्यक गति का निर्धारण श्रँखला, सामाजिक श्रँखला करती है। यह गति बढती रहती है और श्रँखला से छिटक दिये जाने, नाकारा बना दिये जाने का डर चाबुक का कार्य करता है। ऐसे में प्रत्येक का तन तथा मस्तिष्क हर रोज बहुत समय तक उत्तेजना की स्थिति में रहते हैं। इससे होता यह है कि शरीर की पूरी ऊर्जा दैनिक उत्तेजना के नियन्त्रण पर केन्द्रित हो जाती है। इस कारण शरीर की अन्य रक्षा-प्रणालियों को आवश्यक ऊर्जा-साधनों की पूर्ति शरीर नहीं कर पाता। रक्षा-प्रणालियों का कमजोर होना बीमारियों की सम्भावना बढा देता है। इसलिये जो जीवाणु सहज रूप से शरीर में रह रहे होते हैं और हमारे जीने के लिये आवश्यक हैं, उन्हीं जीवाणुओं से कई प्रकार की बीमारियाँ पैदा हो जाती हैं। घड़ी, जी हाँ घड़ी, स्वास्थ्य की कब्र खोदती है।

●हमारी माँसपेशियाँ और जोड़ अनेक प्रकार की गतिविधियों के अनुरूप हैं। पेड़ पर अठखेलियाँ करते बन्दर के बच्चे को उदाहरण के तौर पर देख सकते हैं। लेकिन गति का उत्पादन, तीव्रतर गति का उत्पादन एक ही क्रिया का बार-बार दोहराना लिये है। हम में से किसी की माँसपेशियों व जोड़ों पर हर रोज काफी समय तक अत्याधिक दबाव होता है तो किसी की माँसपेशियाँ व जोड़ सामान्य तौर पर शिथिल रहने को अभिशप्त हैं। लगातार खड़े-खड़े बारम्बार एक जैसा कार्य हो चाहे बैठे-बैठे मात्र हाथ चलाना, पसीने में भीगे रहना हो या फिर पसीना ही नहीं आना, हम में से अधिकतर का दैनिक जीवन इन दो धुरियों के इर्द-गिर्द घूमता है (ठहरा रहता है कहना अधिक सटीक होगा)। परिणाम है जोड़ों की बीमारियों और माँसपेशियों के दर्द की बाढ। जाँघों, घुटनों, पिण्डलियों, हाथ, कँधा, कमर के दर्द की महामारी रफ्तार, ज्यादा रफ्तार की उपज है।

●मानवों पर जीवाणुओं के आक्रमणों का बढना तथा व्यापक स्तर पर फैलना गति की, तीव्र गति की एक और महिमा है। एक शरीर के आवागमन के दायरे में सामान्य तौर पर जो जीवाणु पाये जाते हैं उनसे निपटने की क्षमता शरीर में प्राकृतिक तौर पर विकसित हुई। बल्कि, यह कहना चाहिये कि मानव शरीर का अपने इर्द-गिर्द वाले तथा स्वयं शरीर में निवास करते जीवाणुओं के साथ समन्वय रहा है। शरीर के अन्दर वाले जीवाणुओं से समन्वय टूटने की चर्चा कर चुके हैं। बढती गति द्वारा पृथ्वी को एक गाँव में बदल देने की बात देखिये। वाहनों में वायुयान को ही लें। फरीदाबाद जिले के एक गाँव में रहते व्यक्ति का शरीर वहाँ के जीवाणुओं के संग सहज जीवन आमतौर पर व्यतीत करता है। उस व्यक्ति का सिंगापुर या अमरीका जाना उसके शरीर को ऐसे जीवाणुओं के सम्पर्क में लाता है जिनके साथ समन्वय स्थापित करने की क्षमता उसके शरीर में नहीं है। वह गति, तीव्र गति द्वारा उत्पन्न बीमारी का शिकार बनती-बनता है। परन्तु बात इतनी ही नहीं है। यहाँ से अमरीका गया व्यक्ति अपने संग यहाँ के जीवाणु ले जाता है और अमरीका से यहाँ आती व्यक्ति अपने संग वहाँ के जीवाणु लाती है। दोनों जगह नई-नई बीमारियों के बीज बोना, बल्कि बीज फैलाना। गति का, तीव्रतर

गति का उत्पादन अपने में नगर-महानगर लिये है। गति, तीव्र गति अपने में विद्यालय-महाविद्यालय, मैट्रो-बस-रेल-वायुयान से अनेकों द्वारा संग-संग यात्रा, बड़ी इमारतों में निवास तथा कार्यालय, और मॉल-बाजार में भीड़ लिये है। इन सब ने छींक अथवा खाँसी से फैलने वाली बीमारियों की अपार सम्भावनायें पैदा कर दी हैं।

●तीव्रतर गति के उत्पादन के लिये नये रसायनों की आवश्यकता पड़ती है। गति के प्राप्त स्तर को बनाये रखने के लिये भारी मात्रा में रसायनों की जरूरत रहती है। मानव निर्मित रसायनों की एक पूरी नई दुनियाँ है। इन डेढ-दो सौ वर्षों में बहुत बड़ी सँख्या में नये रसायन पैदा किये गये हैं। और, कैन्सर पैदा करने में इन रसायनों की प्रमुख भूमिका है। जल्दी और अधिक फसल के लिये बीजों में परिवर्तन, रासायनिक खाद, कीटनाशक, खरपतवारनाशक कैन्सर तथा अन्य नये रोगों को गाँव-गाँव तक फैला रहे हैं।

●शरीर स्वयं समर्थ है अपनी मरम्मत करने में। छिल जाने, कटने, चोट लगने का उपचार करना शरीर की सामान्य क्रिया है। लेकिन, लेकिन गति, तीव्रतर गति के संग जो चोट जुड़ी हैं उनके सम्मुख शरीर लाचार-सा हो जाता है। शरीर के पास स्वयं को ठीक करने के लिये समय भी नहीं छोड़ा जाता। पाँच हजार वर्ष में विश्व-भर के सब युद्धों में जितने लोग मरे हैं उन से ज्यादा इन सौ वर्षों में सड़कों पर वाहनों की चपेट में मरे हैं। भारत की ही बात करें तो 1948, 1962, 1965, 1971, 1999 के युद्धों और 60 वर्ष की सब ''आतंकवादी'' कार्रवाइयों में जितने लोग मरे हैं उन से ज्यादा लोग पिछले वर्ष सड़क ''दुर्घटनाओं'' में मरे। भारत सरकार के क्षेत्र में 2008 में सड़कों-वाहनों ने एक लाख की जान ली, दस लाख लोग अपंग किये, चालीस लाख लोग कुछ समय के लिये नाकारा किये। परन्तु कार्यस्थलों (ड्राइवर वाले से विलग) को देखते हैं तो सड़कें भी कम लहू बहाती नजर आती हैं। गति द्वारा कार्यस्थलों पर हत्या करना, घायल करना, बीमार करना के आँकड़े छिपाये जाते हैं, बहुत ज्यादा घटा कर बताये जाते हैं। कृषि क्षेत्र में गति का बढना, थ्रैशर-ट्रैक्टर-ट्युबवैल-बिजली स्वयं में एक गाथा लिये हैं, तांडव की गाथा लिये हैं।

फैक्ट्री रिपोर्ट

फ्रेन्ज ऑटो श्रमिक : ''प्लॉट 5 सैक्टर-24, फरीदाबाद स्थित फैक्ट्री में अभी काम कम है इसलिये सुबह 8 से रात 8 की शिफ्ट है – काम बढने पर लगातार 36 घण्टे भी काम। ओवर टाइम सिंगल रेट से। इस समय कम्पनी द्वारा भर्ती 50 हैं और 50 ही ठेकेदारों के जरिये रखे हैं, काम बढने पर 200 मजदूर हो जाते हैं। ठेकेदारों के जरिये रखों की ई.एस.आई. व पी.एफ. नहीं और कम्पनी द्वारा स्वयं भर्ती में 15 की ही। हैल्परों की तनखा 2600-2800 रुपये। ई.एस.आई. व पी.एफ. वाले हैल्परों से हस्ताक्षर 3840 पर करवाते हैं जबकि देते 2800 रुपये तनखा हैं और इन 2800 में से 570 रुपये ई.एस.आई. व पी.एफ. के काटते हैं। जून की तनखा 17 जुलाई को दी। यहाँ ***जे सी बी, ई सी ई एल, एस्कोर्ट्स आर ई डी*** के पुर्जो के संग-संग सीमेन्ट प्लान्टों के पुर्जे ***ई एल इंडिया, बी एच पी, सैंडिवक, मैट्सो*** के लिये बनते हैं। कम्पनी स्वयं ***पोलो क्रेन*** नाम से ओवरहैड क्रेन बनाती है। शीट मैटल का काम है पर दस्ताने बहुत मुश्किल से देते हैं। वैल्डिंग, ग्राइन्डर, कटर का काम ज्यादा है, आँख में कचरा पड़ता रहता है पर फैक्ट्री में कोई आई ड्रॉप नहीं। चोट लगने पर डेटॉल तक नहीं। पावर प्रेस पर हाथ कटने पर प्रायवेट में उपचार करवा कर निकाल देते हैं। फैक्ट्री में पीने का पानी खराब। शौचालय गन्दे।''

चिन्टू क्रियेशन वरकर : ''295 उद्योग विहार फेज-2, गुड़गाँव स्थित फैक्ट्री में हम 500 मजदूरों से रोज सुबह 8 से रात 2 बजे तक काम करवाया जा रहा है – रविवार को सुबह 8 से रात 8 तक। अत्याधिक काम के कारण बीमार बहुत होते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। दो मिनट की देरी पर दो घण्टे के पैसे काट लेते हैं। छोड़ने पर 20-25 दिन के पैसे रोक लेते हैं – चक्कर कटवा कर कुछ पैसे देते हैं और कुछ को 'नुकसान किया' के नाम पर काट लेते हैं। कल, 20 जुलाई को एक महिला मजदूर अपने एक महीने के पैसे लेने आई तो 'पीस काट दिया' कह कर पैसे नहीं दिये और परसनल विभाग में थप्पड़ भी मारे। हैल्परों को देते 3600 रुपये हैं जबकि दिखाते 4200 हैं – टोकने पर कहते हैं कि करना है तो करो वर्ना जाओ। सिलाई कारीगर पीस रेट पर हैं और 8 घण्टे में 3000-4000 रुपये पड़ते हैं पर तनखा 7600 रुपये दिखाते हैं। ई.एस.आई. व पी.एफ. 4200 तथा 7600 अनुसार काटते हैं और कहते हैं कि कोई पूछे तो तनखा 4200 व 7600 रुपये बताना।''

वीयरवैल मजदूर : ''बी-134 ओखला फेज-1, दिल्ली स्थित फैक्ट्री में हर रोज सुबह 9 से रात 1 तक जबरन रोकते थे। रात 9 बजे 1 घण्टा भोजन के लिये देते। बड़ा गेट बन्द कर, सख्त तलाशी के बाद छोटे गेट से निकालते। निकलने में 15 मिनट लग जाते। फिर ढाबे तक 15 मिनट लगते और वहाँ अन्य फैक्ट्रियों के मजदूर भी। भीड़ में कभी सब्जी, कभी रोटी का इन्तजार। लौटने में दो-चार मिनट देरी हो ही जाती। प्रवेश के समय फिर सख्ती से तलाशी। देरी के लिये डाँट। ऐसे में निकलते समय मजदूरों के बीच धक्कामुक्की और खटपट रोज की बात। आठ जुलाई को रात 9 बजे एक गार्ड ने लाठी चलाई और ठेकेदार के जरिये रखे 6 गार्ड उसकी सहायता के लिये आये तो सब गार्ड 400 वरकरों से पिटे।

गार्ड पिटें चाहे सिलाई कारीगर पिटें, कम्पनी को उत्पादन से मतलब रहता है इसलिये रात सवा दस से फैक्ट्री में उत्पादन कार्य सामान्य तौर पर आरम्भ। हाँ, रात 12 बजे कम्पनी ने पुलिस बुलाई और पहले 6 तथा फिर 3 मजदूरों को निशाना बनाया। इस पर 400 वरकरों ने स्वयं को आगे किया तो पुलिस वाले चुपचाप फैक्ट्री से चले गये। बायर की जाँच थी अगले रोज इसलिये कम्पनी ने किसी वरकर का गेट नहीं रोका क्योंकि सब मजदूरों द्वारा काम बन्द कर देने का डर था। सवा सौ स्थाई मजदूर और ढाई सौ कैजुअल वरकर इस मामले में संग-संग थे। कम्पनी दस्तावेजों में ओवर टाइम दिखाती ही नहीं, साँय 5½ छुट्टी दिखाती है। कम्पनी ढाई सौ कैजुअल वरकरों को भी दस्तावेजों में दिखाती ही नहीं। चार सौ मजदूरों के सुबह 9 से रात 1 तक काम करने की जगह कागजों में सवा सौ मजदूरों को सुबह 9 से साँय 5½ तक काम करते दिखाया जाता है। ऐसे में गार्डों की पिटाई से मजदूरों पर ढीली हुई जकड़ की बहाली के लिये कम्पनी द्वारा 3 मजदूरों को पीटने के लिये पुलिस को पैसे देने की बातें..... मजदूरों द्वारा काम बन्द कर देने की चेतावनी। कम्पनी ने 9 जुलाई से रात 9 बजे छुट्टी करनी आरम्भ की और 13 जुलाई तक टोह लेती रही। फिर 14 जुलाई को दो इनचार्ज 4 मजदूरों के साथ थाने गये और राजीनामा हुआ – पुलिस ने मजदूरों से भी रिश्वत ली। चार को निकालेंगे ही की चर्चा और 15 जुलाई से साँय 5½ ड्युटी समाप्त तथा .....

उथल-पुथल

★गोरखपुर के बरगदवा औद्योगिक क्षेत्र स्थित ***अंकुर उद्योग*** के 600 मजदूरों ने अपनी माँगें मनवाने के लिये 15 जून को काम बन्द किया।धागा मिल ***वी.एन. डायर्स एण्ड प्रोसेसर्स*** के 300 मजदूरों ने उन्हीं माँगों के लिये 23 जून को काम बन्द कर दिया। वी.एन. डायर्स की ***कपड़ा मिल*** के 300 मजदूरों ने भी उन्हीं माँगों के लिये 28 जून को काम बन्द किया। तीन कारखानों के मजदूरों के तालमेलों द्वारा पैदा दबाव से मैनेजमेन्टें, श्रम विभाग, प्रशासन कानूनों का पालन करने को तैयार हुये। काम के घण्टे 8 करने, सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन देने, साप्ताहिक छुट्टी तथा अर्जित अवकाश देने आदि पर 13 जुलाई को समझौते के बाद तीन कारखानों में उत्पादन आरम्भ हुआ।

★भटिण्डा में ***गुरु गोविन्द सिंह तेल शोधक कारखाना*** का निर्माण ठेकेदारों के जरिये रखे 15 हजार मजदूर कर रहे हैं। रविवार,28 जून को अत्याधिक गर्मी में कार्य और फिर उपचार में लापरवाही से एक मजदूर की मृत्यु हो गई। मजदूरों का गुस्सा फूट पड़ा। कम्पनी प्रबन्धन और प्रशासन ने चार जिलों की पुलिस और कमाण्डो दस्तों को 15 हजार मजदूरों से निपटने के लिये बुला लिया। कम्पनी ने मृत मजदूर के परिवार को 4½ लाख रुपये भी दिये हैं। (जानकारियाँ 'बिगुल', 69 बाबा का पुरवा, पेपरमिल रोड़, निशातगंज, लखनऊ-226006 के जुलाई 09 अंक से)

★उत्तरांचल के हलद्वानी में ***सुशीला तिवारी अस्पताल*** के 18 दिहाड़ी श्रमिकों ने पक्के किये जाने के लिये मई 09 में कदम उठाने आरम्भ किये। श्रम विभाग और अस्पताल प्रबन्धन मुद्दे को टालते रहे। टालमटोल से तंग आ कर 7 जुलाई को श्रमिकों ने सामुहिक आत्महत्या की धमकी दी। सरकारी अधिकारी 10 जुलाई को फिर आश्वासन दे कर धरना स्थल से मजदूरों को उठाने लगे तो 18 अस्पताल श्रमिकों ने जहर खा लिया।

★उत्तर प्रदेश के कानपुर में ***एल एम एल स्कूटर*** फैक्ट्री में दो वर्ष से जारी तालाबन्दी तथा ***जे के*** व अन्य कारखानों के मजदूर श्रम कार्यालय में तारीख पर तारीख भुगतते रहे हैं। एक हजार मजदूर 15 जुलाई को श्रम कार्यालय के मुख्य द्वार पर एकत्र हुये तो श्रम आयुक्त दूसरे द्वार से खिसकने लगा। मजदूरों का गुस्सा बड़े साहब तथा छोटे साहबों पर फूटा। सरकार ने मजदूरों पर हत्या का प्रयास, लूट आदि की धारायें लगा कर गिरफ्तारियाँ की हैं। (जानकारी 'हमारी सोच', जी-250 लाजपतनगर, साहिबाबाद, गाजियाबाद के जुलाई अंक से)

★दक्षिण कोरिया में प्रमुख वाहन निर्माता ***स्साँगयोंग*** फैक्ट्री पर मजदूरों का कब्जा 22 जुलाई को भी जारी था। नई मैनेजमेन्ट ने 5000 स्थाई मजदूरों में से 3000 की छँटनी की और उनको कैजुअल वरकर के तौर पर रखने की फिराक में थी। आठ सौ मजदूरों ने फैक्ट्री पर कब्जा कर लिया। काफी हिंसा के बाद भी नई मैनेजमेन्ट फैक्ट्री पर नियन्त्रण नहीं कर सकी, बल्कि वहाँ से खदेड़ दी गई। बख्तर बन्द गाड़ियों में सशस्त्र पुलिस हैलिकॉप्टरों की सहायता से मजदूरों को फैक्ट्री से खदेड़ने की कोशिश कर रही है।

★कनाडा में मुख्यालय और 154 देशों में गतिविधियों वाली ***नोरटेल*** कम्पनी दिवालिया हो गई है। फ्रान्स में नोरटेल की फैक्ट्री बन्द होने से बेरोजगार हुये मजदूरों ने फैक्ट्री पर 15 जुलाई को कब्जा कर लिया और क्षतिपूर्ति नहीं करने की स्थिति में फैक्ट्री उड़ा देने के लिये कई स्थानों पर गैस सिलेन्डर लगा दिये।

★फ्रान्स में ही दिवालिया हुई वाहनों के पुर्जे बनाती ***न्यू फैबरिस*** फैक्ट्री पर मजदूरों ने 26 जुलाई को कब्जा कर लिया और क्षतिपूर्ति के लिये दबाव डालने के वास्ते फैक्ट्री में गैस सिलेन्डर लगा कर उड़ाने की धमकी दी।

(जानकारी < antoniamautempo@gmx.net > से)

रफ्तार और स्वास्थ्य (2)

जल्दी का आज बोलबाला है। गति, तीव्र गति, तीव्रतर गति का महिमामण्डन सामाजिक पागलपन का स्वरूप ग्रहण कर चुका है। थल, जल, नभ और इन सब के पार अन्तरिक्ष तथा अन्तरिक्ष से भी परे के लिये तीव्र से तीव्रतर वाहनों का निर्माण आज मानवों की प्रमुख गतिविधियों में है। शीघ्र तैयार होती फसलें और पशु-पक्षियों का माँस जल्दी बढाना आम बात बन गये हैं।.... मानव अपने स्वयं के शरीरों की रफ्तार बढाने में जुटे हैं।और, मस्तिष्क की गति, तीव्र गति, तीव्रतर गति ने मुक्ति-मोक्ष का आसन ग्रहण कर लिया है।

प्रकृति के पार जा कर हम गति के उत्पादन में जुट गये हैं। रफ्तार की कई किस्में हैं। हर प्रकार की गति का उत्पादन एक अनन्त तांडव है। रफ्तार बढाना तांडवों की वीभत्सता बढाना लिये है। गति के उत्पादन पर विचार करने की अति आवश्यकता को महसूस करने के लिये स्वास्थ्य पर पड़ते रफ्तार के प्रभावों के कुछ पहलू देखें। यहाँ कुछ बातें मानसिक स्वास्थ्य की।

✶ निर्णय लेना। कई निर्णय लेना। प्रतिदिन अनेक प्रकार के अनेक निर्णय लेना। यह प्रत्येक की आज जीवनचर्या बन गई है। हर क्षेत्र में गति, तीव्रतर गति शीघ्र निर्णय को क्षण के विभाजन (अंग्रेजी में स्प्लिट सैकेण्ड) के चरण में ले आई है। और गति बढ रही है....

अनगिनत चीजें आपस में जुड़ी हैं। और, गतिशील हैं। किसी भी समय एक अत्यन्त अस्थिर संतुलन बनता है। ऐसे में व्यक्ति हो चाहे संस्थान, निर्णय तुक्के की श्रेणी में आते हैं। इसलिये स्पष्टीकरणों की भरमार रहती है।

यह गति, तीव्रतर गति द्वारा रची-बुनी सामाजिक हालात हैं कि प्रत्येक को प्रतिदिन हजारों निर्णय करने होते हैं। ऐसे में आशा और निराशा का स्थान अति आशा और अति निराशा ने ले लिया है। कभी-कभार की बजाय प्रत्येक एक ही दिन में कई-कई बार इन दो अतियों के बीच झूलता-झूलती है। एक तरफ '' मैं ही बेवकूफ हूँ '' तो दूसरी तरफ '' मेरे सिवा सब पागल हैं '' दो छोर बने हैं।

गति, तीव्रतर गति ने सूचनाओं-जानकारियों की बाढ ला दी है। व्यक्ति को कुछ का ही पता रहता है, कुछ को ही ध्यान में रख सकती है। और फिर आंकलन, तुलनात्मक आंकलन, महत्व के प्रश्न। जल्दी-जल्दी हजारों फैसले रोज लेने की मजबूरियाँ ही हैं कि ''गलती किस से नहीं होती?'' आज इतना प्रचलित वाक्य है। परन्तु बात इतनी ही नहीं है।

निर्णय-दर-निर्णय। तुक्के-दर-तुक्के। गलतियाँ-दर-गलतियाँ। आज की यह अनन्त प्रोसेस प्रत्येक को प्रतिदिन अनेक भूमिकाओं में धकेलती है। रोज ही हम अनेक मुखौटे लगाने को अभिशप्त हैं। ऐसे में प्रत्येक व्यक्ति अनेक व्यक्तित्वों का अखाड़ा बना है। एक ''मैं'' में पचासों ''मैं'' हैं। और, ज्ञानी लोग व्यक्तित्व में एक विभाजन को मनोरोग कहते हैं।

✶ बच्चे जल्दी बड़े हों। यानी, वर्तमान में गति की तीव्रता के अनुरूप बच्चे स्वयं को शीघ्र ढालें। विद्यालय। मस्तिष्क की गति बढायें। परिणाम है दस वर्ष के बच्चों में भी चिड़चिड़ापन, सुस्ती व उदासी .....आत्महत्या तक।

मानसिक रोगों ने महामारी का रूप ले लिया है। ऐसे में मनोचिकित्सकों में एक प्रवृति यह भी उभरी है कि 15 प्रतिशत मानसिक रोगों को मनोरोग मानना ही बन्द करो।

भारत में राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य प्रोग्राम का आंकलन है कि भारत में 10-20 प्रतिशत आबादी मानसिक रोगी है। चिकित्सकों के अनुसार भारत में 50-60 प्रतिशत लोग मनोरोगी हैं। स्वयं डॉक्टरों में आधे से अधिक रोगी हैं और 6-7 प्रतिशत तो गम्भीर रूप से मनोरोगी हैं। भारत में तीव्रतर गति के व्यापक ताण्डव को अधिक समय नहीं हुआ। यूरोप-अमरीका-आस्ट्रेलिया में गति, तीव्र गति, तीव्रतर गति की उपज ***अकेलापन*** की भयावहता का अन्दाजा इस तथ्य से लगाया जा सकता है कि अन्य विषयों के विशेषज्ञों पर अनेक पाबन्दियाँ लगाती यूरोप-अमरीका-आस्ट्रेलिया की सरकारों ने भारत से मनोचिकित्सकों के लिये दरवाजे पूरे खोल रखे हैं।

✶ अकेलापन। भीड़ में अकेलापन। यह तीव्र से तीव्रतर गति की विशेष फसल है, खास उपज है।

आज काम काजी रिश्तों का बोलबाला है। और, इतनी तेजी के होते हुये भी कामकाजी सम्बन्धों के लिये भी किसी के पास पर्याप्त समय नहीं है। वैसे, यह कहना बनता है कि गति इतने काम पैदा कर देती है – बढा देती है कि समय कम पड़ता है। ऐसे में आमतौर पर ''समय नहीं है'' का रोना कामकाजी रिश्तों के लिये समय कम पड़ने का रोना होता है।

जबकि, कामकाजी रिश्तों से परे वाले सम्बन्ध ही वह सम्बन्ध हैं जो जीवन को रस देते हैं, जीवन्तता प्रदान करते हैं।

कामकाजी रिश्तों में परिचित बनते हैं और इन से परे वाले सम्बन्धों में..... मित्र-दोस्त-फ्रैन्ड बनते हैं (शब्दों के अर्थों में भारी उलट-फेरें हुई हैं और परिचित को मित्र कहना चलन में है फिर भी मजबूरी में यह शब्द पुराने अर्थ में यहाँ प्रयोग किये जा रहे हैं)।

किसी भी सम्बन्ध के लिये समय प्राथमिक आवश्यकता है। आज कामकाजी रिश्ते ही सब समय हड़प रहे हैं। इसलिये परिचित बहुत हैं, दोस्त शायद ही कोई। यह स्थिति मानसिक रोगों का एक आधार तो बनती ही है, यह मनोरोंगों के उपचार को असम्भव भी बना देती है।

★थोड़ा मुड़ कर देखें। डर, गुस्सा, असहायता, जलन, कुंठा, लालच व्यापक थे। परन्तु फिर भी मानसिक रोगों को रोकने, उनका उपचार करने के लिये झाड़-फूंक, मन्दिर-दरगाह-थान के अलावा एक प्रकार की सामाजिकता भी थी। रफ्तार, बढती रफ्तार उसे पूरी तरह निगल गई है अथवा उसका बाजारीकरण कर दिया गया है।

उपमहाद्वीप में इन सौ वर्षों में व्यक्ति की मृत्यु पर उससे सम्बन्धित गतिविधियों का एक महीने से 13 दिन, फिर 3 दिन और अब एक घण्टे की होना। एक महीने की होली 6-8 घण्टे की हो गई है। सावन का महीना दो दिन का बन गया है – तीज का दिन और रक्षाबन्धन का दिन। ब्रज में भी कृष्ण जन्माष्टमी से बलदेव छठ वाला 20 दिन का भादों मास मात्र जन्माष्टमी रह गया है। दुर्गा पूजा, गणेश चतुर्थी, रामनवमी, गरबा, ओणम, बिहू, दिवाली का बाजारीकरण वीभत्स रूप ग्रहण कर चुका है। दादा, नानी, दोस्त, गली-मोहल्ले के रिश्ते अब गायब हो रहे हैं और निजता-प्राइवेसी की माँग मुखर हो रही है।

इसलिये भारत में भी मानसिक रोगों का उपचार एक बहुत बड़ा धन्धा बनने की राह पर है।

★गति की पहली दस्तक आमतौर पर सेना में होती है। गति और दूर-दूर प्रस्थान व निवास स्थाई सेना को मानसिक रोगों के लिये उपजाऊ स्थान बनाते हैं। उपमहाद्वीप की ही बात करें तो पहला पागलखाना 1787 में कोलकाता में खोला गया था। फिर 1794 में चेन्नई में, 1795 में रांची में, 1806 में मुम्बई में, 1858 में आगरा में, 1862 में बरेली में पागलखाने बनाये गये। यह सब पागलखाने छावनियों के निकट बनाये गये थे। पहले इन पागलखानों में यूरोप में जन्मे मनोरोगी सैनिकों को रखा जाता था और फिर मानसिक रोग से ग्रस्त भारत में जन्मे सिपाहियों को भी। मनोरोगियों को पागलखानों में बन्द करने का कानून 1858 में बना और यह जेल अधीक्षकों के तहत थे – 1920 में इनके नाम में चिकित्सालय शब्द लाया गया और यह डॉक्टरों के तहत हुये।

सेनाओं के बाद गति का अगला अखाड़ा आमतौर पर उत्पादन क्षेत्र बनता है। डेढ-दो सौ वर्ष पूर्व की गति तथा परिजनों से दूर निवास सैनिकों को मनोरोगी बना रहे थे। आज मजदूर उससे बहुत अधिक गति तथा परिजनों से दूर बदतर निवास स्थानों पर रहते व कार्य करते हैं। मजदूरों के मानसिक स्वास्थ्य के बारे में..... क्या कहें ?

और, बूढों में मानसिक रोगों की स्थिति.... यह बात ही मत करो!

फैक्ट्री रिपोर्ट

फरीदाबाद में :

अरिहन्त मैक इन्डस्ट्रीज मजदूर : ''15 ए इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में हम मजदूरों के पीने के लिये खारा पानी रहता था। तीसरी मंजिल पर दफ्तर में पीने जाते तो मना कर देते। जून के आरम्भ में एक दिन हम सब ने तय किया कि खारा पानी नहीं पीयेंगे और काम बन्द कर फैक्ट्री से निकलने लगे..... फोरमैन ने रोका और तब से टैंकर का मीठा पानी घड़ों में भरते हैं। हैल्परों की तनखा 2300-2400, ऑपरेटरों की 3000, डाई सैटर की 4000 और डाई मेकर की 5000 रुपये थी। जनवरी से साहब कह रहे थे कि बढायेंगे-बढायेगें। जुलाई की तनखा 13 अगस्त को देने लगे तो किसी मजदूर ने नहीं ली और तब सब के 500-500 रुपये बढाये। अरिहन्त मैक के टूल रूम में 12 घण्टे की एक शिफ्ट है और बाकी विभागों में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट। महीने में 10-12 बार तो लगातार 36 घण्टे ड्युटी। ओवर टाइम के महीने में 340 घण्टे तक हो जाते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। साप्ताहिक छुट्टी नहीं – रविवार को सुबह 6 से दोपहर 2½ तक ड्युटी के दुगुने पैसे देते हैं पर नहीं जाओ तो कोई पैसे नहीं। कम्पनी 12 घण्टे में 2 समोसे देती है और 36 घण्टे लगातार पर 20 रुपये रोटी के। वाहनों के शॉकर, एक्सल, स्प्रिंग, हुडलॉक 200 मजदूर बनाते हैं पर ई.एस.आई. व पी.एफ. 7-8 की ही हैं। पावर प्रेस 20 हैं – रोज 12 घण्टे, लगातार 36 घण्टे चलातै हैं, हैल्परों से भी चलवाते हैं। हाथ कटने पर पीछे की तारीख से ई.एस.आई. करवाते हैं। प्रतिदिन 2-3 गाड़ी माल ***जय भारत मारुति*** जाता है। ***इण्डिया फोर्ज*** और ***अरिहन्त इंजिनियरिंग*** को भी माल जाता है। पीस खराब होने पर महीने में 200-500 रुपये काट लेते हैं। मात्र एक शौचालय है, गन्दा रहता है, लाइन लग जाती है।''

ध्रुव ग्लोबल श्रमिक : '' 14 मील पत्थर, मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में ***नोर्थ स्टोर्म, न्यू यार्क, कैजुअल मेल, बासप्रो, सी ए जी*** के परिधान तैयार किये जाते

हैं। रविवार को भी 12-12 घण्टे ड्युटी, जन्माष्टमी की भी छुट्टी नहीं।ओवर टाइम सिंगल रेट से। ठेकेदारों के जरिये रखे हैल्परों की तनखा 1800-2200 रुपये तथा सिलाई कारीगर पीस रेट पर और इन 600-700 मजदूरों की ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। स्थाई मजदूर 800 के करीब हैं और इन्हें 8 की बजाय 10 घण्टे ड्युटी पर सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन देते हैं। स्टाफ की तनखा मार्च में बढानी थी पर जुलाई तक नहीं बढाई है। आयकर विभाग ने 20 अगस्त को फैक्ट्री पर छापा मारा.....''

न्यू रणधीर प्रेस टूल्स कामगार : ''प्लॉट 365 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में 100 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में ***महिन्द्रा ट्रैक्टर*** के पुर्जे बनाते हैं। ओवर टाइम सिंगल रेट से और जून व जुलाई के पैसे आज 13 अगस्त तक नहीं दिये हैं। तनखा भी देरी से देते हैं। पाँच-सात पुराने वरकरों की तनखा 4000-5000 रुपये है और इन्हीं की ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं। हैल्परों की तनखा 3000 और ऑपरेटरों की 3500 रुपये, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। भोजन अवकाश का समय तय नहीं। पीने का पानी ठीक नहीं, बीमार पड़ते हैं। पुरुष मजदूरों के लिये शौचालय एक ही है, बहुत गन्दा रहता है। महिला मजदूरों के लिये शौचालय है पर ताला बन्द रहता है और उन्हें फैक्ट्री की बगल में रेलवे लाइन पर जाना पड़ता है। एक कप चाय भी 12 घण्टे में नहीं देते। साहब गाली देते हैं।''

जी एल ऑटो पार्ट्स श्रमिक : ''14 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में 700 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में ***होण्डा, यामाहा*** दुपहिया वाहनों के पुर्जे बनाते हैं। रविवार को भी काम। महिला व पुरुष हैल्परों की तनखा 2000-2200 और ऑपरेटरों की 2700-3300 रुपये। कुछ को चुपचाप 200-300 रुपये अलग से देते हैं और यहाँ 14-15 वर्ष के लड़के भी काम करते हैं। सीनियर वरकर काम करवाते हैं और कम्पनी ने लाखों रुपये कर्ज दे कर उनकी वर्कशॉप खुलवा रखी हैं जहाँ कम्पनी का काम होता है। ई.एस.आई. व पी.एफ. 700 में 75 के ही हैं। बारह घण्टे बाद जबरन रोक लेते हैं, गाली देते हैं।ओवर टाइम सिंगल रेट से। तनखा हर महीने देरी से, 15 तारीख के बाद।''

गौरव इन्टरनेशनल मजदूर : ''198 उद्योग विहार फेज-1, गुड़गाँव स्थित फैक्ट्री में हर रोज सुबह 9 से रात 11 की ड्युटी – धागा कटिंग और पैकिंग विभागों में सुबह 8 से रात 11 तक। गेट बन्द कर देते हैं। महिला मजदूरों को इससे भारी परेशानी होती है। फैक्ट्री में 600 महिला तथा 1000 पुरुष मजदूर हैं – पुरुषों को रात 2 बजे तक रोक लेते हैं। कम्पनी 14-17 घण्टे में एक कप चाय भी नहीं देती। महिला मजदूरों को भी बहुत गाली देते हैं। जाँच वाले 28 जुलाई को आये तो परसनल वाले बोले कि महीने में .....

परमाणु बिजलीघर

[*परमाणु बिजलीघर एटम बमों से अधिक खतरनाक व प्रदूषणकारी हैं पर प्रचार तन्त्र इन्हें ऊर्जा के सुरक्षित व बिना प्रदूषण वाले स्रोत प्रचारित करता है। इस सन्दर्भ में हम 'न्यूज एण्ड लैटर्स' के अगस्त-सितम्बर 09 अंक से कुछ जानकारियाँ यहाँ दे रहे हैं।* ई-मेल < arise@ newsandletters.org >]

1952 से 2000 के दौरान विश्व-भर में परमाणु बिजलीघरों में 34 तबाही मचाने वाले एक्सीडेन्ट हुये। अमरीका के पेनसिलवेनिया प्रान्त में थ्री माइल आइलैण्ड परमाणु बिजलीघर 1979 में महाविनाश के कगार पर पहुँच गया था। रूस में 1986 में चेरनोबिल परमाणु बिजलीघर ने महाविनाश किया। रूस, यूक्रेन और बेलारूस में एक लाख वर्ग मील क्षेत्र में बहुत भारी तबाही, कई पीढियों तक तबाही.....

प्रत्यक्ष अनुभवों ने ठिठका दिया। नये परमाणु बिजलीघर बनाना थम गया। विश्व-भर में परमाणु बिजली उद्योग का विस्तार रुक गया। लेकिन सन् 2001 से अमरीका सरकार ने अमरीका में तथा विश्व के अन्य क्षेत्रों में परमाणु बिजलीघरों का निर्माण पुनः आरम्भ करने की वकालत शुरू की हुई है।

अमरीका सरकार के पास 26 परमाणु बिजलीघर बनाने के लिये 17 आवेदन पहुँचे हैं। अमरीका सरकार की विदेश मन्त्री ने हाल ही की यात्रा में भारत में दो परमाणु बिजलीघर बनाने के लिये भारत सरकार से सौदा किया। ईंधन, यूरेनियम के खनन के लिये भी कई आवेदन अमरीका सरकार को मिले हैं। परमाणु बिजलीघरों का निर्माण करने वाली कम्पनियों को 93 हजार 5 सौ करोड़ रुपये कर्ज दिलाने के लिये अमरीका सरकार जमानती बनेगी।

यूरेनियम के खनन की कोई सुरक्षित प्रणाली नहीं है। यूरेनियम खदानों के क्षेत्र में पैदा होने वाले शिशु जन्म से विकार-ग्रस्त होते हैं। और, परमाणु बिजलीघरों का कचरा..... एक हजार मेगावाट का परमाणु बिजलीघर हर वर्ष 250 किलोग्राम प्लूटोनियम पैदा करता है – 5 किलो प्लूटोनियम एक एटम बम के लिये पर्याप्त है। प्लूटोनियम हजारों वर्ष तक जीवन के लिये घातक रहता है।

अमरीका में नागरिक-समूह यूरेनियम के खनन और परमाणु बिजलीघरों के निर्माण की सरकारी नीति का विरोध कर रहे हैं।

उँगली निशान, चित्र, आँख की पुतली, डी एन ए

पहचान-पत्र। फोटो-युक्त पहचान-पत्र। कागज वालों के स्थान पर इलेक्ट्रोनिक पहचान-पत्र। प्रत्येक के पास कोई-न-कोई अथवा अनेक पहचान-पत्र। पहचानों के कम्प्युटरों में भण्डार और इन्टरनेट के जरिये कहीं भी, कभी भी किसी की पहचान को पहुँचाना-देखना-जाँचना-परखना के प्रयास। आज यह सामान्य बात है, आम बात हो रही है। चिन्हित करते पहचान-पत्र का सुविधा और सशक्तिकरण का वाहक बनना-बनाना आज पीड़ा के पहाड़ों तथा असहायता के सागरों से भयभीत हो कर आँख मूँदना लगता है। हालात ऐसे बन गये हैं कि प्रत्येक व्यक्ति को अपराधी की श्रेणी में धकेल दिया गया है। पर. ..... पर हम असहाय नहीं हैं !

● चिन्हित करने की आवश्यकता ''अपने'' तथा ''अन्य'' के उदय से उपजी। समुदायों के बीच प्रेम, आदर, तालमेल के स्थान पर उत्पन्न हुई होड़ व शत्रुता ने पहचान को आधार प्रदान किया। चिन्हित करना ने आज एक महामारी का रूप धारण कर लिया है।

– चिन्हित करना, जानना, ज्ञान को नियन्त्रण के लिये अनिवार्य आवश्यकता माना गया है। और, दमन-शोषण बिना नियन्त्रण के सम्भव नहीं लगते। बढते दमन-शोषण के लिये कसता नियन्त्रण तथा चिन्हित करने में सटीकता-तीव्रता स्वयंसिद्ध लगते हैं।

– उथल-पुथल। विश्व-भर में उथल-पुथल। हर जगह और हर समय उथल-पुथल। अनेक प्रकार के समूहों में, प्रत्येक व्यक्ति में उथल-पुथल। इस वास्तविकता ने हर स्वयं सिद्ध को सवालों के घेरों में खड़ा कर दिया है।

● आज मण्डी और मुद्रा का बोलबाला है। आदि से अन्त तक झूठ-फरेब से पटी मण्डी-मुद्रा सामाजिक सम्बन्धों का एक जटिल ताना-बाना है। सामाजिक सम्बन्ध हैं इसलिये व्यक्तियों के माध्यम से ही क्रियाशील होते हैं। व्यक्ति के जरिये क्रियाशील पर व्यक्ति पर भरोसा नहीं – यह मण्डी और मुद्रा के चरित्र में है।

– निजी और परिवार के श्रम द्वारा मण्डी के लिये उत्पादन का लोप नहीं हुआ है, गायब नहीं हुआ है। विश्व में आज भी करोड़ों, बल्कि अरबों, दस्तकार और किसान मण्डी के लिये उत्पादन में संलग्न हैं। लेकिन, मजदूर लगा कर मण्डी के लिये उत्पादन का दबदबा है।

– मालिक। इकन्नी-दुअन्नी वाला हिस्सेदार। शेयर होल्डर डायरेक्टर। पर बात यहीं नहीं रुकी। कर्ज आज कम्पनियों में लगे पैसों का मुख्य स्रोत है। सरकारी कारखाने।

– मण्डी-मुद्रा के जाल में आज लगभग सभी मनुष्य समेट लिये गये हैं, बाँध लिये गये हैं। मण्डी-मुद्रा के तानों-बानों में चेहरों की भरमार है पर प्रत्येक चेहरा चेहरा विहीन हो गया है। व्यक्ति के अब चेहरा नहीं रहा।

– राजा शक से परे था। मालिक भी शक के

दायरे से बाहर थे। पर चेहराविहीनता के इस दौर में हर व्यक्ति शक के घेरे में है..... मेहनतकशों पर अविश्वास। मजदूरों पर शक। पुलिसकर्मी, सैनिक, गुप्तचर पर भी अविश्वास। यह आम बात रही है पर आज मण्डी-मुद्रा के कथित प्रतिनिधि भी शक के घेरे में रहते हैं। अब पुलिस-सेना-प्रशासन का प्रत्येक अधिकारी, न्यायाधीश, मन्त्री-प्रधान मन्त्री-राष्ट्रपति, कम्पनी चेयरमैन-डायरेक्टर-सी ई ओ सम्भावित अपराधी की श्रेणी में हैं। आज व्यवस्था के कथित संचालकों को व्यवस्था की जेलों में बन्द किया जाना अजूबा नहीं रहा है।

— आज किसी व्यक्ति पर कोई भरोसा नहीं है इसलिये नियमों-उपनियमों के पहाड़ बने हैं। और, निगरानी तन्त्रों की भरमार होते हुये भी व्यक्तियों पर निगाह रखने के लिये कैमरे, ध्वनि पकड़ कर रखने वाले यन्त्र यत्र-तत्र-सर्वत्र लग गये हैं।

झूठ और फरेब से सराबोर मण्डी और मुद्रा ''सत्य'' के बिना, ''कुछ तो सत्य रहे'' के बिना ठप्प हो जायेंगी।

- आज पुराने ''अपने'' तेजी से टूट रहे हैं तो नित नये ''अपने'' का सृजन भी व्यापक स्तर पर हो रहा है। और, टूट रहे पुराने ''अन्य'' को बचाये रखने तथा नये-नये ''अन्य'' की रचना के लिये सत्ता-तन्त्र बहुत पापड़ बेल रहे हैं।

— यह किसी व्यक्ति अथवा गुट की दिमागी खुराफात नहीं थी (और हो भी तो क्या ?) कि मानव योनि में पीड़ा के वह अंकुर फूटे जो आज वटवृक्ष बन गये हैं। हमारे पुरखों ने पीड़ा से पार पाने के लिये अनेकानेक प्रयास किये। कितने ही पन्थ और मत-मतान्तर हमारी विरासत में हैं।

— स्वयं को दोषी ठहराना विलाप में ले गया, आत्म-उत्पीडन में ले गया। दूसरों को, ''अन्य'' को दोष देने ने टकराओं को उत्पन्न कर पीड़ा को बढाया, पीड़ा की प्रक्रियाओं पर अधिक पर्दे डाले।

— पुराने ''अपने'' की कमियाँ दूर करने के लिये नये ''अपने'' बनाये। जिन्हें ''अन्य'' करार दिया था उन्हें ''अपने'' बनाया। प्रयास अपनी सीमायें उजागर कर नये प्रयास के लिये प्रस्थान-बिन्दू प्रदान करते हैं। ''अपने'' का विस्तार और ''अन्य'' का सिकुड़ना नये समुदायों की पूर्ववेला लगते हैं।

- सब को अपराधी, सम्भावित अपराधी की श्रेणी में खड़ा करना सरकारों की बची-खुची बुनियाद को पाटना है। प्रत्येक को चिन्हित करने की आवश्यकता, हर एक की कम्प्युटरों में जमा बायोमैट्रिक पहचान सत्ता-तन्त्र की शक्ति की नहीं बल्कि लड़खड़ाहट की अभिव्यक्ति है।

कर्मचारी राज्य बीमा निगम (ई.एस.आई.) ने पहला कार्ड भारत सरकार में प्रथम प्रधान मन्त्री को दिया था। अब चित्र, उँगलियों की छाप, आँख की पुतलियों तथा डी एन ए युक्त पहला पहचान-पत्र भारत सरकार में राष्ट्रपति को दिये जाने की सम्भावना है। हास्यास्पद से परे जा कर इसे देखने की आवश्यकता लगती है। त्रासदी से बाहर निकलना है।■

गोरखपुर और गुड़गाँव : कुछ प्रश्न

प्रश्नों को स्पष्ट करने के प्रयास में यहाँ कारखानों की, फैक्ट्रियों की ही बात करेंगे। फरीदाबाद, ओखला (दिल्ली), गुड़गाँव में फैक्ट्रियों में काम करते 70-75 प्रतिशत मजदूर ''अदृश्य'' हैं। कारखानों में काम कर रहे तीन चौथाई मजदूर कम्पनियों तथा सरकार के दस्तावेजों के अनुसार फैक्ट्रियों में होते ही नहीं। ''ई.एस.आई. नहीं'' का अर्थ यह है। अस्सी-पिचासी प्रतिशत फैक्ट्री मजदूरों को दिल्ली व हरियाणा सरकारों द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन नहीं दिये जाते। फैक्ट्रियों में मजदूरों द्वारा 12 घण्टे प्रतिदिन कार्य करना सामान्य है। और, 98-99 % ''अतिरिक्त समय'' उर्फ ओवर टाइम दिखाया नहीं जाता तथा भुगतान दुगुनी दर की बजाय सिंगल रेट से किया जाता है। भारत सरकार के नियन्त्रण वाले अन्य क्षेत्रों में स्थिति उपरोक्त से भिन्न नहीं है। यहाँ 15 अगस्त 1947 को फैक्ट्री मजदूरों के निवास का प्रबन्ध करने से सरकार स्वतन्त्र हुई।

★ ***रीको ऑटो इन्डस्ट्रीज***, 38 किलोमीटर दिल्ली-जयपुर राष्ट्रीय राजमार्ग, गुड़गाँव स्थित फैक्ट्री के एक स्थाई मजदूर से बातचीत के आधार पर : बड़ी फैक्ट्री है। लोहे तथा अल्युमिनियम की ढलाई के बाद मशीनिंग द्वारा वाहनों के अनेक पुर्जे बनते हैं। लुधियाना, धारूहेड़ा, मानेसर में भी कम्पनी की फैक्ट्रियाँ हैं। रीको ऑटो, कॉन्टिनेन्टल रीको, मैग्ना रीको, एफ सी सी रीको..... में हीरो होण्डा, मारुति सुजुकी, होण्डा, फोर्ड, जनरल मोटर आदि का काम होता है। खड़े-खड़े काम और 8½ घण्टे ड्युटी के बाद जबरन रोक लेते हैं। साप्ताहिक छुट्टी के दिन भी ए-शिफ्ट वालों की जबरन ड्युटी। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। निर्धारित उत्पादन बढाते रहते हैं और पूरा नहीं करने पर रोज चिक-चिक से दुखी करते हैं। तनखा 5500 बताते हैं तो देते 4200 हैं। बेसिक बहुत कम और भाँति-भाँति के भत्ते। एल टी ए तथा बोनस के पैसे हर महीने तनखा से काट कर वर्ष में देते हैं। कैन्टीन में अधिक पैसों में घटिया भोजन। यातायात का प्रबन्ध नहीं। चक्कर काट कर थक जाते हैं, स्थाई मजदूरों में भी बहुतों को ई.एस.आई. कार्ड नहीं देते। ऐसे में स्थाई मजदूर नौकरी छोड़ते रहते हैं, नये स्थाई होते रहते हैं – आई टी आई और बी. एस सी./एम.एस सी. को ट्रेनी रखते हैं। स्थाई मजदूर दो-ढाई हजार। तीन ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूर भी इतने होंगे, उनके बारे में पता नहीं..... परेशानियों से पार पाने के लिये स्थाई मजदूरों ने एक-एक हजार रुपये दिये, बीस लाख रुपये एकत्र किये और एक यूनियन से जुड़े। यूनियन का बड़ा नेता मुख्य मन्त्री-प्रधान मन्त्री से बात करता है। अगस्त से हलचलें बढी। कम्पनी ने 21 सितम्बर को 16 स्थाई मजदूर निलम्बित किये तो कोई स्थाई मजदूर अन्दर नहीं गया..... ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूर भी बाहर रहे। जोश। भोजन पकाना, फैक्ट्री गेटों पर बैठना, भाषण देने आते नेता। कम्पनी द्वारा नई भर्ती, उत्पादन जारी, माल का आना-जाना जारी। धारा 144, गेटों से 50 मीटर दूर, पुलिस टैन्ट-दरी ले गई। गिरफ्तारी और जमानत। सनबीम और रीको फैक्ट्रियों में यूनियन के समर्थन में कई यूनियनों द्वारा मिल कर 25 सितम्बर को बड़ी सभा। कम्पनी की अन्य फैक्ट्रियों में सामान्य उत्पादन। बीतते समय और दिवाली के कारण फैक्ट्री के बाहर कम मजदूर – 18 अक्टूबर को कम्पनी ने हमला करवाया जिसमें एक मजदूर की मृत्यु हो गई और कई घायल हुये। यूनियनों द्वारा 20 अक्टूबर को 60 फैक्ट्रियों में हड़ताल, 80-90 हजार मजदूरों ने काम नहीं किया। तीन रोज फैक्ट्री में काम बन्द रहा, एक साहब की पिटाई। नेताओं ने राष्ट्रीय राजमार्ग बन्द नहीं करने दिया। कम्पनी ने मृत मजदूर के परिवार को 5-10 लाख रुपये दिये। हत्या के मामले में कोई गिरफ्तारी नहीं। मुख्य मन्त्री ने श्रम विभाग के जरिये मैनेजमेन्ट और यूनियन के बीच समझौता वार्तायें 22 अक्टूबर से आरम्भ करवाई। कम्पनी द्वारा 23 अक्टूबर से नये लोगों के जरिये फैक्ट्री में पुनः उत्पादन आरम्भ। वार्तायें जारी हैं। नेता सब-कुछ अपने तक ही रख रहे हैं, इस बार मजदूरों को कुछ बता नहीं रहे क्योंकि.....1998 में यूनियन बनाने की कोशिश हुई थी तब नेता बिक गया था। माँग-पत्र में क्या है, शर्तें क्या हैं हमें पता नहीं..... फैक्ट्री में उत्पादन जारी है। कम्पनी पर दबाव कम होता जा रहा है। वार्तायें जारी हैं। ठेकेदारों के जरिये रखे इधर-उधर हो गये, हम स्थाई मजदूर कहाँ जायें ? हताशा, भरे बैठे हैं, भड़के हुये हैं, इस हफ्ते कुछ न कुछ..... यूनियन 2 नवम्बर से क्रमिक भूख हड़ताल करवा रही है।

★ पूर्वी उत्तर प्रदेश में ***गोरखपुर*** के बरगदवा औद्योगिक क्षेत्र में 15 जून को अंकुर उद्योग के 600 मजदूरों ने सरकार

द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन आदि के लिए काम बन्द किया। इसीलिये एक अन्य फैक्ट्री वी एन डायर्स के 300 मजदूरों ने 23 जून को तथा वी एन कपड़ा मिल के 300 मजदूरों ने 28 जून को काम बन्द किया। समझौते के बाद 13 जुलाई को इन तीन कारखानों में काम आरम्भ हुआ। क्षेत्र में 'संयुक्त मजदूर अधिकार संघर्ष मोर्चा' बना। मॉडर्न लेमिनेटर्स और मॉडर्न पैकेजिंग के एक हजार मजदूरों ने 3 अगस्त को सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन, ई.एस.आई. आदि की माँग श्रम विभाग में की। दस दौर की वार्तायें – 21 अगस्त की वार्ता के बाद रात को कम्पनी ने मजदूरों के लिये गेट बन्द कर दिये। मजदूर गेट पर। रात 10 बजे शिफ्ट छूटने पर अन्य फैक्ट्रियों के मजदूर भी वहाँ एकत्र होते। कचहरी परिसर में 11 सितम्बर को सैंकड़ों मजदूरों ने डेरा डाल कर भोजन बनाना आरम्भ किया। प्रशासन में हलचल। लिखित समझौते का आश्वासन। श्रम उपायुक्त के यहाँ मैनेजमेन्ट द्वारा न्यूनतम वेतन देने से साफ इनकार और ''गैरकानूनी हड़ताल'' बताती आई कम्पनी ने 13 सितम्बर को तालाबन्दी की सूचना टाँगी। अनेक फैक्ट्रियों के मजदूरों द्वारा 14 सितम्बर को प्रदर्शन कर कानून की किताबें जलाना। दस दिन का आश्वासन। निर्धारित दिन, 23 सितम्बर को वार्ता के लिये प्रशासन तथा कम्पनी उपस्थित नहीं हुये..... सैंकड़ों मजदूर पाँच मील पैदल चल कर जिलाधिकारी कार्यालय पर भोजन बनाने की तैयारी करने लगे.... 24 सितम्बर को समझौता। लेकिन...25 सितम्बर को ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों तथा अन्य 18 अधिक सक्रिय मजदूरों को काम पर लेने से इनकार। सब मजदूर गेट रोक कर बैठ गये। पुलिस, सशस्त्र पुलिस। समझौता। फिर पालन नहीं। जिलाधिकारी कार्यालय पर 14 अक्टूबर को अनशन – जबरन हटाया। बातचीत के लिये बुला कर प्रशासन ने 15 अक्टूबर को आन्दोलन में अत्याधिक सक्रिय चार लोगों की पिटाई कर जेल में डाल दिया। चौतरफा विरोध. .... 21 अक्टूबर से गोरखपुर में नागरिक सत्याग्रह की घोषणा। पाँच फैक्ट्रियों में मजदूरों द्वारा 20 अक्टूबर को हड़ताल, अगले दिन दो और फैक्ट्रियों के मजदूर हड़ताल में शामिल। प्रशासन ने 4 गिरफ्तार लोगों को 21 अक्टूबर की रात को रिहा कर दिया. ..... अन्य कोई राह न देख कर मॉडर्न लेमिनेटर्स और मॉडर्न पैकेजिंग के मजदूरों ने सामुहिक इस्तीफे दे दिये हैं और यह दोनों कारखाने नवम्बर-आरम्भ तक बन्द पड़े हैं। विकल्पहीनता. ..... [जानकारियाँ सत्यम, कात्यायनी; 'बिगुल' – 69 बाबा का पुरवा, पेपर मिल रोड़, निशातगंज, लखनऊ – 226006; संयुक्त मजदूर अधिकार संघर्ष मोर्चा, एल आई जी –2, 414 विकास नगर, बरगदवा, गोरखपुर]

शिल्प-ट्रेड की, शिल्प संघ-ट्रेड यूनियन की संकीर्णता की जानकारी डेढ सौ वर्ष से है। मजदूरों के लिये शिल्प संघों-ट्रेड यूनियनों का नुकसानदायक-खतरनाक बनना आज से नब्बे वर्ष पूर्व व्यवहार में पता चला। ट्रेड की बजाय फैक्ट्री के आधार पर मजदूरों के संगठित होने को एक कारगर विकल्प समझा गया। इन्डस्ट्रीयल यूनियनें बनाई गई। लाइन सिस्टम के आधार पर उत्पादन में भारी वृद्धि के लिये इन्डस्ट्रीयल यूनियनें शीघ्र ही मजदूरों पर नियन्त्रण रखने का एक औजार बनी। यूनियन वाले और बिना यूनियन वाले मजदूरों के बीच वेतन-भत्तों में भारी भेद उत्पन्न हुये। अति अल्प संख्यक यूनियन वाले डर और अकड़ के चक्रव्यूह में फँसे। बहुसँख्यक मजदूरों की स्थिति के बद से बदतर बनने में तीव्रता आई।

ऑटोमेशन और विशेषकर इलेक्ट्रोनिक्स के आगमन ने बहुत कम समय में फैक्ट्री में कार्य करना सीखना सम्भव बनाया। उत्पादन कार्य के लिये आवश्यक मजदूरों की सँख्या में बहुत तेजी से कमी संग-संग आई। विश्व-भर में यूनियनवालों की सँख्या काफी ज्यादा सिकुड़ी।

यहाँ फैक्ट्रियों में आमतौर पर स्थाई मजदूरों को ही यूनियनें सदस्य बनाती हैं। और, इन बीस वर्षों में फैक्ट्रियों में स्थाई मजदूरों की सँख्या शून्य से दस-पन्द्रह प्रतिशत के बीच आ गई है। पुरानी फैक्ट्रियाँ जो बन्द नहीं हुई और जहाँ बहुत ज्यादा छँटनी करने में कम्पनियाँ सफल नहीं हुई वे अपवाद मात्र हैं। आज यहाँ फैक्ट्रियों में अस्सी-नब्बे प्रतिशत मजदूरों का अस्थाई होना – कैजुअल वरकर होना, ठेकेदारों के जरिये रखे होना, वास्तविकता का मुखर पहलू है। किसानों और दस्तकारों की सामाजिक मौत और सामाजिक हत्या करोड़ों को मजदूरों की पाँतों में अधिकाधिक तेजी से धकेल रही हैं। एक बड़ी सँख्या पैसों के लिये कुछ भी करने वालों की बनी है।

गुड़गाँव में इन दस-पन्द्रह वर्षों में तेजी से नई-नई फैक्ट्रियाँ बनी हैं। इन फैक्ट्रियों में युवा मजदूरों की बहुतायत है। कहीं बहुत कम तो कहीं कुछ ज्यादा मजदूर स्थाई हैं। मजदूर होने पर जो पीड़ा होती है वह इन युवा स्थाई मजदूरों में भी उफन रही है। इन उबलते मजदूरों को चोटें मार कर नियन्त्रण में रखने लायक बनाने के लिये स्थापित यूनियनें प्रयासरत हैं।

फैक्ट्रियों में जो अस्सी-नब्बे प्रतिशत मजदूर हैं। जो दो महीने यहाँ तो छह महीने वहाँ काम करते हैं। जिन्हें सरकारों द्वारा निध ारित न्यूनतम वेतन भी नहीं दिये जाते। ऐसे मजदूर इन्डस्ट्रीयल यूनियनों के खाँचों से बाहर हैं..... नई समाज रचना के लिये कई

प्रकार की बेड़ियों से यह मुक्त हैं।

गोरखपुर में नये संगठन के स्वरूपों, नये संघर्ष के तरीकों के सवाल दस्तक दे रहे हैं। गुड़गाँव में होण्डा, सनबीम, रीको ऑटो के चर्चित मामलों में नहीं बल्कि डेल्फी में चार ठेकेदारों के जरिये रखे ढाई हजार मजदूरों द्वारा उठाये कदम; हीरो होण्डा की गुड़गाँव स्थित स्पेयर पार्ट्स फैक्ट्री में ठेकेदारों के जरिये रखे 4500 मजदूरों द्वारा चाणचक्क काम बन्द करना ; होण्डा मोटरसाइकिल एण्ड स्कूटर फैक्ट्री में ठेकेदारों के जरिये रखे तीन हजार मजदूरों द्वारा मैनेजमेन्ट-यूनियन समझौते के खिलाफ काम बन्द करना; ईस्टर्न मेडिकिट में कैजुअल वरकरों द्वारा तनखा में देरी पर काम बन्द करना; ..... नई राहें खोजने-बनाने में मजदूर जुटे हैं। इन हालात में हमारे सामने प्रश्न हैं : क्या-क्या नहीं करें ? क्या-क्या करें ? कैसे करें?

घातक बीज

★भारत सरकार की विशेषज्ञ समिति ने नई प्रवृति के घातक बैंगन बीज को स्वीकृति दे कर जी एम बीज कम्पनियों के लिये राहें खोल दी हैं। लेकिन व्यापक चिन्ता-विरोध को देखते हुये सरकार ने 31 दिसम्बर तक राय-एतराज माँगे हैं।

★अति घातक परमाणु बिजली घरों के लिये आतुर भारत सरकार यूरेनियम के लिये हाथ-पैर मार रही है। इस सन्दर्भ में लोगों के भारी विरोध के बावजूद मेघालय में यूरेनियम के खनन की तैयारी की अनुमति राज्य सरकार ने दे दी है। यूरेनियम और यूरेनियम के कचरे के वर्तमान तथा भविष्य में घातक प्रभावों को जानते खासी छात्रों ने व्यापक विरोध आरम्भ कर दिया है।

★गुजरात में भावनगर जिले में परमाणु बिजलीघर बनाने का प्रशासन स्वागत कर रहा है..... और गाँवों के लोगों ने बेदखली, हवा-पानी-मिट्टी जहरीली कर दिये जाने, एटम बमों के फटने जैसे खतरों के दृष्टिगत परमाणु बिजलीघर लगाने का विरोध आरम्भ कर दिया है।

★हरियाणा सरकार फतेहाबाद जिले में परमाणु बिजलीघर लगाने की स्वीकृति को बड़ी सफलता प्रचारित कर रही है... जबकि चार गाँवों के लोगों ने स्वीकृति से पहले से, चर्चा चली तब से वहाँ परमाणु बिजलीघर का विरोध शुरू किया हुआ है।

★जयपुर में तेल में लगी आग..... ग्यारह भण्डार स्थलों से उठती लपटों-धूँये के डरावने दृश्य। प्रदूषण.... प्रदूषण..... विचारणीय बनता है दैनिक तेल की खपत से होता प्रदूषण। गति, वाहन, चमक-दमक का उत्पादन तथा उपभोग कितना कुछ दाँव पर लगा रहा है।

कार्यस्थलों पर

महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक सुरक्षा कर्मी : ''सन् 2001 में ठेकेदार के जरिये यहाँ गार्ड रखना आरम्भ हुआ। सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन नहीं दिये जाने के विरोध में गार्ड, माली, सफाई कर्मी 2002 में उपायुक्त के पास गये तो उन्होंने श्रम विभाग भेज दिया। विश्वविद्यालय में स्थाई कार्य के लिये ठेकेदारों के जरिये रखे जाते वरकरों की सँख्या बढती आई है और श्रम कानूनों का खुला उल्लंघन होता है। विरोध में उपकुलपति कार्यालय पर 2005 में धरना-भूख हड़ताल, रोहतक से सांसद को ज्ञापन, मुख्य मन्त्री को ज्ञापन..... और विरोध को दबाने के लिये कर्मचारियों को नौकरी से निकालने का सिलसिला। इस समय ठेकेदार के जरिये रखे 90 सुरक्षा कर्मियों में से मात्र 18 को डी.सी. रेट देते हैं जबकि बाकी 72 गार्डों को 12 घण्टे के 100 रुपये। गार्डो की 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं और ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। गार्ड आसपास के गाँवों के हैं..... विश्वविद्यालय में बड़े पैमाने पर हो रहे निर्माण कार्य में लगे मजदूर दूर से लाये गये हैं। ईंट-रेत-सीमेन्ट ढोती महिला मजदूरों को कुली कहते हैं और दिन के 82 रुपये देते हैं। यही काम करते पुरुष मजदूरों को 92 रुपये। बड़ी सँख्या में काम करते 14-15 वर्ष के लड़के-लड़कियों को 82 रुपये प्रतिदिन देते हैं। मिस्त्रियों की दिहाड़ी 115 और 135 रुपये है।''

गुड़गाँव में :

ऋद्धिमा ओवरसीज वरकर : ''662 उद्योग विहार फेज-5 स्थित फैक्ट्री में 150 मजदूर सैम्पलिंग, कटिंग, फिनिशिंग, पैकिंग का कार्य करते हैं – सिलाई दूसरी फैक्ट्री में। डेढ सौ में मात्र तीन महिला मजदूरों की ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं। हैल्परों की तनखा 2800-3600 और सैम्पलिंग टेलरों की 5000-5500 रुपये। सितम्बर का वेतन आज 31 अक्टूबर तक नहीं दिया है। तनखा माँगने पर जनरल मैनेजर ने गाली दे कर तीन मजदूरों को 28 अक्टूबर को नौकरी से निकाल दिया। महीने में 50-60 घण्टे ओवर टाइम, भुगतान सिंगल रेट से और जुलाई, अगस्त, सितम्बर के पैसे आज तक नहीं दिये हैं। पीने के पानी में कीड़े, मजदूर बीमार पड़ते हैं। शौचालय गन्दा। छोड़ने पर किये काम के पैसे नहीं देते अथवा कम देते हैं – धमकाने के लिये पुलिस को पैसे देते हैं।''

राधनिक मजदूर : ''215 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में महीने में 100 घण्टे ओवर टाइम – भुगतान से एक दिन पहले दुगुनी दर पर हस्ताक्षर करवाते हैं पर देते सिंगल रेट से भी कम हैं। कहते हैं, 'कोई पूछे तो दुगुनी दर बताना अन्यथा फैक्ट्री बन्द

हो जायेगी.... हमारी यहाँ, ओखला, नोएडा में कई फैक्ट्रियाँ हैं इसलिये हमें कोई फर्क नहीं पड़ेगा पर तुम मजदूरों को फैक्ट्री बन्द होने से दिक्कत होगी' । फैक्ट्री में 500 से ज्यादा मजदूर हैं पर ई. एस.आई. व पी.एफ. पुराने 50-60 के ही हैं.... कहते हैं, 'कोई पूछे तो कहना ई.एस.आई. व पी.एफ. के लिये 13 $^{3}/_{4}$ प्रतिशत पैसे तनखा से कटते हैं..... अगर काटेंगे तो तुम्हें मिलेंगे ही कितने ?' रात दो बजे तक रोकते हैं तब कैन्टीन में ही खाने के लिये 18 रुपये – भोजन ठीक नहीं और पेट भी नहीं भरता । फैक्ट्री गेट पर गार्डों के जरिये दादागिरी और पहलवान बुलाने की धमकी आम बात ।''

शान एक्सपोर्ट कामगार : '' 254 व 255 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्रियों में 1000 मजदूर हैं और इतने ही कम्पनी की 330 फेज-2 तथा 463 फेज-3 फैक्ट्रियों में हैं । स्टाफ ही कम्पनी ने स्वयं भर्ती किया है, सब मजदूर ठेकेदार के जरिये रखे हैं और ठेका बड़े साहब का ही है । सुबह 9½ से रात 10½ की ड्युटी रोज और रात 2 बजे तक रोक लेते हैं । महीने में 125 घण्टे ओवर टाइम, भुगतान सिंगल रेट से । जुलाई से देय डी.ए. के 74 रुपये नहीं दिये हैं । तनखा से ई.एस.आई. व पी.एफ. की राशि काटते हैं – ई.एस.आई. कार्ड नहीं देते और छोड़ने पर फण्ड के पैसे नहीं मिलते..... इक्के-दुक्के का ही फार्म भरते हैं । गाली बहुत देते हैं – यह तो एक्सपोर्ट में नियम है । रात 10½ तक रोटी के लिये 10 रुपये और रात 2 बजे तक रोकते हैं तब 20 रुपये । शौचालय कम, लाइन लग जाती है । कैन्टीन नहीं है ।''

सरगम वरकर : '' 152-53 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में सुबह 8½ से अगली सुबह 5 तक काम करवाते हैं तब भी रोटी के लिये पैसे नहीं देते । महीने में 70 से 150 घण्टे ओवर टाइम पर कुछ दिन वापस भेज कर सब बराबर कर देते हैं और ओवर टाइम के पैसे देते ही नहीं । यहाँ ***एच एण्ड एम*** के कपड़े सिलते हैं । सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन देते हैं पर हर महीने 200-500 रुपये की गड़बड़ करते हैं । दिवाली पर 8.33% बोनस दिया उस में भी 200-400 रुपये की गड़बड़ी की । जिन्हें निकाल देते हैं उन्हें बोनस देते ही नहीं । गाली देते हैं । शौचालय कम हैं और इन में पानी नहीं, कुण्डी नहीं, लाइन लग जाती है ।''

फरीदाबाद में :

स्काईटोन इलेक्ट्रीकल्स मजदूर : '' 42-43 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में दो ठेकेदारों के जरिये रखे 200 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में । तनखा 3200-3500 रुपये और ओवर टाइम सिंगल रेट से । सितम्बर की तनखा 12 अक्टूबर तक नहीं दी तो दिन की शिफ्ट वाले 12 घण्टे रुकने की बजाय 8 घण्टे पूरे होने पर साँय 4 बजे बाहर आ गये । चुनाव की छुट्टी के बाद, 14 अक्टूबर को मजदूरों ने सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन माँगा तो साफ मना कर दिया । इस पर दोपहर 12 बजे 75 मजदूर श्रम विभाग गये । एक ठेकेदार भाग गया । मजदूरों को 3914 रुपये तनखा दी गई ।''

प्रिसिजन स्टैम्पिंग वरकर : '' प्लॉट 106 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में दो शिफ्ट हैं – एक 8½ घण्टे की और दूसरी 15½ घण्टे की । कम्पनी द्वारा भर्ती को ओवर टाइम दुगुनी दर से और ठेकेदारों के जरिये रखों को सिंगल रेट से । दस-बारह ठेकेदारों के जरिये रखे 200 मजदूरों में हैल्परों को 8½ घण्टे के 100 रुपये और ऑपरेटरों को 8½ घण्टे रोज पर 30 दिन के 3500-3900 रुपये ।''

एग्रो इंजिनियरिंग मजदूर : '' 36 डी एल एफ इन्डस्ट्रीयल एरिया फेज-2 स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में ***मारुति सुजुकी*** और ***एस्कोर्ट्स*** का काम होता है । ओवर टाइम सिंगल रेट से । चार सौ मजदूरों में 200 की ई.एस.आई. नहीं, पी. एफ. नहीं और हैल्परों की तनखा 3500 रुपये । पावर प्रेसों पर हाथ कटते रहते हैं, प्रायवेट में इलाज । कैन्टीन नहीं है – पहले जहाँ कैन्टीन थी वहाँ अब गोदाम है ।''

दिल्ली में : पैको-कुन्दन-पी टी एम-मोन्टो मोटर्स मजदूर: ''डी-31, डी-32, डी-33 ओखला फेज-1 और अलवर स्थित फैक्ट्रियों में कार्यरत मजदूरों को एक से दूसरी फैक्ट्री में भेजते रहते हैं । दिल्ली में अलवर से लाये मजदूरों की तनखा 3000 रुपये– कहते हैं कि राजस्थान में यही सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन है । फैक्ट्रियों में मजदूरों को घुमाते रहते हैं पर बोनस अलग-अलग देते हैं, 8.33-18-20 प्रतिशत । ***मारुति सुजकी*** तथा निर्यात के लिये वाहनों के कारब्युरेटर व अन्य पुर्जे बनाते 400 मजदूरों में 300 की ही ई.एस.आई. है और पी.एफ. तो 200 की ही । पावर प्रेसों पर हाथ कटते रहते हैं । साहबों द्वारा गाली देना तो फैक्ट्रियों में फैशन बन गया है । पानी पीने लायक नहीं । नौकरी छोड़ने पर हिसाब किस्तों में, दो साल तक के चेक देते हैं ।''

सुपर एक्स इन्डस्ट्रीज मजदूर : ''एफ-89/24 ओखला फेज-1 स्थित फैक्ट्री में 25 हैल्परों की तनखा 2000 रुपये, ई.एस. आई. नहीं, पी.एफ. नहीं । जो 25 मजदूर पुराने हैं वे ऑपरेटर हैं और उन्हें चेक से तनखा देते हैं पर अकुशल श्रमिक के लिये निर्धारित न्यूनतम वेतन ही – ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं । फैक्ट्री में निर्यात के लिये पाइप क्लैम्प बनते हैं पर इधर वर्ष-भर से मन्दी है इसलिये ओवर टाइम बन्द है । दो-तीन बार यूनियनों से जुड़े तो कुछ मजदूर नौकरी से निकाले गये और यूनियन वाले पैसे ले कर किनारा कर गये ।''

हरित कैंसर से जी एम प्लेग की ओर

भोजन को अधिकाधिक जहरीला बनाती सामाजिक प्रक्रिया

✶ भटिण्डा और बीकानेर के बीच चलती सवारी गाड़ी से हर रोज करीब एक सौ कैंसर रोगी यात्रा करते हैं। स्थानीय लोग इसे कैंसर ट्रेन कहने लगे हैं। पंजाब भारत में हरित क्रान्ति का केन्द्र था और लुधियाना, मुक्तसर, भटिण्डा जिले इसका प्रमुख क्षेत्र। संकर-हाइब्रिड बीज, रसायनिक उर्वरक, कीटनाशक तथा खरपतवार नाशक दवाईयाँ और अधिक पानी का सिंचाई के लिये प्रयोग हरित क्रान्ति के आदि व अन्त थे-हैं। रसायनिक उर्वरकों का भारत में प्रयोग 1950-51 में 70 हजार टन था जो 2006-07 में 2 करोड़ 20 लाख टन हो गया। खाद्यान्न उत्पादन बढा पर इन पचास वर्षों में धरती बुरी तरह क्षतिग्रस्त हुई। अब धड़ल्ले से रसायनों का प्रयोग भी खाद्यान्न उत्पादकता को बढा नहीं पा रहा। भूजल स्तर लगातर गिरता जा रहा है.... लुधियाना, मुक्तसर, भटिण्डा जिलों में 57 से 160 फुट की गहराई तक पानी में यूरिया से आये नाइट्रेट की मात्रा सुरक्षित सीमा से कई गुणा ज्यादा हो गई है। नाइट्रेट युक्त पानी पीने से पेट, आंत, पित्त, गर्भाशय, यकृत, मूत्राशय के कैंसर होते हैं। नवजात शिशुओं के शरीर का नीला पड़ना..... रसायनिक उर्वरकों, कीटनाशकों, खरपतवार नाशकों का उत्पादन भोपाल जैसे ताण्डव लिये है और इनकी खपत..... इनकी खपत नीले नवजात और कैंसर ट्रेनें लिये है। (जानकारियाँ सुश्री सीमा जावेद के 1.12.09 के 'आज समाज' में लेख से)

✶ इधर प्रगति-विकास के लिये कृषि क्षेत्र में दूसरी क्रान्ति की घोषणायें हो रही हैं..... अनुसन्धान जारी हैं, वैज्ञानिक जुटे हैं। इस समय जोर नये बीजों पर है। टमाटर के बीज में मछली के बीज का चुनिन्दा जीन, आलू के बीज में मेंढक के बीज का चुनिन्दा अंश, चावल के बीज में सूअर के बीज का चुनिन्दा जीन..... इसे अंग्रेजी में जेनेटिक्ली मोडिफाई करना कहते हैं और ऐसे बीजों को जी एम बीज। अमरीका में बीस वर्ष से जी एम बीजों से मक्का, सोयाबीन आदि की फसलें ली जा रही हैं। अधिक उपज वाली यह फसलें मुख्यतः मुर्गी, सूअर, गाय की खुराक बनती हैं..... माँस बढाने के लिये हैं। इन बीस वर्षों में अमरीका में एलर्जी, कैन्सर आदि बीमारियों में भारी वृद्धि हुई है। यूरोप में जी एम उपज पर रोक लगा दी गई है। भारत में जी एम कपास (बी टी कॉटन) के बाद अब जी एम बैंगन दस्तक दे रहा है और जी एम भिण्डी, जी एम बन्दगोभी, जी एम फूलगोभी, जी एम ज्वार, जी एम मूँगफली, जी एम सरसों,.... पंक्ति में हैं। कृषि में यह दूसरी क्रान्ति महामारी प्लेग को आमन्त्रण है। आँगनवाड़ियों में क्या जी एम भोजन बँटता है ? (सम्पर्क : सुश्री नीला हर्डीकर, पंचायती धर्मशाला ओली, मुरैना-476001)

व्यक्ति आते-जाते हैं। दल बदलते रहते हैं। नीतियाँ बदलती हैं। जारी है जल-थल-नभ का प्रदूषण, बढ रहा है प्रदूषण। बात सामाजिक व्यवस्था की, बात सामाजिक प्रक्रिया की। क्या है यह सामाजिक प्रक्रिया ?

— धुँधले हैं इस सामाजिक प्रक्रिया के आदि स्रोत। मानव द्वारा अपने को पृथ्वी से, प्रकृति से

अलग देखने लगने के चिन्ह काफी प्राचीन हैं। अंश द्वारा स्वयं को सम्पूर्ण से अलग करना दोहन का आधार, शोषण का प्रस्थान-बिन्दू लगता है।

– पशुओं को नाथने का अगला चरण मनुष्यों को दागना बना। स्वामियों और दासों के उदय ने ऊँच-नीच वाली प्रक्रिया को, इस सामाजिक प्रक्रिया को आकार दिया।

– शोषण इस सामाजिक प्रक्रिया की धुरी बना। शोषण के लिये नियन्त्रण एक अनिवार्य आवश्यकता है। और, नियन्त्रण के लिये शस्त्र तथा शास्त्र जरूरी हैं। शोषण की अन्य अवस्थाओं-व्यवस्थाओं से होते हुये ऊँच-नीच वाली सामाजिक प्रक्रिया वर्तमान में लाई है।

– वर्तमान है मण्डी-मण्डी-मण्डी। स्वयं के तथा परिवार के श्रम से मण्डी के लिये उत्पादन का घुटना-मिटना। मजदूर लगा कर मण्डी के लिये उत्पादन का सर्वग्रासी प्रसार। ऊँच-नीच वाली सामाजिक प्रक्रिया आज मण्डी की चारित्रिकता लिये है।

– सुरक्षा का पहलू हो चाहे भोजन का, या फिर सन्तान का, मण्डी के नियम हावी-प्रभावी हैं। इसलिये सुरक्षा के उपाय विनाश के साधन और भोजन का प्रबन्ध जहर के जुगाड़ बने हैं....

शोषण के लिये दमन और दमन के प्रबन्ध के लिये शोषण की बन्द गली में क्रियाशील यह सामाजिक प्रक्रिया अनेकानेक विरोधों को जन्म देती है।

– दासों के विद्रोह। भूदासों की बगावतें। दस्तकारों-किसानों के तूफानी उफान। मजदूरों की धधकती हलचलें।

– परिवर्तन। बदली अवस्था-व्यवस्था। पर जारी है ऊँच-नीच वाली सामाजिक प्रक्रिया।

– गौण हैं व्यक्ति-विशेष। गौण हैं दल-विशेष। गौण हैं क्षेत्र-विशेष। गौण हैं स्वरूप-विशेष। यह अधिकाधिक स्पष्ट होता जा रहा है।

– निजी सम्पत्ति को गौण स्थान पर धकेल चुकी मण्डी। निजी सम्पत्ति को मिटाने की ओर अग्रसर मण्डी। संस्थागत सम्पत्ति को स्थापित करती मण्डी। सर्वग्रासी बनी संस्थायें-कम्पनियाँ-इन्सटीट्युशन्स..... मजदूरों को केन्द्रीय भूमिका में ले आई हैं।

आज कार्यसूची पर आ गई है ऊँच-नीच वाली सामाजिक प्रक्रिया। क्या है यह और क्या नहीं है पर मन्थन बढ रहा है, और बढाने की आवश्यकता लगती है।

स्वयं को श्रेष्ठ घोषित करते, सब कुछ पर विजय प्राप्त करने की इच्छा रखते, हर एक को अपने अधीन करने को आतुर मानव अपने स्वयं के अस्तित्व को संकट में ला चुके हैं। अपने को प्रकृति का अंश स्वीकार करना, प्रकृति से सामंजस्य स्थापित करने को जीवन का सार स्वीकार करना नई समाज रचना के लिये, नई सामाजिक प्रक्रिया के लिये आधार लगता है।

लन्दन से पत्र

..... मजदूर सप्लाई करने वाली एक एजेन्सी के जरिये मैं नगर परिषद में अस्थाई सफाई कर्मी के तौर पर लग गया हूँ। मेरा कार्य गलियों में झाडू लगा कर कूड़ा एकत्र करना है जिसे ट्रक पर लगा वैक्यूम क्लीनर फिर अपने में खींच लेता है।

सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन से कम, 5½ पाउण्ड प्रति घण्टा नौकरी पर रखते समय एजेन्सी ने लालच दिया कि नगर परिषद हमें अपना कर्मचारी बना सकती है। इस समय 8 घण्टे प्रतिदिन पर सप्ताह में 5 दिन कार्य करने पर मेरे महीने में करीब 750 पाउण्ड बनते हैं, वर्ष में 9000

पाउण्ड – जबकि नगर परिषद द्वारा रखे सफाई कर्मी को वर्ष में 18,000-20,000 पाउण्ड मिलते हैं। एजेन्सी ने कहा कि 6 महीने में वर्दी मिलेगी पर 2-3 वर्ष से कार्य कर रहों ने मुझे बताया है कि उन्हें अभी तक वर्दी नहीं मिली है। लन्दन में एक कमरे का किराया 80-100 पाउण्ड प्रति सप्ताह है, महीने का 400 पाउण्ड के करीब। ऐसे में मैं 750 पाउण्ड प्रतिमाह तनखा में मात्र जिन्दा रह सकता हूँ।

बहुत लोग सप्ताह के सातों दिन काम करते हैं। कुछ लोग रोज दो शिफ्ट काम करते हैं। कल जिस ट्रक ड्राइवर के साथ मैंने काम किया वह पोलैण्ड में जन्मा था और उसने सप्ताह में 72 घण्टे कार्य किया – वह नशा करता है। लन्दन इस कम दिहाड़ी पर रख रखाव पर टिका है। बहुत बेरोजगारी है, प्रारम्भिक दिहाड़ी कम है, अपराध बहुत हैं। यह लोगों पर काफी दबाव बनाते हैं। और, बेतुकियाँ भी : बस और मैट्रो रेल महँगी हैं इसलिये मैंने एक पुरानी साइकिल 50 पाउण्ड में ली है पर उसे बस स्टॉप पर खुले में सुरक्षित रखने के लिये मुझे 100 पाउण्ड का अच्छा ताला लेना होगा। मुख्य सड़क जिस पर मैं झाड़ू लगाता हूँ उस पर पिछले माह गिरोह युद्ध में, गरीबी से जुड़े अपराध में 5 युवकों को गोली मारी गई। जिस बस्ती में मैं रहता हूँ वहाँ शनिवार व रविवार को गरीबी से जुड़े अपराधों के लिये पकड़े गये युवाओं को चिन्हित करते कपड़े पहना कर उन से झाड़ू लगवाई जाती है।

जिस ट्रक ड्राइवर के साथ मैं सामान्य तौर पर काम करता हूँ उसका जन्म अल्जीरिया में हुआ था। वह लन्दन के बहुत व्यस्त यातायात में ट्रक चलाता है, साथ ही वह मैकेनिकल ब्रुशों और वैक्यूम क्लीनर को ऑपरेट करता है। संग-संग वह मोबाइल पर मित्रों से बात करता है जिन से मिलने का समय उसके पास नहीं है। मैं झाड़ू लगाते हुये पैदल चलना चुनता हूँ क्योंकि यह विचार करने के लिये अधिक समय देता है। चूँकि सामान्य तौर पर आप अपने कमरे में ही झाड़ू लगाते हैं, अब झाड़ू लगाते समय मुझे महसूस-सा होता है कि मेरा कमरा फैल कर लन्दन नगर के ह्रदय तक आ गया है। पैदल चलना जाँचने-परखने के लिये भी अधिक समय देता है। लन्दन में भिखारी आमतौर पर बैंकों की नकद-भुगतान मशीनों की बगल में बैठते हैं। सफाई कर्मी को 'नगर कर्मी' होने का अहसास होता है और डाक कर्मी अथवा खुले में कार्य करते अन्य लोगों से अधिक आसानी से जुड़ सकते हैं। अकसर लोग रास्ता पूछते हैं। मुझे बहुत ज्यादा नहीं चलना पड़ता, दिन में कुल सात मील। कभी-कभी हमें ट्रक पर मैकेनिकल ब्रुश बदलने आदि कार्य करने होते हैं पर उनमें अधिक समय नहीं लगता। हम 8 घण्टे का कार्य 4 घण्टों में पूरा कर घण्टा-दो घण्टा कहीं बैठ लेते हैं और 6 घण्टे बाद मैं चल देता हूँ – पैसे 8 घण्टे के मिलते हैं। ट्रक ड्राइवर ऐसा नहीं कर सकते क्योंकि उन्हें ट्रक लौटाना पड़ता है – वे मशीन से बँधे हैं।

सब झाड़ू लगाने वाले 8 घण्टे पूरे होने से पहले चल देते हैं। जाँच दल लन्दन में चक्कर लगा कर सफाई के अंक देता है। हमारे क्षेत्र में 4 प्रतिशत कचरा बताया जो कि अच्छे अंक हैं पर मैनेजर लोगों के जल्दी चले जाने से नाराज है। एक मीटिंग जिसमें 30 झाड़ू लगाने वाले थे, मैनेजर बोला कि पिछले महीने आधे लोग समय से पहले चले जाते थे। मैनेजर ने पहले उत्पादन बोनस काटने की धमकी दी पर बोनस स्थाई मजदूरों को ही मिलता है। अनुशासनात्मक कार्रवाई की भी बात की। मुझे भय हुआ कि मैनेजर की बातों से ड्राइवर डर जायेगा पर वे मैनेजमेन्ट की बातें सुनने के आदी हैं। मीटिंग वाले दिन मैं और भी जल्दी चल दिया। भर्ती करने वाली एजेन्सी भी जल्दी चल देने की बात जानती है और इसे झाड़ू लगाने के कार्य को अच्छी नौकरी बताने के लिये इस्तेमाल करती है।

..... लीड्स नगर में हर घर से कूड़े के डिब्बे उठाने वाले और झाड़ू लगाने वाले मजदूरों ने वार्षिक वेतन में 5000 पाउण्ड की कटौती की धमकी के खिलाफ 11 सप्ताह हड़ताल की .... यूनियन ने उत्पादकता बढाने का समझौता किया है। ब्राइटन नगर में हर घर पर कूड़े के डिब्बे रखना समाप्त कर दिया है, अब 80 घरों को एक स्थान पर कचरा डालना पड़ता है। संकट के दृष्टिगत डाकखानों में उत्पादकता बढाने के विरोध में डाक कर्मियों ने हड़ताल की। टेस्को सुपरमार्केट में कैशियरों की आवश्यकता खत्म कर दी है – ग्राहक स्वयं सामान की जाँच कर मशीन से भुगतान करें – एक सुपरवाइजर 5 मशीनें देखती-देखता है। अधिक बेरोजगारी, वेतन घटाने के लिये ज्यादा दबाव, अधिक अपराध।

..... लन्दन में इस समय 80 हजार फ्लैट खाली पड़े हैं। बेघर लोग समूहों में कब्जे करने लगे हैं.....

(एक पाउण्ड करीब 80 रुपये के बराबर) ■

फोन तथा व्हाट्सएप के लिये नम्बर : 9643246782
ई-मेल < majdoorsamachartalmel@gmail.com >

डाक पता :
मजदूर लाइब्रेरी,
ऑटोपिन झुग्गी,
एन.आई.टी. फरीदाबाद–121001
(यह जगह बाटा चौक और मुजेसर के बीच नाले की बगल में है।)

शेर सिंह के लिए रौनिजा प्रिन्टर्स फरीदाबाद से मुद्रित किया।
सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी–551 नेहरु ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट।
फोन तथा व्हाट्सएप के लिये नम्बर : 9306159411

आदान–प्रदान बनाम शास्त्रार्थ

प्रत्येक व्यक्ति व्यवहार में होती है।

जो है उसके किसी न किसी पहलू से हर व्यक्ति का हर समय वास्ता रहता है।

जो हैं वे भौतिक रूपों में हो सकती हैं; कौशल स्वरूपों में हो सकती हैं; विचारों के, धारणाओं के रूपों में हो सकती हैं; अथवा इनके अनेक मिश्रणों में हो सकती हैं।

जो हैं उनकी गतियाँ भिन्न हैं। उनमें होते परिवर्तनों की अवधि और गति भिन्न हैं। जो हैं वो (और जो थी तथा जिनके होने की सम्भावनायें हैं वो भी) एक-दूसरे को हर समय प्रभावित करती हैं।

स्पष्ट लगता है कि हम सब का वास्ता अत्यन्त जटिल और प्रत्येक क्षण परिवर्तन की स्थिति में जो हैं उन से रहता है। इसलिये यह भी लगता है कि हर एक के लिये हर समय आंकलन में चूकने की सम्भावना बहुत अधिक रहती है। मेरा-तेरा गलती करना, गलत होना स्वाभाविक लगता है।

ऐसे में हर व्यक्ति महत्वपूर्ण है। अधिक से अधिक लोगों के बीच बातचीतें, चर्चायें सर्वोपरि महत्व की लगती हैं। आज पृथ्वी पर फैले सात अरब मनुष्यों के बीच होते आदान-प्रदानों को बढाना प्रत्येक व्यक्ति के संगत रहने के लिये, अर्थपूर्ण जीवन के लिये एक प्राथमिक आवश्यकता लगती है।

जबकि शास्त्रार्थ में

हर व्यक्ति सामान्य तौर पर स्वयं को सही बताता है।

प्रत्येक अपने शास्त्र को सर्वोपरि कहती है।

शास्त्र की रचना ईश्वर-गॉड-अल्लाह ने की है कहने वाले हैं। अवतार, गॉड के पुत्र, नबी ने ईश्वरीय वाणी को शास्त्र-रूप में मानव प्रजाति को उसकी भलाई के लिये उपहार दिया है कहने वाले हैं।

शास्त्र की रचना महान मार्क्स ने, महान लेनिन ने, महान माओ ने, महान अम्बेडकर ने, महान..... ने की है कहने वाले हैं।

शास्त्रार्थ का सार : मैं-हम सही और तुम-वे गलत।

शास्त्रार्थ का परिणाम सामान्य तौर पर अनुयायी अथवा शत्रु होते हैं। मैं-हम-मेरे-हमारे-अपने-मित्र और वो-अन्य-दूसरे-पराये-शत्रु की रचना-पुष्टि शास्त्रार्थ का चाहा-अनचाहा परिणाम होता है। वर्तमान में आंकलनों पर होता शास्त्रार्थ ही बहुत अधिक कटुता लिये रहता है। विगत के शास्त्रों के आधार पर शास्त्रार्थ.....

शास्त्री बनना है, बने रहना है और शास्त्रार्थ करना है अथवा आदान-प्रदान बढाना है ? इनमें प्रत्येक चुन सकती है, हर एक चुन सकता है।